

प्रेरणा के बीज

~लेखक~

डॉ. अजय आनन्द

BFC PUBLICATIONS





प्रकाशक:

BFC Publications Private Limited
CP -61, Viraj Khand, Gomti Nagar,
Lucknow – 226010

ISBN - 978-93-90880-22-5

कॉपीराइट (©) **डॉ. अजय आनन्द** (2021)

सभी अधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग की न तो प्रतिलिपि बनाई जा सकती है, न पुनरुत्पादन किया जा सकता है और न ही फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग सहित किसी भी माध्यम से अथवा किसी भी माध्यम में किसी भी रूप में प्रेषित या पुनःप्राप्ति के उद्देश्य से संरक्षित किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जो इस कार्य के प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करता है, क्षति के लिए कानूनी कार्यवाही और नागरिक दावों के लिए उत्तरदायी हो सकता है।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से लेखक की है और प्रकाशक द्वारा सद्भाव में प्रस्तुत की गई है। सभी नाम, स्थान, घटनाएं और घटनाक्रम या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई है। कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक की सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा की गई किसी भी कार्रवाई के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। इस कार्य का उद्देश्य किसी भी धर्म, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रीयता या लिंग की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है।

विषय वस्तु

1.	प्रेरणा क्या है?	6
2.	जेफ बेजोस की सफलता की कहानी	22
3.	डॉ. ग्लेन कनिंघम : दृढ़ संकल्प-शक्ति के महानायक	25
4.	अभिनव बिन्द्रा : जिद और जुनून ने दिलाया गोल्ड	27
5.	गोल्फ कैडी	29
6.	अडसठ की उम्र में हिमालय जीता	32
7.	विल्मा रूडोल्फ	33
8.	लिज्जत पापड़ की कहानी	35
9.	कर्नल साण्डर्स ने कैसे KFC शुरू की	37
10.	संजय अखाड़े : दृढ़ निश्चय की जीती-जागती मिसाल	39
11.	महान् भौतिकविद् वर्नर हाइजेनबर्ग	43
12.	फोर्ड मोटर के मालिक : हेनरी फोर्ड	44
13.	पलोरेन्स चैडविक : लक्ष्य पर दृष्टि और मन में आत्मविश्वास	46
14.	करसन भाई पटेल : गरीबी से सम्पन्नता की यात्रा	48
15.	भारत रत्न प्राप्त डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम	49
16.	नरेश गोयल : जेट एयरवेज के चेयरमैन	51
17.	सर एम्. विश्वेश्वरैया : ईमानदारी एवं कर्मठता की प्रतिमूर्ति	52
18.	मेघनाद साहा : महान् वैज्ञानिक	54
19.	महान् गणितज्ञ रामानुजन	55
20.	ब्रह्मचारिणी कमलाबाई : कर्मठता एवं जीवन्तता की मिसाल	57
21.	सुधा चन्द्रन : दृढ़ संकल्प-शक्ति की मिसाल	59
22.	हिमा दास : एक मजबूत इच्छा शक्ति	63

23.	मिताली राज : महिला क्रिकेट की महानतम खिलाड़ी	66
24.	अमिताभ बच्चन : सदी के महानायक	69
25.	निक वुजिसिक : बिना दोनों हाथ व पैरों के	71
26.	जॉर्ज वाशिंगटन : समय का सम्मान	72
27.	महानायक सुभाषचन्द्र बोस : एक निडर राजनेता	73
28.	डॉ. भीम राव अंबेडकर : एक जिद्दी महानायक	74
29.	धीरूभाई अम्बानी : 300 से 75000 करोड़ तक का सफर	78
30.	आर. माधवन : बेमिसाल शख्सियत	79
31.	एन.आर. नारायणमूर्ति	82
32.	अरुणिमा सिन्हा : कभी न हार मानने वाली शख्सियत	83
33.	कारपेंटर राजू : विकिपीडिया के जनक	85
34.	जुलेखा बानो : समुदाय की पहली वकील	91
35.	मैरी कॉम : एक दमदार महिला मुक्केबाज	96
36.	गीता फोगाट : चट्टान का दूसरा नाम	98
37.	आज ही क्यों नहीं? कहानी	102
38.	भला आदमी-कहानी	104
39.	बिना विचारे काम मत करो	106
40.	दया का फल	107
41.	बाजीराव पेशवा और किसान	108
42.	विकारों का समाधान	110
43.	आदर्श वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई	112
44.	सूरत से ज्यादा सीरत अच्छी	116
45.	डाकू रत्नाकर और नारद	117
46.	ईश्वर दिखाई नहीं देता	122
47.	डाकू अंगुलिमाल	124
48.	सहनशीलता	127
49.	राजा महाराणा प्रताप	129
50.	शिबी नामक राजा	131

51.	मेरी ताकत	133
52.	महानता के बीज	137
53.	शिष्टाचार	139
54.	बुद्धि की सुन्दरता	141
55.	अमरत्व के फल	143
56.	सफलता का रहस्य	145
57.	एहसान	146
58.	फिर नहीं ललकारा	148
59.	बदनामी और नेकनामी	151
60.	बगल में छोरा, नगर ढिंढोरा	154
61.	कौए और सीपी	158
62.	मेंढक तथा सांड	160
63.	कठिन परिस्थितियों को जीतना सीखो	162
64.	मेहनत बनाती है, असंभव को संभव	165
65.	इंसान की कीमत	169
66.	हाथी और रस्सी	171
67.	हमेशा अपने आस-पास सकारात्मकता रखें	173
68.	अध्यात्म के द्वारा सांसारिक वासनाओं से छुटकारा	180
69.	प्रेरणादायक विचार	184

प्रेरणा क्या है?

दोस्तों बहुत सारे लोग मुझसे पूछते हैं कि ये Motivation क्या होता है? ज्यादातर लोग दिन-रात मेहनत करते हैं लेकिन उनके अन्दर उस तरह का कोई जोश नहीं होता जो उन्हें सफलता की ऊँचाइयों तक ले जा सके। आज इस Article में हम Motivation के बारे में बात करेंगे कि यह क्या है और कैसे काम करती है। तो आइये जानते हैं इसके बारे में— Motivation एक तरह की प्रेरकशक्ति है जो हमारे अन्दर कुछ कर गुजरने की आग पैदा करती है। हमारे काम करने की क्षमता को दोगुनी करती है, एकदम से बढ़ा देती है। हम अपने काम को पूरे जोश के साथ करने लग जाते हैं। यह मुख्य रूप से हमारे काम एवं भावनाओं में जोश भरने का काम करती है। Motivate करने का मतलब होता है अपने अन्दर जोश पैदा करना, अपनी लाइफ में कुछ करने के लिए ज़ब्बा पैदा करना।

यदि आप अपनी लाइफ में कुछ भी नहीं कर रहे हैं तो यह आपके अन्दर कुछ करने की आग पैदा कर सकता है जिससे आप कभी खाली नहीं बैठेंगे, ये आपके अन्दर काम करने की लगन पैदा करेगा।

Motivation एक बहुत ही Powerful हथियार की तरह है जो हमारे मन में चल रहे Doubts को दूर करती है और हमें अन्दर से Inspire करती है जिससे हम अपनी लाइफ में दोबारा Active हो जाते हैं।

हम अपनी लाइफ में अभी जो कुछ भी कर रहे हैं वो किसी न किसी मोटिवेशन के कारण ही है। यह एक ऐसी शक्तिशाली ताकत है जो हमारी Life Change कर सकती है।

किसी भी बड़े Level तक पहुँचने के लिए या Successful बनने के लिए हमें Motivation की आवश्यकता होती है। जब तक हम सोते ही रहेंगे तब तक सफल कैसे होंगे! मोटिवेशन हमें जगाये रखने और अपने लक्ष्यों को हासिल करने में हमारी Help करती है।

हमें Motivated होने की आवश्यकता क्यों होती है?

हर व्यक्ति सफल होना चाहता है, और जहाँ भी सफल होने की एक चाहत पैदा हो जाती है वहाँ व्यक्ति को Motivation की जरूरत पड़ती है। सफलता आपकी लाइफ को खुशहाल बनाती है, लोग आपकी ज्यादा इज्जत करते हैं। यदि आप सफल हैं तो लोग आपसे जुड़ना चाहते हैं, आपसे सीखना चाहते हैं और लोग आपकी तरह बनना चाहते हैं। और यदि आप सफल नहीं हैं तो न आपको घर में, ऑफिस में कहीं पर भी वो Respect नहीं मिलेगी जो एक सफल व्यक्ति को नसीब होती है। बिना मोटिवेशन के आपकी लाइफ बस गुजरती जाती है, आप अपनी लाइफ में बड़े Level तक नहीं पहुँच पाते। बहुत सोचते हुए ही ज़िन्दगी कट जाती है कि आप कुछ बड़ा करेंगे।

यदि आप अपनी ज़िन्दगी में संतुष्ट हैं तो आप आगे स्तर तक जाने के लिए कभी-भी कोशिश नहीं करेंगे। आत्मसंतुष्ट व्यक्ति अपने आपको कभी भी Motivate नहीं कर सकता क्योंकि उन्हें अपनी लाइफ की जरूरतों का अहसास ही नहीं हो पाता और इसलिए वो कुछ हासिल करने की कोशिश ही नहीं करना चाहते।

Motivation कैसे काम करती है?

जब हम यह समझ लेंगे कि प्रेरणा कैसे काम करती है तो हम खुद को प्रेरित कर सकते हैं जिससे हम अपने मुकाम तक पहुँच सकते हैं इसके साथ ही हम दूसरों को भी प्रेरित कर सकते हैं ताकि वो लोग भी सफल बन सकें।

खुद से बात करना और उस बात के माध्यम से अपने अन्दर सफलता की चाहत पैदा करना हमारी आंतरिक प्रेरणा को दर्शाता है. मान लीजिये आपने एक नया काम शुरू किया लेकिन आपके अन्दर एक डर है कि आप सफल होंगे भी या नहीं ! अपनी सफलता को लेकर आपके मन में एक डर बना हुआ है लेकिन यदि आप नियमित रूप से खुद से बात करते हैं और स्वयं से कहते हैं— “मेरा आत्मविश्वास हर रोज दोगुना बढ़ता जा रहा है, मैं अपने लक्ष्य के करीब पहुँचता जा रहा हूँ और मैं सफल होकर ही दम लूँगा।”

ऐसी बातें हमारे अन्दर आत्मविश्वास पैदा करती हैं और हम खुद को मोटीवेट रख पाते हैं।

कई बार मैं अपने किसी खास दोस्त से बात करते हुए, छोटी-छोटी बात पर चिल्ला उठता हूँ या मुझे गुस्सा आ जाता है जिसके कारण मेरा फोकस Divert हो जाता है और मेरे काम पर भी इसका असर पड़ता है। ये सब मेरी प्रेरणा को कमजोर बनाती है और मैं Demotivate हो जाता हूँ।

लेकिन बहुत दिनों से मैं ऐसा कुछ हो जाने पर खुद से ऐसी बातें करता हूँ, ‘मैं आगे से उससे बात करते समय कुछ भी हो जाए खुद को शांत रखूँगा और उसकी पूरी बात सुनूँगा मुझे पता है कि वो इंसान सही है और बस मुझे संयम से काम लेना चाहिए।

Motivation से सम्बंधित अन्य आर्टिकल्स जो आपकी लाइफ में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं जल्दी प्रकाशित किये जाएंगे।

नजरिया

किसी चीज को देखने का तरीका जिसे हम नजरिया कहते हैं, यदि हम इसे बदल लें तो हमारी जिंदगी बेहतर हो सकती है। हम चाहे किसी भी फील्ड से हों यदि सफलता एक पेड़ है तो नजरिया उसकी जड़ है। आप अपनी नाकामयाबी को कैसे देखते हैं यह आपके नजरिये पर ही निर्भर करता है। पॉजिटिव सोच वाला व्यक्ति अपने नजरिये को सफलता की सीढ़ियों पर लगाये रहता है जबकि नेगेटिव सोच वाले व्यक्ति का नजरिया सिर्फ समस्याओं और शिकायतों पर होता है।

Positive—Negative Attitude सकारात्मक व नकारात्मक नजरिया

सकारात्मक नजरिया

1. दोस्तों, सकारात्मक नजरिये के बहुत से फायदे हैं। आइये इन्हें जानते हैं —
2. इससे हमारे अन्दर मोटिवेशन पैदा होता है।
3. हमारे आसपास के लोगों को इससे प्रेरणा मिलती है।
4. आप अपनी लाइफ को खुलकर जी सकते हैं।
5. तनाव को खत्म करने में सहायक है।
6. लोग आपको पसंद करने लगते हैं, सभी आपसे जुड़ना चाहते हैं।
7. लोगों की आपके प्रति रिस्पेक्ट और वफ़ादारी बढ़ने लगती है।
8. प्रॉब्लम सॉल्व होने लगती है।
9. सम्बन्धों में सुधार आता है।
10. आप अपने अनुसार माहौल तैयार कर सकते हैं।
11. प्रॉफिट बढ़ने लगता है।

**नकारात्मक नजरिये से इसका ठीक उल्टा Result मिलता है।
आइये इन्हें देखते हैं —**

1. परेशानी से घिरे रहते हैं।
2. खुद नाराज होते हुए दूसरों को भी नाराज करते हैं।
3. हेल्थ की हालत बिगड़ी रहती है।
4. तनाव बढ़ाते जाते हैं और बात-बात पर गुस्सा करने लगते हैं।
5. जिंदगी में कोई मकसद नहीं रहता, बस यूँ ही जिंदगी गुजरती जाती है।

हम सभी को पता है कि नकारात्मक नजरिया हमारी सफलता में सबसे बड़ी रुकावट का काम करती है, इसके बावजूद हम इससे चिपके रहते हैं। हम बदलाव से डरते हैं इसलिए चीजें नहीं बदलतीं। हम जैसे हैं वैसे रहना ही पसंद करते हैं, एक गरीब व्यक्ति चाहे तो बहुत अमीर बन सकता है लेकिन वो खुद अपनी लाइफ में बदलाव लाना नहीं चाहता क्योंकि बदलाव में तकलीफें शामिल होती हैं। तकलीफों से हमें तनाव हो सकता है, इसलिए ज्यादातर आदमी रिस्क लेकर कुछ बड़ा नहीं करना चाहता। वो जैसा है वैसे ही रहना चाहता है और अपनी लाइफ को कोसते हुए अपना जीवन काटना चाहता है।

कड़ी मेहनत

भाग्य? मैं भाग्य के बारे में कुछ नहीं जानता। मैंने इस पर कभी भरोसा नहीं किया, और जो लोग इस पर ऐतबार करते हैं, मुझे उनसे डर लगता है। मेरे लिए भाग्य का मतलब है कड़ी मेहनत, और अवसर की पहचान।

—लुसिल बाल

आप मेहनत करें लेकिन स्मार्ट तरह से। जितने भी लोगों ने सफलता पाई है वे सभी अपनी सक्सेस का क्रेडिट कड़ी मेहनत

को ही देते हैं। Hard Work का मतलब स्मार्ट तरीके से अपने गोल्स के प्रति लगकर काम करते रहना है जब तक कि सफलता न मिल जाए। जो व्यक्ति मेहनत करने से जी-चुराता है वह कभी भी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच सकता। अगर आप कड़ी मेहनत करते जा रहे हैं, अपने काम के प्रति ईमानदार हैं तो धैर्य बनाये रखिये क्योंकि कड़ी मेहनत कभी बेकार नहीं जाती।

किसी वृक्ष को काटने के लिए आप मुझे छह घंटे दीजिये और मैं पहले चार घंटे कुल्हाड़ी की धार तेज करने में लगाऊंगा।

—Abraham Lincoln

याद रखिये आपको कड़ी मेहनत करनी है लेकिन स्मार्ट तरह से तभी आप सफल हो सकते हैं।

प्रेरणा किसे कहते हैं

प्रेरणा एक प्रकार का आंतरिक ईंधन है जो कुछ या कुछ चीज़ों को चलाता है और ले जाता है।

रुडोल्फ, उडो (एक्सएनएनएक्स) के लिए। मनोवैज्ञानिक प्रेरणा - Weinheim Beltz, प्रेरक रसायन विज्ञान, मानव विज्ञान के लिए चिकित्सा, मानव विज्ञान में सोसाइटी के साथ रिजॉर्टेशन का विज्ञान समाज दूसरे शब्दों में, यह आंतरिक ड्राइव है जो कार्रवाई की ओर ले जाती है। तो प्रेरणा के मनोविज्ञान में एक महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि कैसे लगातार व्यवहार करना है।

प्रदर्शन में प्रेरणा का महत्व

प्रेरित होना इस तथ्य से संबंधित है कि आप कुछ अच्छी तरह से करते हैं। आप काम करने के लिए प्रेरित हैं, आप उत्कृष्टता के साथ ऐसा करते हैं, अपने व्यवसाय के परिणामों की इच्छा

रखते हैं, समय—सीमा को पूरा करते हैं, ग्राहकों या आपूर्तिकर्ताओं को चाहते हैं, अपनी वचनबद्धताओं के साथ ईमानदार हैं। जब आप प्रेरित होते हैं, तो कार्य कैसे अधिक आनंददायक और प्रदर्शन करने में आसान हो जाते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि संगठन कार्यकर्ता की प्रेरणा और कल्याण की देखभाल करते हैं, जो गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं जो उत्तेजित करने और संलग्न करने की तलाश करते हैं, क्योंकि हर कोई जीतता है। इंसान को भी खुद को जानना और खोजना है, सब कुछ ऐसा नहीं है जो किसी ऐसे व्यक्ति को प्रेरित करता है जो दूसरे को प्रेरित करेगा। अच्छी तरह से प्रेरित होने से जीवन के सभी क्षेत्रों में आपका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सक्षम हो जाएगा।

मुख्य प्रेरक सिद्धांत

इस विषय पर इतने सारे सिद्धांतों के बीच, मैंने तीन प्रेरक सिद्धांतों में ब्रशस्ट्रोक देने का फैसला किया जो मानव व्यवहार को मार्गदर्शन देते हैं।

अब्राहम डेंसवू का सिद्धांत

अभी भी सबसे प्रसिद्ध, मास्लो ने अपनी जरूरतों के माध्यम से पिरामिड के माध्यम से पदानुक्रम बनाया है, जहां वह तेजी से जरूरतों को उजागर करता है, जहां पिरामिड का आधार मूलभूत रहने की जरूरत है।

शारीरिक आवश्यकताएं मानव जीव के रखरखाव से संबंधित हैं, यानी, अच्छा स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए बुनियादी चीजें, जैसे भोजन, पानी, नींद।

सुरक्षा को पहले से ही सामान्य रूप से चिंता की जरूरत है, चाहे शरीर, रोजगार, परिवार के सामान, सामान की तरह।

सामाजिक जरूरतों को पूरी तरह से दोस्ती, सामाजिक बातचीत के रूप में सामाजिक बातचीत से जोड़ा जाता है।

आत्म-सम्मान की जरूरतें परिवार से, सामाजिक और व्यावसायिक माहौल में अनुमोदित और मान्यता प्राप्त होने से आती हैं।

आत्म-प्राप्ति की आवश्यकता, उल्लिखित उद्देश्यों को अधिकतम करने के लिए कुछ भी नहीं है, जैसे पेशेवर विकास करना, उस पाठ्यक्रम को इतना वांछित करने के लिए, स्वायत्तता के लिए जो पहले लंबित मुद्दों को हल करने की आवश्यकता नहीं थी।

हर्जबर्ग का सिद्धांत

मनोवैज्ञानिक Frederich इरविंग Hersberg द्वारा निर्मित दो कारकों आधारित है के सिद्धांत कारण है कि एक संगठन के भीतर संतुष्टि के लिए जिम्मेदार लोगों में असंतोष का कारण बनता है, वह यह है कि समझ में उन्होंने दावा किया कि दो कारक है कि काफी एक कंपनी के भीतर व्यक्ति को प्रभावित थे।

अभी के लिए तथाकथित प्रेरक कारक कि सभी मानव रहता प्रेरित किया जा रहा है, कैसे पूरी क्षमता का उपयोग करें और करने के लिए स्वतंत्र हो, और व्यावसायिक विकास प्राप्त करने के लिए क्षमता के साथ इस पद पर वे कार्यो के साथ रखती है साथ खुश होने के लिए, है।

स्वच्छता कारक उन कारकों को ध्यान में रखता है जो व्यक्ति को असंतोष के लिए पेशेवर के रूप में नेतृत्व कर सकते हैं। यह उन कारकों से संबंधित है जहां कंपनी का निर्णय लेने की स्वायत्तता है, बिना लोग इसे बदल सकते हैं या नहीं, उदाहरण

के लिए : वेतन मूल्य, आंतरिक कंपनी के नियम, नेतृत्व और इसके अतिरिक्त।

उम्मीद से प्रेरणा का सिद्धांत

प्रारंभ में विक्टर वरुम द्वारा विकसित और बाद में पोर्टर और लॉलर से पूरित, उम्मीद के सिद्धांत मूल रूप से हम मानते हैं कि लोगों को जैसे ही आपकी योजना से प्रेरित होते हैं, लक्ष्यों की रूपरेखा और कि सभी चरणों का पालन करने और प्राप्त होगा तैयार बारे में पता है आपका लक्ष्य यही कारण है, क्या उन्हें ड्राइव ज्ञान है कि उनके प्रयास, लघु या मध्यम अवधि में उनके सुधार का परिणाम है, अपने उद्देश्य के साथ दीर्घकालिक समझौते का परिणाम देगा और एक बेहतर काम प्रस्ताव, मान्यता हो सकता है, एक व्यक्तिगत पूर्ति। यही है, सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद प्रेरणा पैदा करती है और पोषण करती है।

निष्कर्ष

अधिक इन सिद्धांतों में से कौन आपकी वर्तमान स्थिति का वर्णन करता है? याद रखें कि प्रेरणा हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपेक्षित परिणाम के लिए, डिजाइन और रास्ते में बाधाओं को दूर करने के लिए मदद करने में जोर। **lcemos** उड़ानों के कारण ड्राइविंग की कुंजी है। कंपनी एक्स स्टाफ, दो तरह से सड़क, जब एक प्रेरित है, हर कोई और हर कोई काम उत्कृष्टता के साथ किया के फल प्राप्त होगा। खुद को प्रेरित करें और अपनी टीम को जीतने में मदद करें।

टीम प्रबंधन के लिए आवश्यक वर्कशीट्स

पंजीकरण और कर्मचारी नियंत्रण वर्कशीट : इस वर्कशीट के साथ कंपनी के सभी कर्मचारियों के रिकॉर्ड तैयार करना संभव है और कंपनी से परामर्श की सुविधा के लिए व्यक्तिगत डेटा, वेतन और जो कुछ भी प्रासंगिक है, उससे संबंधित सभी जानकारी रिकॉर्ड करना संभव है।

टीम विकास के लिए वर्कशीट : यह स्प्रेडशीट पैकेज आपकी संपूर्ण टीम को प्रत्येक के आवश्यक कौशल और योग्यता, प्रशिक्षण योजनाओं, प्रदर्शन मूल्यांकन, साथ ही पदों, मानदंडों और कार्यों के वेतन के साथ पंजीकरण करने के लिए बहुत ही रोचक है। एक पूरा प्रबंधन!

रणनीतिक योजना वर्कशीट : इस रणनीति या अपनी रणनीति की प्रगति के लिए निष्पादन और अनुवर्ती कार्रवाई के लिए लक्ष्यों, और समय सीमा निर्धारित करें। चूंकि कार्य योजना दिखाई दे रही है और वांछित प्रभाव लागू किया जा रहा है।

पूर्ण सामरिक प्रबंधन वर्कशीट : यह वर्कशीट आपको पूरी कंपनी, मूल्य सेटिंग, सामान्य लक्ष्य ट्रैकिंग या उद्योग द्वारा व्यापक दृश्य प्रदान करती है। स्प्रेडशीट से जुड़े एक उपकरण है जो एक नैदानिक कंपनी है जहां आप यह पता लगा सकते हैं कि क्या सुधार किया जा सकता है। इसमें कार्य योजनाएं, सूचक रिपोर्ट और बहुत कुछ शामिल है ताकि आप अपनी कंपनी और इसकी गतिविधियों को पुनर्प्राप्त कर सकें।

आंतरिक प्रेरणा

एक व्यक्ति ने जिसने गरीबी से उठकर अपनी मेहनत से करोड़ों का बिजनेस खड़ा किया था, अचानक ही किसी कारणवश उसे अपने बिजनेस को बंद करना पड़ा, उसे अपने बिजनेस में बहुत नुकसान का सामना करना पड़ा। बैंक से भी उसने लाखों रुपये कर Loan लिया था, उसका भुगतान करने में भी वह असमर्थ रहा। यह कहना गलत नहीं होगा कि वह एक रात में ही सड़क पर आ गया। एक सुबह जब वह अपने शहर के गार्डन में उदास बैठा था, उसने पाया कि एक बूढ़े व्यक्ति का हाथ उसके कंधे पर है। एक बूढ़ा व्यक्ति उसके सामने खड़ा था और उससे

उसकी परेशानी का कारण पूछ रहा था। उस आदमी ने बूढ़े व्यक्ति को अपनी सारी बातें बताईं कि कैसे गरीबी से उठकर वह इतना अमीर बना था और आज लौटकर वह एक गरीब की जिन्दगी ही जी रहा है, उसकी हालत पहले से काफी बदतर थी।

बूढ़े व्यक्ति ने उसे अपनी कहानी बताई कि उसके साथ भी एक बार यही वाकया हुआ था और उसने यह बताया कि कैसे वह फिर से अपनी अमीरी का सफ़र तय कर सकता है। उस बूढ़े व्यक्ति ने उस आदमी को 1 करोड़ का चेक देते हुए कहा कि तुम यह पैसे अपने पास रखो और फिर से एक नई शुरुआत करो। जब तुम्हारा बिजनेस चल पड़े तो मुझे ये रकम वापस कर देना, मैं हर सुबह इस गार्डन में टहलने आता हूँ, जिस दिन तुम इस चेक से भी ज्यादा पैसे कमा लो और पहले से भी ज्यादा अमीर बन जाओ उस दिन तुम मुझे मिलने के लिए आना और अपनी कहानी मुझे बताना।

इतना कहकर वह बूढ़ा व्यक्ति वहां से चला गया।

वह व्यक्ति चेक को हाथ में पकड़े सोचता रह गया, कि एक अनजान आदमी ने उसकी मदद क्यों की? वह बूढ़ा व्यक्ति उस नौजवान पर एक विश्वास छोड़कर गया था। उस नौजवान से ज्यादा उस बूढ़े व्यक्ति को उस आदमी पर भरोसा था। Motivation की आग उस आदमी के अन्दर पैदा हो चुकी थी। बूढ़े व्यक्ति की कही बातें वह अपने मन में बार-बार दोहरा रहा था। अब उसे अपने अन्दर से आने लगा था कि उसे कुछ करना है और अपनी गरीबी को लात मारकर फिर से अमीरी का सफ़र तय करना है और इतना पैसे कमाना है जितना कि उसने कभी नहीं कमाया था।

बिना किसी डर के वह व्यक्ति अपने पुराने बिजनेस को बचाने में लग गया, वह इस बात को जानता था कि यदि भविष्य में उसे ज्यादा पैसों की जरूरत पड़ी तो यह चेक उसके पास है। वह बूढ़े व्यक्ति को अपना प्रेरणास्रोत बनाकर जी-तोड़ मेहनत करने लगा और 2 साल के अन्दर ही उसने वह कर दिखाया जो उसने खुद भी नहीं सोचा था और वह अपने शहर का सबसे अमीर आदमी बन गया। उसने अपने बिजनेस का विस्तार किया और अरबों-खरबों का नया बिजनेस भी बनाया, वह भी बिना उस चेक की सहायता के। उसने उस चेक का इस्तेमाल नहीं किया बल्कि अपने दम पर, अपनी आंतरिक प्रेरणा के कारण जो उस बूढ़े व्यक्ति से उसे मिली थी, ये सब कर दिखाया।

2 साल बाद जब वह उस गार्डन में बूढ़े व्यक्ति से मिलने के लिए गया तो उसने जो देखा वह चौंका देने वाला था। दीवार पर उस बूढ़े व्यक्ति की पोस्टर लगा हुआ था और बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था कि "यह बूढ़ा व्यक्ति पागल है जो खुद को करोड़पति कहता फिरता है, जहाँ भी यह व्यक्ति नजर आये कृपया पागलखाने में संपर्क करें।"

आंतरिक प्रेरणा, हमें अन्दर से प्रेरित करती है। हम अनजाने में सही लेकिन खुद को इतना Motivate कर सकते हैं जिसकी कोई हद नहीं। इस कहानी में सन्देश दिन के उजाले की तरह साफ़ है, वह व्यक्ति जानता तक नहीं था कि चेक असली है या नहीं, लेकिन बावजूद इसके वह चेक के बारे में न सोचकर उस बूढ़े व्यक्ति की बातों से इतना प्रेरित महसूस करने लगा था, जिसके कारण ही वह बड़ी से बड़ी सफलताएँ हासिल कर सका।

यदि आप बड़ी-बड़ी सफलताएँ हासिल करना चाहते हैं तो सबसे पहले आपको अपनी प्रेरणा को पहचानने और उसे बहुत **Powerful** बनाने की जरूरत है।

जब हमारे द्वारा किये गये काम की सराहना होती है, लोग हमारी प्रशंसा करते हैं, हमें आदर देते हैं, हमारा मान-सम्मान करते हैं और हमसे जुड़ाव महसूस करते हैं तो यह आंतरिक प्रेरणा मान्यता के अंतर्गत आती है।

जार्ज ग्रिटर ने कहा है "जिम्मेदारी जब हमारी दिली इच्छा भी बन जाती है, तो उससे संतोष और खुशी मिलती है।" जब हम अपनी जिम्मेदारी समझने लगते हैं तो प्रेरणा अपना काम करना शुरू कर देती है। हमें प्रेरित होने के लिए कुछ भी करने की जरूरत नहीं पड़ती, जिम्मेदारी उठाने पर सब कुछ अपने आप ही हो जाता है।

बाहरी प्रेरणा

बाहरी प्रेरणा से तात्पर्य है कि हम बाहरी वातावरण को देखकर खुद को प्रेरित महसूस करते हैं। यह बाहर से हासिल होती है। जैसे— पैसा, किसी चीज को खोने का डर, सोसाइटी की नजरों में ऊपर उठना...etc

जब गधे को एक सामान से लदी गाड़ी खींचनी होती है तो गधे के सामने एक मीठी गाजर लटका दी जाती है। गधा, लटकती गाजर को देखते हुए सामान को खींचना शुरू कर देता है। समय-समय पर गधे को थोड़ी-सी गाजर खाने के लिए आपको देनी रहती है, वरना उसका उत्साह खत्म हो जाएगा। उसे थोड़ी-सी गाजर खिलाएं और उसके सामने लटकाकर छोड़ दें। गधा गाजर को देखते हुए ही सामान खींचता रहेगा। इस प्रकार की प्रेरणा बाहरी प्रेरणा है, इससे हम लम्बे समय तक अपने

काम को नहीं कर सकते। इससे संभव है कि हम जल्दी सफल हो जाएँ लेकिन लम्बे समय तक अपनी सफलता को बरकरार रखना संभव नहीं होगा।

आत्मप्रेरणा

हर व्यक्ति अपने जीवन में कुछ न कुछ उपलब्धि हासिल करना चाहता है, एक मकसद के साथ जो व्यक्ति कुछ करने के लिए आगे बढ़ना चाहता है वही है आत्मप्रेरणा। मतलब यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें लोग कोई भी काम किसी दूसरे के प्रेरणा या प्रशंसा की वजहों से नहीं बल्कि अपने खुद की वजहों से करना चाहते हैं। सही मायने में ऐसी प्रेरणा ही मजबूत होती है।

आपको अपने अन्दर के आत्मविश्वास को जगाना है। हमारे अन्दर का विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। आप बस अपनी जिम्मेदारियों को समझें, अपने रिश्तों में मिठास लायें, एक क्वालिटी लाइफ जीयें। जब आप अन्दर से खुश होते हैं, किसी के सामने बनावटी चेहरा नहीं बनाते, तब यकीन जानिये आप अन्दर से खुद को प्रेरित कर रहे होते हैं।

1. दूसरों को और स्वयं को प्रेरित करना है तो इन बातों का ध्यान रखें :
2. इज्जत दें (खुद को भी और दूसरों को भी।)
3. काम को Interesting बनाएं
4. मदद करना सीखें लेकिन हमेशा हेल्प लेने वाला न बनकर हेल्प करने वाला बनें।
5. दूसरों के कामों की सराहना करें।
6. एक अच्छा वक्ता बनें लेकिन दूसरों की बातें हमेशा ध्यान से सुनें।
7. मान्यता देना सीखें

दोस्तों Motivation कोई वस्तु नहीं है जिसे हम कहीं से खरीद लें या कोई ऐसी भावना नहीं जो जबरदस्ती लोगों के मन में डाल दी जाये. प्रेरणा हमारे मन में स्वतः जागृत होती है न कि किसी के सिखाने से। Motivation एक ऐसी प्रेरणा है जो हमें अपने लक्ष्य की ओर ले जाने में engine में तेल का काम करती है. अगर हम खुद को मोटीवेट रखने के लिए बाहरी Motivation जैसे Google से Inspirational कोट्स वगैरह पढ़ा करते हैं पर ये सिर्फ बाहरी Motivation है. अगर सच में हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है तो हमें अपने अंदरूनी प्रेरणा को जगाना होगा. खुद को यह समझाना होगा कि अभी मेरे आगे सिर्फ मेरा लक्ष्य है और कुछ नहीं.

आज मैं आप लोगों से एक अलग तरह के Motivation के बारे में बात करने जा रही हूँ कि हम कैसे अपने समय को युटिलाइज़ करके अपने लक्ष्य की ओर आसानी से बढ़ सकते हैं. ख़ास कर आज मैं उन स्टूडेंट्स के बारे में बोलना चाहती हूँ जो सिर्फ दोस्ती यारी में ही अपना सारा वक्त बेकार कर देते हैं और अपनी लाइफ़ खुद ही spoil कर देते हैं. ये समय बिगड़ने का नहीं संवरने का है

जब क्लास में Teacher न आयें

जब क्लास में टीचर्स नहीं आते हैं तो ज्यादातर बच्चे अपने Friend के साथ बातें करने लग जाते हैं या बिना वजह Time पास करते रहते हैं। उसी जगह अगर आप किसी book को लेकर पढ़ने लग जायें तो इससे आपको बहुत फायदा होगा। सबसे पहले तो ये कि जब Students टाइम को ऐसे ही नष्ट करते थे तो उनको कुछ सीखने को नहीं मिल पाता और उसी जगह अगर वे बुक्स पढ़ने लगे तो उनकी नॉलेज बढ़ेगी। उनको ये एहसास होने लगेगा कि वो अपना आधा सिलेबस तो क्लास में ही कवर कर सकते हैं. जब स्टूडेंट्स क्लास में सिर्फ अपनी

पढ़ाई पर ध्यान देंगे तो Teachers के सामने उनकी अच्छी इमेज बनेगी. लेकिन ऐसा करना आसान नहीं है. आपको खुद को समझाना होगा कि दोस्ती और मस्ती के लिए तो पूरी जिन्दगी है लेकिन ये समय जो जा रहा है वो दोबारा आने से रहा। इसीलिए थोड़ा कष्ट अभी ही कर लें।

सोशल मीडिया से दूर रहें

आजकल के बच्चों की लाइफ में सोशल मीडिया की Importance ऐसी हो गयी है जैसे मछली के लिए पानी और हमारे लिए सांसें. खास कर स्टूडेंट्स सोशल मीडिया की दल-दल में इस कदर धंसते चले जा रहे हैं कि उनका लक्ष्य भी उनकी आँखों से ओझल हो जाता. अपना सारा समय यूँ ही बर्बाद करते चले जा रहे हैं. अगर स्टूडेंट्स खुद को समझा लें कि उन्हें पहले अपनी पढ़ाई करनी है और बाद में कुछ और तब उनको उनकी मंजिल तक पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता क्योंकि व्यक्ति का असल दुश्मन वो खुद होता है. वह अगर दिल से कुछ करने की ठान ले तो कुछ भी असंभव नहीं।

अगर मान लो तो हार है पर ठान लो तो जीत है।

अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहें

दोस्तों आपमें से बहुत सारे स्टूडेंट्स ऐसे होंगे जो School तक अपने लक्ष्य के प्रति तत्पर रहते हैं पर जैसे ही School से निकलते हैं तो अपने लक्ष्य से कोसों दूर चले जाते हैं जबकि यही ऐसा समय होता है जब आप अपनी लगन और कड़ी मेहनत से अपनी मंजिल तक जा सकते हैं. College लाइफ जिन्दगी का ऐसा पड़ाव है जिसमें हम खुद को संवार भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं. ये हमारे ऊपर Depend करता है की हम अपनी लाइफ को कैसा बनाना चाहते हैं. आप अपना लक्ष्य सच में पूरा करना चाहते हैं तो आपको उस राह में अग्रसर रहना होगा. सिर्फ मन में ही ख्याली पुलाव पकाने से

कुछ नहीं मिलने वाला. आपको खुद को खुद के लिए खड़ा करना होगा, खुद के लिए ज़िन्दगी की जंग लड़नी है क्योंकि ये समय लाइफ का गोल्डन पीरियड है और आपको इस गोल्डन Chance का लाभ उठाना चाहिए।

आज जितने भी स्टूडेंट्स ये post पढ़ रहे हैं मैं उन सबसे ये कहना चाहती हूँ कि ज़िन्दगी सबको एक ही बार मिलती है, अगर कुछ पाना है तो अभी से मेहनत करना शुरू कर दें। क्योंकि जब आप अपनी लाइफ में कुछ बड़ा हासिल कर लोगे तो पूरी दुनिया आपकी मिसाल देने लगेगी।

जेफ बेज़ोस की सफलता की कहानी

जेफ बेज़ोस का जन्म 12 जनवरी 1964 को अमेरिका के न्यू मेक्सिको में हुआ था। जब वे पैदा हुए तब उनकी माँ जैकलीन हाईस्कूल में पढ़ाई कर रही थीं और उनकी उम्र केवल 17 साल थी। उनके पिता का नाम टेड जॉरगेन्सेन था। वे एक बाइक की दुकान के मालिक थे।

जेफ केवल 18 महीने के थे जब उनके पिता उन्हें और उनकी माँ को छोड़कर चले गए थे। इसके बाद कुछ साल तक उनकी माँ ने उन्हें अकेले ही संभाला था। जेफ जब चार साल के हुए तो उनकी माँ ने मिगवेल बेज़ोस से शादी कर ली। इसके बाद जेफ अपना सरनेम 'बेज़ोस' लिखने लगे। उनका परिवार ह्यूस्टन रहने चला गया। तब जेफ के पिता मिगवेल वहां इंजीनियर की तरह काम करने लगे। जेफ को शुरू से ही नई चीजों को जानने का शौक था। वे अपने खिलौनों के कलपुर्जे अलग कर देते थे और फिर वापस उन्हें जोड़ भी देते थे।

ऐसा करके दरअसल वे जानना चाहते थे कि चीजें काम कैसे करती हैं। वे शुरू से ही अपनी उम्र के बच्चों से अलग थे। जेफ ने रिवर ओक्स एलिमेंट्री स्कूल से अपनी शुरुआती पढ़ाई की।

जेफ अपनी छुट्टियां अपने नाना के घर बिताया करते थे। उन्होंने शुरू से ही खुद को टेक्नोलॉजी की दुनिया में साबित किया था। बचपन में अपने भाई-बहन की सुरक्षा के लिए उन्होंने एक इलेक्ट्रिक अलार्म भी बनाया था।

जेफ बेज़ोस की शिक्षा

आगे चलकर उनका परिवार मियामी चला गया। यहां जेफ ने पॉलमेटो हाईस्कूल में पढ़ाई शुरू की। यहां उन्हें साइंस ट्रेनिंग प्रोग्राम में हिस्सा लेने का अवसर मिला।

उन्हें 1982 में सिल्वर नाइट अवार्ड से भी नवाजा गया था। जेफ अपनी कक्षा में सबसे बुद्धिमान छात्रों में से एक थे। स्कूल के दिनों से ही उनका ध्यान किताबों में रहता था लेकिन यह बात उनके माता-पिता के लिए चिंता का विषय बन गयी थी।

उन्होंने जेफ को फुटबॉल सिखाना भी शुरू किया। जेफ बेज़ोस ने प्रिंसटन यूनिवर्सिटी से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग और कंप्यूटर साइंस में बैचलर ऑफ साइंस की डिग्री ली।

1986 में ग्रेजुएट होने के बाद कंप्यूटर साइंस के क्षेत्र में ही वॉल स्ट्रीट में काम किया। इसके बाद उन्होंने 'फेटल' नाम की कम्पनी में भी काम किया।

Amazon कंपनी की शुरुआत कैसे हुई?

Amazon कम्पनी की शुरुआत के पहले जेफ बेज़ोस ने दूसरी कई कंपनियों में काम किया। इस प्रकार कई कंपनियों में काम करने के बाद जेफ ने सोचा कि वे दूसरों के लिए कब तक ऐसे ही काम करते रहेंगे। इसके बाद उन्होंने खुद का व्यवसाय शुरू करने का मन बना लिया था।

उन्होंने अमेरिका के कई शहरों की यात्राएं कीं और ये जानने की कोशिश की कि लोगों को क्या चाहिए। उन्हें सर्वे में पता चला कि इंटरनेट की मांग तेजी से बढ़ रही है और यदि इसी क्षेत्र में बिज़नेस शुरू किया जाये तो सफलता मिलना तय है।

इसके बाद वर्ष 1994 में उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और अपने घर के गैराज में ऑनलाइन व्यवसाय की तरफ अपना पहला कदम रखा। शुरुआत किताबें बेचने से की क्योंकि वे खुद किताबों के शौकीन थे। उन्होंने तीन कंप्यूटर और कुछ कर्मचारियों के साथ कम्पनी की शुरुआत की। माता-पिता ने भी उनके इस काम में पूरी मदद की। हालांकि उस वक्त उन्हें जेफ का बिज़नेस मॉडल समझ नहीं आ रहा था। उस समय वे इंटरनेट के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे लेकिन उन्हें अपने बेटे पर पूरा भरोसा था।

शुरुआत में जेफ ने अपनी कम्पनी का नाम 'कैडेब्रा' रखा फिर कुछ महीनों बाद उसे बदलकर 'रिलेंटलेसडॉटकॉम' कर दिया लेकिन यह नाम भी उनके दोस्तों को पसंद नहीं आया।

1995 में अंततः उन्होंने अपनी कंपनी का नाम बदलकर 'अमेज़ॉन' रख लिया जो दक्षिणी अमेरिका की एक नदी पर आधारित था। बिज़नेस शुरू करने के सिर्फ 2 महीनों में ही अमेज़ॉन ने 45 से अधिक किताबें बेच दी थीं। इसके बाद कुछ ही समय में उनकी हर हफ्ते की बिक्री करीब 20 हजार अमेरिकन डॉलर्स हो गयी थी।

बस यहीं से ही जेफ और उनकी कम्पनी ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। आगे चलकर 'अमेज़ॉन' पर अनगिनत सामान की लिस्टिंग की गई। इसके बाद 'अमेज़ॉन' बन गयी दुनिया की सबसे बड़ी ऑनलाइन शॉपिंग साइट। वर्तमान में जेफ बेजोस की कुल नेटवर्थ लगभग 199.7 Billion यूएस डॉलर है।

डॉ. ग्लेन कनिंघम दृढ़ संकल्प-शक्ति के महानायक

एक बार एक छोटा-सा (8 वर्ष का) बच्चा स्कूल में आग से बुरी तरह जल गया उसकी टाँगें बहुत बुरी तरह से जल गई थीं। डॉक्टरों ने कहा कि वह कभी चल नहीं पाएगा। उसके पैरों का सारा मॉस जल चुका था। अस्पताल से जब वह घर आया, तो उसकी माँ उसके पैरों की रोजाना मालिश करती और उसे व्हील चेयर पर घुमाने पास के मैदान में ले जाती। उस बच्चे में बड़ा दृढ़ विश्वास था, उसकी संकल्प-शक्ति काबिले तारीफ़ थी। उसे विश्वास था कि चाहे कुछ भी हो, वह चलेगा।

एक दिन जब उसकी माँ उसे व्हील चेयर पर बैठाकर कहीं चली गई, तो उसने स्वयं को उस चेयर पर से गिरा लिया एवं स्वयं को घसीटना शुरू कर दिया। वह रोजाना ही ऐसा करता रहा और धीरे-धीरे उसके पैरों में कुछ जान आने लगी। वह खड़ा होने लगा, फिर बहुत धीरे-धीरे चलने लगा। फिर सामान्य तरह से चलने लगा। फिर वह दौड़ने लगा।

एक दिन वह अमेरिका का एक मील दौड़ने वाला सबसे तेज धावक बन गया। उसने 1500 मी. की दौड़ में विश्व रिकॉर्ड बनाया। वह कोई और नहीं डॉ. ग्लेन कनिंघम थे। कनिंघम की संकल्प-शक्ति को बार-बार नमन है।

हाथों का मोहताज नहीं हौसला

सकारात्मक सोच के साथ ज़िद की जाए तो वास्तव में दुनिया बदल सकती है। ऐसा ही कर दिखाया है श्रीराम कॉलोनी

सांगानेरी निवासी 15 वर्षीय किशोर रोशन नागर ने। वर्ष 2002 में हुए हादसे में दोनों हाथ व एक पैर गवाँ देने के बाद पढ़ाई का सपना चूर हो चुका था। घर के बड़े बुजुर्गों की हिम्मत भी जवाब दे चुकी थी, लेकिन रोशन ने जिद की और आज वह दसवीं की बोर्ड परीक्षा दे रहा है।

वर्ष 2002 में घर की छत से गुजर रही हाइटेशन लाइन के तारों में दोस्त की पतंग सुलझाने के दौरान रोशन नंगे पैर ही छत पर चला गया। लोहे का सरिया हाथ में लेकर रोशन पतंग के लिए लपका, तो उसे ऐसा करण्ट लगा कि एक पैर और दोनों हाथ गवाँने पड़े। दो ऑपरेशन के बाद दादा नारायण उसे घर ले आए।

इलाज के करीब दस माह बाद रोशन ने पढ़ने की इच्छा जाहिर की, इस जिद पर दादी किसना देवी ने हौसला बढ़ाया, उन्होंने उसके हाथ में कलम बाँधकर लिखने का अभ्यास करवाया। कड़ी मेहनत के बाद उसने वर्ष 2003 में पाँचवीं कक्षा में फिर से स्कूल जाना शुरू किया। इसी लगन के साथ उसने छठी में 52%, सातवीं में 62% आठवीं में 79% और नौवीं में 64% अंक हासिल किए। बिना हाथ के 15 वर्षीय रोशन नागर का हौसला देखिए। रोशन ने कटे हाथ पर कलम बाँधकर जयपुर के नेवटा केन्द्र पर दसवीं की परीक्षा दी है। रोशन कहता है—वह किसी पर बोझ बनकर नहीं रहना चाहता। वह सीए बनना चाहता है।

अभिनव बिन्द्रा

जिद और जुनून ने दिलाया गोल्ड

ओलम्पिक में भारत को गोल्ड मेडल मिलने से हर भारतवासी खुशी से झूम उठा। बिन्द्रा की जिद और जुनून ने उन्हें इस मुकाम पर पहुँचाया है। बैंकॉक में हुए वर्ल्ड शूटिंग चैम्पियनशिप में बिन्द्रा की टीममेट रहीं इण्टरनेशनल शूटर श्वेता चौधरी ने कहा कि बिन्द्रा ने जो कहा, वह कर दिखाया। श्वेता मामूली अन्तर से ओलम्पिक टीम में जगह बनाने में नाकाम रहीं। श्वेता ने बताया कि बिन्द्रा ओलम्पिक गोल्ड के लिए पिछले चार साल से अनवरत मेहनत कर रहे थे। बिन्द्रा ने जो कहा, वह कर दिखाया।

ऐसे बदली दुनिया, श्वेता बताती हैं कि एथेन्स ओलम्पिक के बाद अभिनव के व्यवहार में चेन्ज आया। एथेन्स ओलम्पिक में पदक हासिल न करने के बाद ही उन्होंने निश्चय कर लिया था कि वह अगला मौका (बीजिंग ओलम्पिक) नहीं गंवाएँगे। एक स्मरण सुनाते हुए श्वेता ने कहा कि बैंकॉक में वर्ल्ड चैम्पियनशिप के दौरान जब भारतीय टीम के अन्य शूटर शाम को शहर घूमने गए थे, बिन्द्रा जिम में एक्सरसाइज कर रहे थे। शायद अभिनव को एथेन्स ओलम्पिक में पदक नहीं जीतने का सदमा ऐसा लगा कि उनके व्यवहार में काफी परिवर्तन आ गया। उसके बाद से वह रिजर्व रहने लगे। इसके पहले वह साथियों के बीच आकर हँसी-मजाक करते थे। इसके बाद वह लगातार विदेशों में जाकर प्रैक्टिस करते रहे।

श्वेता ने बताया कि बिन्द्रा ने स्वयं ही अपने लिए प्राइवेट कोच, पादकलॉजिस्ट व फिजियो नियुक्त किया था। इसके बावजूद, छोटी प्रतियोगिताओं में उनके मेडल न जीतने पर कई बार उनकी आलोचना भी हुई, परन्तु उनको जानने वाले जानते थे कि अभिनव में वह क्षमता है, जो वक्त आने पर बड़ी प्रतियोगिता में अवश्य दिखेगा। उनका टारगेट ओलम्पिक ही था।

गोल्ड कैडी

बंगलुरु के गोल्फ क्लब में कैडी (अर्थात् खिलाड़ियों के पीछे बैग उठाकर चलने वाले लड़के) का कार्य करने वाले, चिन्ना स्वामी मनियप्पा ने 11 अक्टूबर, 2009 को 12.5 लाख डॉलर की हीरो होण्डा इण्डियन ओपन चैम्पियनशिप जीतकर सभी को अचम्भे में डाल दिया। जब डीएलएफ गुडगाँव गोल्फ क्लब के मैदान पर चिन्ना स्वामी ने दक्षिण कोरिया के प्रतिष्ठित खिलाड़ी ली सुंग को हराया, तो लोग विश्वास न कर सके।

कर्नाटक के चिन्ना स्वामी मनियप्पा ने बिना किसी कोच के स्वयं की मेहनत एवं लगन के बल पर यह प्रतियोगिता जीतकर यह साबित कर दिया कि लगन, निष्ठा एवं आत्मविश्वास से कोई भी लक्ष्य हासिल करना सम्भव है।

चिन्ना स्वामी आज तक कर्नाटक गोल्फ क्लब के सदस्य नहीं हैं। चिन्ना स्वामी के माता-पिता कर्नाटक के उसी गोल्फ मैदान पर दैनिक मजदूर थे, जहाँ आज उनका बेटा गोल्फ की प्रैक्टिस करता है।

चिन्ना स्वामी ने गोल्फ की बारीकियाँ कैडी का कार्य करते-करते सीखीं एवं प्रोफेशनल गोल्फर बने। हमें गर्व है ऐसे भारतीय पर। चिन्ना स्वामी आज हर उस युवक के लिए प्रेरणास्रोत हैं, जो आर्थिक मजबूरी को अपनी सफलता के मार्ग की रुकावट समझते हैं।

शूज के पैसे भी नहीं थे उसैन बोल्ट के पास

वर्ष 2009 में बर्लिन में हुई विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में उसैन बोल्ट (Usain Bolt) ने 100 M एवं 200 M की रेस में स्वयं का ही विश्व रिकॉर्ड तोड़कर तथा 9.50 एवं 19.19 सेकण्ड्स का नया रिकॉर्ड बनाकर, विश्व को चौंका दिया।

दुनिया के सबसे तेज धावक के बचपन की कहानी, उसी की माँ की जुबानी— यह कहानी उस व्यक्ति की है, जो फर्श से अर्श तक पहुँचा है। कहानी उस व्यक्ति की, जो बचपन में खेलता था क्रिकेट, लेकिन आज धूम मचा रहा है एथलेटिक्स में और बन गया है दुनिया का सबसे तेज दौड़ने वाला। आप उसे उसैन बोल्ट के नाम से जानते हैं, लेकिन मेरे लिए वह मेरा प्रिय बेटा ही है। मेरे पति वेलेस्ले गाँव में छोटी-सी दुकान चलाते हैं, इसलिए बचपन में उसैन को स्पोर्ट्स शूज नहीं दिला पाए थे। स्कूल प्रबन्धन ने उसे ये जूते दिलाए, जिससे उसकी ट्रेनिंग ने रफ्तार पकड़ी। उसैन का जन्म जमैका के छोटे से गाँव ट्रेलॉनी पेरिश (शेरवुड कन्टेंट) में हुआ, जहाँ स्ट्रीट लाइट्स नहीं थी और पीने का पानी भी नहीं के बराबर था। जहाँ बुजुर्ग आज भी गधे पर बैठकर इधर-उधर जाते हैं और लोगों को पीने के पानी के लिए सार्वजनिक नल के सामने घण्टों लाइन लगानी पड़ती है।

उसैन बचपन में हाइपर एक्टिव था। वो जब तीन सप्ताह का था, तो मैं उसे बिस्तर पर लिटाकर कमरे से बाहर चली गई। जब मैं कमरे में आई, तो देखा वो बिस्तर से गिर गया था, लेकिन उस पर चढ़ने की कोशिश में जुटा हुआ था। उसी समय मुझे लग गया था कि यह साधारण बच्चा नहीं है। उसका जन्म तय समय से डेढ़ सप्ताह बाद हुआ था। मुझे लगता है उसकी रफ्तार सिर्फ उसी समय धीमी रही होगी। मेरे पिता ने सबसे पहले यह नोट किया कि इस बच्चे में कुछ खास बात है।

उसके बाद से मैंने उसैन के खान-पान पर ध्यान देना शुरू किया। हमने उसैन का एडमिशन विलियम निब स्कूल में कराया था। वहाँ की प्रिन्सिपल लोन थोप ने कुछ दिन बाद हमें बताया कि हमारा बेटा खेलों में बहुत अच्छा है, इसलिए उसकी ट्रेनिंग का ध्यान भी स्कूल ही रखेगा। बीजिंग में जब उसैन चैम्पियन बना, तो थोप की खुशी देखने लायक थी। बीजिंग ओलम्पिक में रिकॉर्ड बनने के बाद, उस सफलता के बाद गाँव पर खूब पैसा बरसा। माँ (जेनिफर बोल्ट)

अड़सठ की उम्र में हिमालय जीता

उत्तरकाशी की चन्द्रप्रभा अटवाल ने कायम की मिसाल, 6133 मी ऊँची चोटी श्रीकंठ पर लहराया तिरंगा। उत्तरकाशी की 68 वर्षीय चन्द्रप्रभा अटवाल पहाड़ों की गोद में खेलकर बड़ी हुई और होश सम्भालने पर इन्हीं से दिल लगा बैठीं। उम्र के इस पड़ाव में भी चन्द्रप्रभा के हौसले इतने बुलन्द हैं कि उन्होंने हिमालय की 6133 मी ऊँची चोटी श्रीकंठ पर तिरंगा फहराकर मिसाल कायम की है।

आठ महिला पर्वतारोहियों के दल का नेतृत्व करने वाली चन्द्रप्रभा को पहाड़ों से इस कदर मोह हो गया कि उन्होंने शादी भी नहीं की। पर्वतारोहण का 40 साल का अनुभव रखने वाली चन्द्रप्रभा ने कई अन्य देशों में पर्वतारोहण किया है।

इस पर्वतारोही ने नेपाल, चीन, जापान में पहाड़ों की ऊँचाई नापी है। चन्द्रप्रभा को माउण्ट एवरेस्ट पर तिरंगा नहीं फहरा पाने का मलाल आज भी है। उन्होंने बताया कि वे तीन बार एवरेस्ट मिशन के लिए चुनी गईं, लेकिन वे इन्हें पूरा नहीं कर पाईं।

विल्मा रूडोल्फ

विल्मा रूडोल्फ का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। जब वे मात्र चार वर्ष की थीं, तो उन्हें भयंकर निमोनिया एवं ज्वर हो गया, जिससे उन्हें पोलियो हो गया। डॉक्टर ने उन्हें पैर में 'ब्रेस' पहना दिया और कहा कि अब वे कभी पैर से नहीं चल सकेंगी। विल्मा की माँ उन्हें हमेशा प्रोत्साहित करती रहती और उन्हें ईश्वर प्रदत्त योग्यता का उपयोग करने एवं हिम्मत से काम लेने हेतु उत्साहित करती रहती थीं। विल्मा रूडोल्फ बहुत हिम्मत वाली लड़की थी। हार मानना तो जैसे वह जानती ही न थी। नौ वर्ष की उम्र में, डॉक्टरों की सलाह के विपरीत, उन्होंने अपने पैर से ब्रेस उतार दिए एवं धीरे-धीरे पैरों पर चलना शुरू किया। 13 वर्ष की उम्र में दौड़ में हिस्सा लिया। वह दौड़ में बार-बार पराजित हुईं, लेकिन एक दिन ऐसा भी आया, जब वह प्रथम आईं।

15 वर्ष की उम्र में वह Tennessee State University गईं। वहाँ वह एक Temple नामक कोच से मिली, उन्होंने कोच से कहा कि मैं दुनिया की सबसे तेज धाविका बनना चाहती हूँ। कोच ने उनकी लगन, निष्ठा एवं दृढ़ संकल्प को देखते हुए, कहा कि "तुम्हें कोई नहीं रोक सकता और इसमें मैं तुम्हारी सहायता करूंगा, तुम्हें ट्रेनिंग दूंगा।"

वह दिन भी आया, जिसका विल्मा रूडोल्फ को बेसब्री से इन्तजार था। वह 1960 के ओलम्पिक खेलों में हिस्सा ले रही

थी। विल्मा का मुकाबला जुत्ता हायने (Jutta Heine) नामक धाविका से था, जो कभी हारी ही नहीं थी।

पहली दौड़ 100 मी की थी। विल्मा ने जुत्ता को पराजित किया एवं अपना प्रथम स्वर्ण पदक जीता।

दूसरी दौड़ 200 मी की हुई, उसमें भी विल्मा ने जुत्ता को पराजित किया एवं अपना दूसरा स्वर्ण पदक जीता।

तीसरी दौड़ 400 मी की बेटन रिले रेस थी। यहाँ भी वह जुत्ता हायने के मुकाबले में थी। इस दौड़ में सबसे तेज धावक को सबसे अन्त में रखा जाता है। यहाँ तीन धावकों के दौड़ने के बाद जब बेटन विल्मा को दिया गया, तो बेटन, विल्मा के हाथ से गिर गया, लेकिन जैसे ही विल्मा ने जुत्ता को दौड़ते हुए देखा, उसने तुरन्त बेटन उठाया और अविश्वसनीय गति से मशीन की तरह दौड़ लगा दी।

इस तरह उसने तीसरा स्वर्ण पदक भी अपने नाम किया। यह ऐतिहासिक घटना थी। विल्मा ने इतिहास रच दिया था। उसने दुनिया की सबसे तेज दौड़ने वाली महिला बनने का सपना साकार कर लिया।

अपंग महिला का यह कारनामा इतिहास में दर्ज है एवं जीतने की इच्छा रखने वालों के लिए एक शानदार प्रेरणापुंज है। यह उन लोगों के लिए सबक है, जो अपनी असफलता के न जाने कितने बहाने बताते हैं, परिस्थितियों को दोष देते हैं। सफलता हिम्मती, साहसी और संकल्पित लोगों की दासी है, यह सिद्ध किया विल्मा रूडोल्फ ने। विल्मा रूडोल्फ को शत्-शत् नमन।

लिज्जत पापड़ की कहानी

(मात्र 80 रुपये से शुरू होकर 500 करोड़ से अधिक की अविश्वसनीय बिक्री का लेखा-जोखा)

अच्छी क्वालिटी एवं सुरुचिपूर्ण स्वाद के लिए पहचाने जाने वाले लिज्जत पापड़ की सफलता की कहानी, निश्चित रूप से सहकारी क्षेत्र में सफलता की शानदार मिसाल है। मात्र 80 रु में केवल 7 महिलाओं द्वारा वर्ष 1959 में शुरू किए गए महिला गृह उद्योग ने आज 500 करोड़ से अधिक की बिक्री का आँकड़ा पार कर लिया है। आज इस संस्थान से 42000 से अधिक महिलाएँ जुड़ी हुई हैं। इसने एक बीमार, बन्द पड़ी पापड़ बनाने की इकाई को खरीदकर 15 मार्च, 1959 को पापड़ बनाने का कार्य शुरू किया। चार पैकेट पापड़ बनाने से इस उद्योग की मुम्बई में शुरुआत हुई। धीरे-धीरे यह को-ऑपरेटिव में परिवर्तित हो गया और आज एक बड़े उद्योग के रूप में इसे जाना जाता है।

इसकी पहले वर्ष की बिक्री मात्र 6196 रु थी। आज इसकी बिक्री 500 करोड़ से भी अधिक है।

यह कहानी महिलाओं के सशक्तीकरण एवं उनकी मेहनत से उपजी अभूतपूर्व सफलता की कहानी है। आज लिज्जत पापड़ न केवल हमारे देश के घर-घर में प्रयुक्त होता है, बल्कि इसका निर्यात भी किया जा रहा है। इस संस्थान का कोई एक मालिक नहीं है, बल्कि संस्थान से जुड़ी हर महिला इसकी स्वामिनी है, लाभ एवं हानि बराबर से सभी द्वारा साझा किए जाते हैं।

इस संस्थान में न दान लिया जाता है, न ही किसी तरह का भी दान स्वीकार किया जाता है। संस्थान में निर्णय थोपा नहीं जाता, बल्कि सभी के द्वारा सर्वसम्मति से लिया जाता है। सचमुच महिला गृह उद्योग—लिज्जत पापड़, एक अनूठा संस्थान है, जिसकी सफलता की कहानी भी अद्भुत है।

कर्नल साण्डर्स ने कैसे KFC शुरू की

कर्नल साण्डर्स (Colonel Sanders), जिनका पूरा नाम हारलैंड डेविड साण्डर्स (Harland David Sanders) था। एक अमेरिकन व्यवसायी थे, जिन्होंने KFC (Kentucky Fried Chicken) उत्पादकों की चेन सारी दुनिया में फैलाई। साण्डर्स जब 5 वर्ष के ही थे, तो उनके पिता का देहान्त हो गया, चूंकि उनकी माँ नौकरी पर जाती थीं, तो घर का खाना उन्हें ही पकाना होता था। जब वे 7वीं कक्षा में थे, तो उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी। जब उनकी माँ ने दूसरी शादी कर ली तो साण्डर्स घर से भाग गए। जीवन की शुरुआत में साण्डर्स को बहुत संघर्ष करना पड़ा। कभी स्टीम बोट में नौकरी की, तो कभी इंश्योरेंस में सेल्समैन का कार्य किया, तो कभी रेलरोड में फायरमैन का कार्य किया।

16 वर्ष की उम्र में (अपनी उम्र को गलत बताकर) वे आर्मी में भरती होकर क्यूबा में नौकरी करते रहे। 40 वर्ष की उम्र में साण्डर्स चिकन बनाते थे एवं जो उनके सर्विस स्टेशन पर रुकते, उनके लिए वे चिकन काम आते। उस समय उनके पास कोई रेस्तराँ नहीं था। चिकन की गुणवत्ता के कारण शीघ्र ही उसकी बिक्री बढ़ने लगी और वे 142 सीट वाले होटल में मुख्य कुक (Chef) की तरह कार्य करने लगे। वहाँ उन्होंने चिकन पकाने का नया तरीका Pressure Fryer ईजाद किया।

वर्ष 1935 में गवर्नर रूबी लफून (Ruby Laffoon) द्वारा उन्हें Kentucky Colonel की उपाधि दी गई। अब धीरे-धीरे कर्नल साण्डर्स का KFC चिकन बहुत प्रसिद्ध हो गया। वर्ष 1964 में

कर्नल ने KFC Corporation का हिस्सा 2 मिलियन डॉलर्स में बेच दिया। कर्नल ने कनाडा में अपनी फ्रेंचाइजी बेची एवं खूब धन कमाया।

यह कहानी बताती है कि अपनी उच्च क्वालिटी एवं कड़ी मेहनत से आप अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी बहुत बड़ी सफलता अर्जित कर सकते हैं।

संजय अखाड़े दृढ़ निश्चय की जीती-जागती मिसाल

कुली पिता और बीड़ी बनाने वाली माँ के लाडले संजय अखाड़े ने तय किया आईएएस अधिकारी बनने का सफर। किसी चीज को पाने के लिए यदि पूरी शिद्दत के साथ कोशिश की जाए, तो मानकर चलिए कि आपको कामयाब होने से कोई भी नहीं रोक सकता, इसका उदाहरण हैं संजय अखाड़े। महाराष्ट्र के नासिक जिले के संजय अखाड़े, घोर विपन्नता के बावजूद आईएएस बनने में कामयाब रहे।

नासिक के मखमलाबाद रोड की तंग गलियों में बने एक घर की चाहरदीवारी में कुली के बेटे के रूप में जन्मे मेधावी संजय अखाड़े। माँ महीने के तीसों दिन आधे पेट रहकर फैंक्ट्री में बीड़ी बनाती, तब उम्मीद बन्धती कि कम-से-कम बच्चे चाय में डुबोकर डबल रोटी तो खा ही लेंगे। पिता का कोई कसूर नहीं स्टेशन पर कुली का काम कर रहे व्यक्ति को आखिर मिलता ही क्या है?

दूसरों के थैले और बोरियाँ उठाते-उठाते वह यह भी भूल जाता कि देर हुई, तो उसके बच्चे आज भी भूखे पेट ही सोएँगे। माता-पिता की ऐसी हालत देख संजय बचपन से ही मजदूरी करने लगे।

कई सालों तक संजय ने होटलों में टेबल साफ करके, मेडिकल की दुकान पर काम करके, अखबार बाँटकर और एसटीडी की

दुकान पर बैठकर अपने पिता का साथ दिया। पिता ने स्कूल में भी डाला तो केवल इस मकसद से कि वे दिनभर की मिली मजदूरी को गिन सकें, लेकिन संजय तो जैसे बने ही कुछ खास बनने के लिए थे। स्कूल में मन लगाकर पढ़ते और बाकी बचे वक्त में मजदूरी कर खुद का पेट पालते। वे खाने, पहनने, रहने में जरूर लोगों से पीछे रहे, लेकिन पढ़ने में सबसे अब्बल रहे। हर कक्षा में उनका पहला स्थान पक्का रहता था। संजय मराठी के अतिरिक्त कोई अन्य भाषा नहीं जानते थे। ऐसे में सुबह अखबार बाँटने के बाद बचे हुए अंग्रेजी अखबारों को पढ़कर उन्होंने अपनी अंग्रेजी सुधारी। मुसीबतों से जूझते हुए संजय स्नातक तक की पढ़ाई पूरी करके प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में जुट गए। सारा दिन मजदूरी करने के बाद जो वक्त मिलता, संजय उसका पूरी ईमानदारी के साथ पढ़ाई में इस्तेमाल करते। बकौल संजय, 'मैंने संघर्ष के दिनों में एक मिनट भी बरबाद नहीं किया।

मैं जानता था कि अगर मैंने वक्त की कीमत नहीं पहचानी, तो वक्त भी मुझे नहीं पहचानेगा। संजय कहते हैं, "शुरू-शुरू में मैं हीन भावना से ग्रसित था न मैं देखने में अच्छा था और न मेरी पारिवारिक पृष्ठभूमि मजबूत थी और न ही मुझे अंग्रेजी बोलनी आती थी। ऐसे में मैं होशियार छात्रों का सामना कर पाऊँगा? लेकिन ज्यों-ज्यों मैं पढ़ाई करता गया, मेरे आत्मविश्वास के आगे सारी कमियाँ न जाने कहाँ गायब हो गईं।

इसी दौरान संजय को मार्गदर्शक के रूप में पुणे के आईएएस अविनाश धर्माधिकारी मिले। उन्होंने संजय का न केवल हौसला बढ़ाया, बल्कि कोचिंग भी कराई। संजय की मेहनत और अविनाश का मार्गदर्शन रंग लाया। इस साल की संघ लोकसेवा आयोग परीक्षा में सफल प्रत्याशियों की सूची में एक नाम संजय

का भी था। संजय को यह सफलता चौथे प्रयास में मिली। अब वे आईएस बन चुके हैं।

संजय कहते हैं, हालात कितने ही बुरे हों, कितनी गरीबी हो। इसके बाद भी यदि आपकी विल पावर मजबूत हो, आपको हर हाल में सफल होने की सनक हो, तो दुनिया की कोई ताकत आपको कामयाबी का वरण करने से नहीं रोक सकती।” **इसलिए मित्रों! उठो, जागो और तब तक चैन से मत बैठो, जब तक तुम कामयाब न हो जाओ।**

महान भौतिकविद् वर्नर हाइजेनबर्ग

बीसवीं शताब्दी के महान् भौतिकविद् वर्नर हाइजेनबर्ग (1901–1976) जर्मन सैद्धान्तिक भौतिकशास्त्री थे, उन्होंने क्वाण्टम मैकेनिक्स के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। क्वाण्टम भौतिकी में प्रयुक्त किया जाने वाला अनिश्चितता का सिद्धान्त उन्होंने ही प्रतिपादित किया था। नाभिकीय भौतिकी, क्वाण्टम फील्ड थ्योरी और आर्टिकल थ्योरी के क्षेत्र में भी उन्होंने अनेक नियमों, संकल्पनाओं और सिद्धान्तों को अन्वेषित किया।

वर्नर हाइजेनबर्ग उन्नीस साल की उम्र में एक स्कूल में गेटकीपर की नौकरी करते थे, उन्हें पढ़ने का शौक था और वे स्कूल की लाइब्रेरी से पढ़ने की किताबें ले लिया करते थे, एक बार उन्हें प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटो की पुस्तक 'तिमैयस' मिल गई, जिसमें प्लेटो ने परमाणुओं एवं पदार्थ से सम्बन्धित अपने सिद्धान्त प्रस्तुत किए थे। मामूली शिक्षा प्राप्त वर्नर हाइजेनबर्ग को इस किताब को पढ़ते-पढ़ते भौतिकी में इतनी रुचि हो गई कि उन्होंने इसका विधिवत् अध्ययन करने की ठान ली।

इसके बाद जो हुआ, वह शिक्षा और प्रतिभा में अनुपम उदाहरण के रूप में हमेशा याद रखा जाएगा। वर्नर हाइजेनबर्ग ने भौतिकी का इतना विशद् अध्ययन किया कि मात्र 23 वर्ष की उम्र में वे महान् भौतिकीशास्त्री मैक्स प्लांक के सहायक के रूप में नियुक्त हो गए। 26 वर्ष की उम्र में वे लीपिंजग में भौतिकी के प्रोफेसर बन गए।

32 वर्ष की उम्र में उन्हें पिछले कुछ वर्षों के दौरान भौतिकी के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए नोबेल पुरस्कार मिल गया।

13 वर्ष की छोटी अवधि में एक गेटकीपर से नोबेल पुरस्कार विजेता तक का सफर तय करने की मिसाल दुनिया में और कोई नहीं है। एक किताब से प्रेरणा पाकर एक साधारण नवयुवक कितनी ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है, वर्नर हाइजेनबर्ग की यह कहानी हमें यही बताती है।

फोर्ड मोटर के मालिक : हेनरी फोर्ड

फोर्ड मोटर के मालिक हेनरी फोर्ड दुनिया के चुनिन्दा धनी व्यक्तियों में शुमार किए जाते थे, उनकी गाड़ी की प्रशंसा दुनिया भर में होती थी। एक बार एक भारतीय उद्योगपति भारत में मोटर कारखाना लगाने से पहले फोर्ड से सलाह करने अमेरिका गए। भारतीय उद्योगपति ने अमेरिका पहुँचकर हेनरी फोर्ड से मिलने का समय माँगा।

फोर्ड ने कहा, "दिन में मैं आपके लिए अधिक समय नहीं निकाल पाऊँगा, इसलिए आप शाम छह बजे आ जाइए।" भारतीय उद्योगपति उनके घर पहुंचे। वहाँ एक आदमी बर्तन साफ कर रहा था। उन्होंने उससे कहा, 'मुझे हेनरी साहब से मिलना है।' वह आदमी उन्हें बैठक में बैठाकर अन्दर चला गया।

थोड़ी देर बाद उसने उनके सामने आकर कहा, "तो आप हैं वह भारतीय उद्योगपति। मुझे हेनरी कहते हैं।"

भारतीय उद्योगपति को असमंजस में देखकर हेनरी ने कहा, "लगता है आपको मेरे हेनरी होने पर सन्देह हो रहा है। भारतीय उद्योगपति ने सकपका कर कहा, "हाँ सर, अभी आपको एक नौकर का काम करते देखकर ताज्जुब हुआ। इतनी बड़ी कम्पनी के मालिक को बर्तन साफ करते हुए देखकर किसी को भी भ्रम पैदा हो सकता है। यह काम तो नौकरों का है।"

हेनरी ने कहा, "शुरुआत में मैं भी एक साधारण इन्सान था। अपना काम खुद करता था। अपने हाथ से किए गए कठोर

परिश्रम का ही फल है कि आज मैं फोर्ड मोटर का मालिक हूँ। मैं अपने अतीत को भूल न जाऊँ और मुझे लोग बड़ा आदमी न समझने लगे, इसलिए मैं अपने सभी काम अपने हाथ से करता हूँ। अपना काम करने में मुझे किसी तरह की शर्मिन्दगी और झिझक नहीं होती।”

भारतीय उद्योगपति उठ खड़े हो गए और बोले, “सर! अब मैं चलता हूँ। मैं जिस मकसद से आपके पास आया था, वह एक मिनट में ही पूरा हो गया। मेरी समझ में आ गया कि सफलता की कुंजी दूसरों पर भरोसा करने में नहीं, स्वयं पर भरोसा करने में है।”

फलोरेन्स चैडविक लक्ष्य पर दृष्टि और मन में आत्मविश्वास

4 जुलाई, 1952 को फलोरेन्स चैडविक 'कैटेलिना चैनल' को तैरकर पार करने वाली पहली महिला बनने जा रही थीं। इंग्लिश चैनल पर वह पहले ही विजय प्राप्त कर चुकी थीं। पूरी दुनिया उसके इस करिश्मे को देख रही थी। हड्डियाँ जमा देने वाले ठण्डे पानी में कोहरे को चीरती हुई फलोरेन्स आगे बढ़ रही थीं, वहाँ शार्क का खतरा भी था।

फलोरेन्स ने हार मान ली। बाद में उसे यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि वह सागर तट से सिर्फ आधा मील दूर थी। फलोरेन्स ने हार इसलिए नहीं मानी कि वह वाकई तैरते-तैरते थक गई थी, बल्कि इसलिए कि उसे अपना लक्ष्य नहीं दिख रहा था।

इस बात को लेकर फलोरेन्स ने कोई बहाना नहीं बनाया। उसने कहा—“मैं झूठ नहीं बोलूंगी... यदि मुझे जमीन धुंधली-सी भी दिख जाती, तो मैं तैर गई होती।

दो महीने बाद वह वापस कैटेलिना चैनल की ओर आई। इस बार पहले से बुरे मौसम के बाद भी उसने न केवल चैनल को पार करने वाली पहली महिला बनने का खिताब पाया, बल्कि पुरुषों के रिकॉर्ड को भी दो घण्टे के बड़े अन्तर से पीछे कर दिया।

आत्म विजेता ही असली विजेता

कहते हैं, जिसने खुद को जीता, उसने दुनिया जीत ली। अपने ऊपर विजय प्राप्त करने वाले को सबसे बड़ा योद्धा माना गया है। मनुष्य का असली शत्रु तो वह स्वयं ही है। वस्तुतः हमारे असली शत्रु हमारे कुसंस्कार, हमारी बुरी आदतें, हमारे कुविचार और हमारा भ्रष्ट आचरण आदि हैं।

दीमक लकड़ी को, विषाणु स्वास्थ्य को चाट जाते हैं। व्यसन एवं दुर्गुण मनुष्य को गर्त में धकेलते हैं और उसके उत्कर्ष का कोई प्रयास सफल नहीं होने देते। दूसरों का दोष हमें तुरन्त दिखाई देता है, जबकि अपने दोषों के प्रति हम आँखें मूंदे रहते हैं। यदि हम अपने व्यसनों, दुर्गुणों, चारित्रिक दोषों का परिमार्जन कर सकें, अपने कुसंस्कारों पर विजय प्राप्त कर सकें, तो हम असली विजेता हैं। इन शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना सबसे कठिन एवं दुरुह कार्य है, इन्हें परास्त करने वाला ही वास्तविक विजेता है।

करसन भाई पटेल

गरीबी से सम्पन्नता की यात्रा

एक मध्यम वर्गीय किसान परिवार में जन्मे करसन भाई पटेल का जन्म गुजरात के मेहसाना कस्बे में हुआ, उन्होंने अपना जीवन गुजरात के खान विभाग में लैब असिस्टेंट की नौकरी से शुरू किया। वर्ष 1969 में जब करसन भाई की उम्र मात्र 25 वर्ष थी, उन्होंने घर में ही एक लघु उद्योग स्थापित किया, जिसमें उन्होंने डिटरजेण्ट बनाना शुरू किया।

यह ऐसा समय था, जब बाजार में विदेशी कम्पनियों के ही डिटरजेण्ट मिला करते थे और किसी भारतीय उद्योग द्वारा डिटरजेण्ट बनाने की कल्पना भी न की जा सकती थी।

करसन भाई घर-घर जाकर तीन रुपये प्रति किलो की दर से निरमा डिटरजेण्ट बेचा करते थे। उन्होंने निरमा नाम अपनी बेटी निरुपमा के नाम से लिया। निरमा पाउडर ने डिटरजेण्ट पाउडर की दुनिया में तहलका मचा दिया। 1 व्यक्ति से शुरू इस उद्योग में आज करसन भाई के पास 15000 व्यक्तियों का समूह है। आज निरमा का वार्षिक टर्न ओवर 35500 करोड़ से अधिक है।

करसन भाई हर उस व्यक्ति के लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत रहेंगे, जो जीवन में कड़ी मेहनत करके कुछ करने की इच्छा रखते हैं।

फोर्ब्स पत्रिका के अनुसार, सन् 2005 में करसन भाई की कुल पूँजी 640 मिलियन डॉलर थी।

भारत रत्न प्राप्त डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु के एक गाँव धनुषकोडी में हुआ था। इनके पिता, मछुआरों को किराए पर नाव देते थे। कलाम ने अपनी पढ़ाई के लिए धन की पूर्ति हेतु अखबार बेचने का कार्य भी किया। डॉ. कलाम ने जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना किया। उनका जीवन सदा संघर्षशील रहने वाले एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जिसने कभी हार नहीं मानी तथा देशहित में अपना सर्वस्व न्योछावर करते हुए, सदा उत्कृष्टता के पथ पर चलते रहे। 71 वर्ष की आयु में भी वे अथक परिश्रम करते हुए भारत को सुपर पावर बनाने की ओर प्रयासरत थे।

भारत रत्न डॉ. अब्दुल कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति बने। वे भारत रत्न से सम्मानित होने वाले तीसरे राष्ट्रपति हैं। भारत के मिसाइल कार्यक्रम के जनक, डॉ. कलाम ने देश को 'अग्नि' एवं 'पृथ्वी' जैसी मिसाइलें देकर, चीन एवं पाकिस्तान को इनकी रेंज में लाकर, दुनिया को चौंका दिया।

एक बार एयरफोर्स के पायलट के साक्षात्कार में 9वें नम्बर पर आने के कारण (कुल आठ प्रत्याशियों का चयन करना था) उन्हें निराश होना पड़ा था।

वे ऋषिकेश बाबा शिवानन्द के पास चले गए एवं अपनी व्यथा उन्हें सुनाई।

बाबा ने उन्हें कहा :-

Accept your destiny and go ahead with your life- You are not destined to become An Airforce Pilot- What you are destined to become is not revealed now but it is predetermined - Forget this failure [As it was essential to lead you to your existence - Become one with yourself] my son- Surrender yourself to the wish of God-

बाबा शिवानन्द का कहने का अर्थ यह था कि असफलता से निराश होने की आवश्यकता नहीं। यह असफलता आपकी दूसरी सफलताओं के द्वार खोल सकती है। तुम्हें जीवन में कहाँ पहुँचना है, इसका पता नहीं। आप कर्म करो, ईश्वर पर विश्वास करो।

डॉ. कलाम का जीवन, हर उस नवयुवक के लिए आदर्श प्रेरणा स्रोत है, जो अपने जीवन में एक असफलता मिलने पर ही निराश हो जाते हैं। डॉ. कलाम ने अपने सारे जीवन में निःस्वार्थ सेवा कार्य किया। उनका राष्ट्र प्रेम और उनका देशभक्ति का ज़ब्बा हर भारतीय के लिए सबक एवं प्रेरणा का पुंज है और हमेशा रहेगा।

नरेश गोयल : जेट एयरवेज के चेयरमैन

23 दिसम्बर, 1950 को जन्मे नरेश गोयल ने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया है। नरेश गोयल को स्कूल जाने के लिए कई मील पैदल चलना पड़ता था, क्योंकि उस समय उनके पिता की आर्थिक स्थिति साइकिल खरीदने की नहीं थी। गोयल ने अपना जीवन अपने मामा की कम्पनी में 300 रु प्रतिमाह की कैशियर की नौकरी से शुरू किया। आज उनकी कुल पूँजी 8100 करोड़ की आँकी जाती है।

नरेश गोयल ने कभी भी अपने पुराने समय को नहीं भुलाया। वे जीवन में बहुत विनम्र एवं संयमित हैं। वर्ष 1967 में कॉमर्स से स्नातक करने के बाद उन्होंने लेबनीज एयरलाइन्स में सेल्स एजेण्ट की तरह कार्य करना शुरू किया।

वर्ष 1967 में इराकी एयरवेज में पब्लिक रिलेशन ऑफिसर एवं 1971 से 1974 तक जॉर्डन एयरलाइन्स में रीजनल मैनेजर के पद पर कार्य किया। इस तरह कई एयरलाइन्स में कार्य अनुभव प्राप्त करने के बाद 1992 में नरेश गोयल ने जेट एयरवेज को शुरू करके, अपने जीवन के सपने को पूरा किया। जीवन के इस मुकाम तक पहुँचने वाले गोयल, उन सभी नवयुवकों के प्रेरणास्रोत हैं, जो परिस्थितिवश अपना जीवन बहुत छोटे स्तर से शुरू कर पाते हैं।

नरेश गोयल ने हमेशा बड़े सपने देखे और उन्हें पूरा करने हेतु खूब मेहनत से संघर्ष भी किया एवं सफल हुए।

सर एम. विश्वेश्वरैया

ईमानदारी एवं कर्मठता की प्रतिमूर्ति

सर एम. विश्वेश्वरैया को लोग सर एमवी के नाम से जानते, पहचानते थे। उनका जन्म 15 सितम्बर, 1860 को पुराने मैसूर राज्य के गाँव मुदेनहाली (Muddenahalli) में हुआ था। उनकी पिता श्रीनिवास शास्त्री संस्कृत के विद्वान् थे, उनकी माता एक धार्मिक महिला थी।

पढ़ाई में प्रारम्भ से ही मेधावी रहे सर एमवी ने अपना कैरियर नासिक में सहायक इन्जीनियर की तरह शुरू किया। उन्होंने सिन्धु नदी से सुक्कू कस्बे को पानी सप्लाई का तरीका ईजाद किया। उन्होंने पानी को व्यर्थ बहने से रोकने हेतु बाँध पर स्टील के दरवाजे लगवाए। कृष्णा राज सागर बाँध का डिजाइन भी सर एमवी ने ही तैयार किया। वह पूरी तरह ईमानदार एवं सचरित्र व्यक्तित्व के धनी थे।

वर्ष 1912 में मैसूर के महाराजा ने उन्हें दीवान नियुक्त करने की पेशकश की। इस नियुक्ति को स्वीकार करने से पूर्व उन्होंने अपने सभी रिश्तेदारों को रात्रिभोज पर आमन्त्रित किया और सभी से स्पष्ट कहा कि वह दीवान के पद को तब ही स्वीकार करेंगे, जब आप मुझे यह आश्वासन देंगे कि कोई मुझसे पक्षपातपूर्ण कार्य हेतु आग्रह नहीं करेगा।

मैसूर के दीवान के रूप में उन्होंने बहुत शानदार कार्यों को अन्जाम दिया। चन्दन तेल की फैक्टरी, स्टील फैक्टरी, मेटल फैक्टरी, भद्रावती आयरन एवं स्टील फैक्टरी उन्हीं के समय में स्थापित हुई। वर्ष 1955 में उन्हें भारत रत्न से नवाजा गया। ऐसे महान् व्यक्तित्व ईमानदारी एवं कर्मठता की अनूठी मिसाल हैं एवं सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

मेघनाद साहा : महान् वैज्ञानिक

6 अक्टूबर, 1883 को साहा का जन्म ढाका (जो अब बांग्लादेश में है) जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ था। उनके पिता एक परचून की दुकान चलाते थे। उनका परिवार काफी गरीब था। मेघनाद साहा की, स्कूल की फीस इत्यादि की पूर्ति एक स्थानीय डॉक्टर अनन्ता दास द्वारा की जाती थी।

साहा शुरू से ही बहुत मेहनतकश एवं मेधावी छात्र थे। कलकत्ता यूनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षा में वर्ष 1909 में साहा ने पूर्वी बंगाल में सभी छात्रों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। एस्ट्रोफिजिक्स के क्षेत्र में मेघनाद साहा ने बहुत शानदार एवं सराहनीय कार्य किया। 1947 में उन्होंने 'न्यूक्लीयर फिजिक्स इन्स्टीट्यूट' की स्थापना की, जिसे बाद में 'साहा इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लीयर फिजिक्स' के नाम में परिवर्तित कर दिया गया।

एक गरीब परिवार में जन्म लेने के बाद भी मेघनाद साहा, अपनी संकल्पशक्ति, प्रबल आत्मविश्वास एवं कठिन मेहनत के कारण देश के महान् वैज्ञानिकों में गिने जाते हैं। उनका निधन वर्ष 1956 में हृदयगति रुक जाने से अचानक हुआ।

महान गणितज्ञ रामानुजन

रामानुजन का जन्म एक गरीब परिवार में 22 दिसम्बर, 1807 को तमिलनाडु के इरोड कस्बे में हुआ था। उनके पिता एक साड़ी की दुकान पर क्लर्क का काम करते थे। रामानुजन के जीवन पर उनकी माँ का बहुत प्रभाव था। जब वे 11 वर्ष के थे, तो उन्होंने SL Loney द्वारा लिखित गणित की किताब की पूरी मास्टरी कर ली थी। गणित का ज्ञान तो जैसे उन्हें ईश्वर के यहाँ से ही मिला था। 14 वर्ष की उम्र में उन्हें मेरिट सर्टीफिकेट्स एवं कई अवार्ड मिले।

वर्ष 1904 में जब उन्होंने टाउन हाईस्कूल से स्नातक पास किया, तो उन्हें के. रंगनाथ राव पुरस्कार, प्रधानाध्यापक कृष्ण स्वामी अय्यर द्वारा प्रदान किया गया।

वर्ष 1909 में उनकी शादी हुई, उसके बाद वर्ष 1910 में उनका एक ऑपरेशन हुआ। घरवालों के पास उनके ऑपरेशन हेतु पर्याप्त राशि नहीं थी। एक डॉक्टर ने उनका मुफ्त में यह ऑपरेशन किया था। इस ऑपरेशन के बाद रामानुजन नौकरी की तलाश में जुट गए। वे मद्रास में जगह-जगह नौकरी के लिए घूमे। इसके लिए उन्होंने ट्यूशन भी किए। वे पुनः बीमार पड़ गए।

इसी बीच वे गणित में अपना कार्य करते रहे। ठीक होने के बाद, उनका सम्पर्क नेल्लौर के जिला कलेक्टर—रामचन्द्र राव से हुआ। वह रामानुजन के गणित में कार्य से बेहद प्रभावित

हुए। उन्होंने रामानुजन की आर्थिक मदद भी की। वर्ष 1912 में उन्हें मद्रास में चीफ अकाउण्टेंट के ऑफिस में क्लर्क की नौकरी भी मिल गई। वे ऑफिस का कार्य जल्दी पूरा करने के बाद, गणित का रिसर्च करते रहते, इसके बाद वे इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ उनके कार्य को खूब प्रशंसा मिली। उनके गणित के अनूठे ज्ञान को खूब सराहना मिली।

वर्ष 1918 में उन्हें ट्रिनिटी कॉलेज कैम्ब्रिज का फेलो (Fellow of Trinity College Cambridge) चुना गया। वह पहले भारतीय थे, जिन्हें इस सम्मान (Position) के लिए चुना गया।

वे बहुत मेहनती एवं धुन के पक्के थे। कोई भी विषम परिस्थिति, आर्थिक कठिनाइयाँ, बीमारी एवं अन्य परेशानियाँ उन्हें अपनी 'धुन' से नहीं डिगा सकीं। वे अन्ततः सफल हुए।

आज उन्हें विश्व के महान् गणितज्ञों में शुमार किया जाता है। 32 वर्ष की छोटी उम्र में ही इस प्रतिभाशाली व्यक्ति का देहावसान हो गया। दुनिया ने एक महान गणितज्ञ को खो दिया।

ब्रह्मचारिणी कमलाबाई कर्मठता एवं जीवन्तता की मिसाल

राजस्थान के नागौर जिले के कुचामन कस्बे में सन् 1923 में जन्मी कमलाबाई की जीवन कथा आत्मविश्वास, स्वाभिमान एवं संघर्ष की ऐसी प्रेरणास्पद कथा है, जो हर महिला, पुरुष को विषम परिस्थितियों में कर्मठता एवं जीवन्तता बनाए रखने हेतु प्रेरित करती है।

12 वर्ष की उम्र में शादी एवं दो वर्ष बाद विधवा होने पर कमलाबाई को भाग्य ने बहुत भयानक त्रासद स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया। फिर वह पूरी तरह अनपढ़ थीं। क्या करें, क्या नहीं करें? कोई सहारा नजर नहीं आ रहा था।

कमलाबाई, श्री महावीर मुमुक्षा महिला आश्रम (महिलाओं हेतु एक अनाथालय) के साथ जुड़ गईं। वहाँ उन्होंने लिखना, पढ़ना सीखा। भारतीय संस्कृति एवं इतिहास को मन से पढ़ा। पढ़ते-पढ़ते, उनके अन्दर पिछड़े इलाकों में लड़कियों एवं महिलाओं को पढ़ाने एवं उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करने हेतु आन्तरिक इच्छा जाग्रत हुई।

तीस वर्ष की उम्र में उन्होंने आदर्श महिला विद्यालय शुरू किया, जिसमें शुरू में मात्र 6 लड़कियों ने प्रवेश लिया। आज उस विद्यालय में 2000 छात्राएँ हैं, जिनमें अधिकांश पिछड़े वर्ग एवं जनजाति समुदाय की लड़कियाँ हैं। वहाँ उन्होंने लड़कियों का एक हॉस्टल भी बनाया, जिसमें 650 लड़कियाँ रहती हैं।

लड़कियों एवं महिलाओं में शिक्षा के प्रसार को ही ब्रह्मचारिणी कमलाबाई ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। वर्ष 1999 में कमलाबाई को देवी अहिल्याबाई होल्कर स्त्री शक्ति पुरस्कार से नवाजा गया। ब्रह्मचारिणी कमलाबाई ने विषम परिस्थितियों से जूझते हुए केवल, स्वयं के जीवन को ही सार्थक नहीं बनाया, बल्कि हजारों पिछड़ी एवं जनजाति समुदाय की महिलाओं को भी शिक्षित कर, उनके जीवन में आशा का संचार किया।

सुधा चन्द्रन: दृढ़ संकल्प-शक्ति की मिसाल

सुधा चंद्रन का जन्म 21 सितम्बर 1964 को केरल राज्य में हुआ था. सुधा जी एक मध्यवर्गीय परिवार की रहने वाली थीं लेकिन फिर भी उनके माता-पिता ने सुधा जी को मुंबई से उच्च शिक्षा दिलाई।

बचपन से ही सुधा जी को डांस करने का शौक था इसलिए मात्र 3 वर्ष की उम्र में उन्होंने भारतीय शास्त्रीय नृत्य सीखना आरम्भ किया. वे अपनी स्कूल की पढ़ाई पूरी कर डांस सीखने जाया करती थीं।

5 साल की उम्र से लेकर 16 साल की उम्र तक उन्होंने 75 से अधिक स्टेज शो देकर भरतनाट्यम की उम्दा कलाकार के रूप में शोहरत हासिल कर ली थी. उन्हें अनेक राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके थे।

एक दिन जब वह अपने माता-पिता के साथ तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में स्थित एक मंदिर से वापस बस में सफ़र कर लौट रही थीं, तभी सामने से आ रहे ट्रक ने उनकी गाड़ी को जोर से टक्कर मारी. उस भयंकर दुर्घटना में बहुत से लोग घायल हो गए। घायल लोगों को अस्पताल ले जाया गया और सुधा जी को अस्पताल ले जाने के बाद पता चला कि उनके पैर की हड्डी टूट गयी है. डॉक्टर ने उनके पैर में पट्टी बाँधी।

कुछ क्षण बाद डॉक्टर ने कहा कि सुधा जी के दाहिने पैर में गैंग्रीन जो एक संक्रमण जैसे होता है, वो दुर्भाग्यवश उनके टूटे हुए पैर में हो गया है जिसे वक्त रहते कटा नहीं गया तो सुधा की जान को खतरा हो सकता है।

ये सुनते ही उनके माता-पिता ने डॉक्टर से सुधा जी का पैर काटने की अनुमति दे दी. नृत्य की शौकीन लड़की चल-फिर भी नहीं पाती थी। बिस्तर पर पड़े हुए अपनी किस्मत को कोसती रहती थी।

उन्हें ये लगने लगा था कि एक पैर के न रहने से उनका भविष्य पूरी तरह से अन्धकार में चला गया है. जो लड़की कभी एक मशहूर डांसर बनने का ख्वाब देखती थी कुछ ही पल में उसकी दुनिया ही पलट गयी थी, ऐसा लगा जैसे सब कुछ खत्म हो गया। सुधा की गंभीर अवस्था का बुरा असर उसके साथ-साथ उसके माँ-बाप पर भी पड़ रहा था। समाज के लोग सुधा और उसके माँ-बाप को दया और रहम की नज़र से देखते थे।

उनके माता-पिता दिन में बाहर निकलना पसंद नहीं करते थे और सब्जी लेने भी वो अक्सर रात को अँधेरे में जाया करते थे क्योंकि लोग सुधा जी की विकलांगता को लेकर अप्रिय सवाल पूछते थे। लोगों के इस व्यवहार से सुधा जी को बहुत बुरा लगता था। तभी सुधा जी ने प्रण लिया, उन्हें कुछ ऐसा कार्य करना है जिससे वो लोगों को दिखा सकें कि उनकी जिंदगी में कोई हादसा नहीं हुआ, वो जैसी पहले थीं आज भी बिल्कुल वैसी ही हैं। और ऐसा दर्शाने के लिए सुधा जी ने नृत्य को फिर से अपना लक्ष्य बना लिया।

उन्हें इसके जरिये कुछ ऐसा कर दिखाना था कि जिससे उनके माता-पिता को उन पर गर्व हो. अस्पताल में पड़े-पड़े एक दिन

अचानक सुधा जी की नजर India Today के अख़बार में छपी “चमत्कारपूर्ण पैर” (Miraculous foot) इस्तिहार पर पड़ी जिसमें डॉ. सेठी के “जयपुर फूट” की विस्तृत चर्चा थी।

डॉ. सेठी को जयपुर फूट के आविष्कार से Megsaysay Award से सम्मानित किया गया था. उस इस्तिहार को देखते ही सुधा जी ने डॉ. सेठी को एक पत्र लिखा कि वो उनसे मिलना चाहती हैं. डॉ. सेठी सुधा जी से मिलने के लिए तैयार हो गए। सुधा जी जब डॉक्टर से मिलीं मानो उन्हें एक उम्मीद की रोशनी नज़र आने लगी कि अब वो अपना सपना पूरा कर पायेंगी. उन्होंने बिना देरी किये डॉक्टर से पूछा— “क्या मैं फिर से चल पाऊँगी? क्या आपको लगता है कि मैं जयपुर फूट की वजह से फिर से नृत्य कर पाऊँगी?”

डॉ. सेठी ने जवाब दिया— “क्यों नहीं? ये सब तुम्हारी सोच पर निर्भर करता है, अगर तुम फिर से नृत्य करना चाहती हो तो तुम कर सकती हो,” डॉक्टर के इस शब्द का गहरा असर सुधा जी के जीवन पर पड़ा. सुधा का ऑपरेशन हुआ और उन्हें जयपुर फूट लगाया गया।

धीरे-धीरे सुधा जी का हौसला बढ़ता गया और उन्होंने दर्दनाक दुर्घटना को भूलकर फिर से अपने सपने की तरफ ध्यान दिया. अपने नकली पैर के साथ उन्होंने फिर से नृत्य की कला सीखी. वो रात-दिन नृत्य का अभ्यास करने लगी थीं। इस अभ्यास में उन्हें बहुत पीड़ा भी होती थी।

लेकिन दो साल की कड़ी मेहनत के बाद सुधा जी नृत्य में पूरी तरह से उत्कृष्ट हो चुकी थीं। उन्हें अपनी कला का प्रदर्शन करने का मौका फिर से मिला। जब उन्होंने स्टेज पर अपने कृत्रिम पैरों से प्रदर्शन दिखाया तो लोगों की प्रतिक्रिया

प्रेरणादायी थी। पूरे सभाघर में तालियों की गूँज बहुत देर तक गूँजती रही। धीरे-धीरे पूरे देश में उनके बारे में चर्चा होने लगी।

पत्र-पत्रिकाओं में सुधा की कहानी छपने लगी। तभी जाने-माने फिल्म निर्माता रामोजी राव की नज़र उनकी कहानी पर पड़ी। उन्होंने 1984 में सुधा की ज़िंदगी पर तेलुगु में “मयूरी” नाम की फिल्म बनाई जिसमें मुख्य पात्र की भूमिका भी सुधा ने ही निभाई।

इस फिल्म में सुधा जी ने अपने नृत्य से सबका दिल जीत लिया था। यह फिल्म काफी सफल रही। उनकी यह फिल्म “नाचे मयूरी” के नाम से हिंदी में भी बनाई गयी जिसे पूरी दुनिया में सराहा गया। इस फिल्म के लिए उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

उसके बाद से सुधा चंद्रन की ज़िंदगी बदल गयी और उसके बाद से उन्होंने बहुत सारी फिल्मों में काम किया और वर्तमान में काफी हिंदी serials में सक्रिय हैं। सुधा चंद्रन एक भारतीय अभिनेत्री हैं, जो मलयालम, तमिल, तेलुगु, हिंदी, मराठी, गुजराती और कन्नड़ फिल्म उद्योग में काम कर रही हैं।

इस तरह सुधा चंद्रन ने अपनी विकलांगता को अपनी कमजोरी न बनने दिया और एक सफल अभिनेत्री बनीं। सुधा चंद्रन की आत्मकथा से हम सबको प्रेरणा मिलती है कि कैसे एक भयानक दुर्घटना के बावजूद भी उन्होंने अड़चनों को अपने सपने के आड़े आने नहीं दिया और विकलांगता के बावजूद दृढ़-निश्चय के साथ उन्होंने अपनी मुसीबतों का सामना किया और अपनी इच्छा शक्ति के बल पर सफलता हासिल की।

हिमा दास : एक मजबूत इच्छा शक्ति

हिमा दास का जन्म 9 जनवरी 2000 को असम राज्य के नौगांव जिले के ढिंग में हुआ था। हिमा एक दलित परिवार से हैं। हिमा के पिताजी का नाम रंजित दास है। वह खेती का काम करते हैं। हिमा की माताजी का नाम जोमाली दास हैं। वह एक गृहणी हैं। उनके घर में कुल 16 सदस्य हैं। घर की आर्थिक स्थिति ऐसी थी कि बस अपने खाने-पीने की व्यवस्था हो जाती थी। परिवार में हिमा और उनके माता-पिता के अलावा 5 भाई और बहन हैं।

हिमा ने अपनी शुरुआती पढ़ाई ढिंग गाँव से ही की। खेलों में रुचि होने के कारण हिमा अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पाई।

हिमा दास का जीवन संघर्ष

नौगांव में अक्सर बाढ़ के हालात बन जाते हैं वह जगह बहुत अधिक विकसित नहीं है। जब हिमा गांव में रहती थीं तो बाढ़ की वजह से कई-कई दिन तक प्रैक्टिस नहीं कर पाती थीं क्योंकि जिस खेत या मैदान में वह दौड़ की तैयारी करती, बाढ़ में वह पानी से लबालब हो जाता।

जब वर्ष 2017 में हिमा राजधानी गुवाहाटी में एक कैम्प में हिस्सा लेने आई थीं तब उन पर निपुण दास की नज़र पड़ी। जिसके बाद निपुण ने ही हिमा को एथलीट के गुण सिखाये। निपुण उनके बारे में बताते हैं, "वह जनवरी का महीना था हिमा

एक स्थानीय कैम्प में हिस्सा लेने राजधानी गुवाहाटी आई थी, वह जिस तरह से ट्रैक पर दौड़ रही थी, मुझे लगा कि इस लड़की में आगे तक जाने की काबिलियत है।”

इसके बाद निपुण हिमा के गांव में उनके माता-पिता से मिलने गए और उनसे कहा कि वे हिमा को बेहतर कोचिंग के लिए गुवाहाटी भेज दें। हिमा के माता-पिता गुवाहाटी में उनके रहने का खर्च नहीं उठा सकते थे, लेकिन बेटी को आगे बढ़ते हुए भी देखना चाहते थे. इस मुश्किल स्थिति में निपुण ने ही एक रास्ता निकाला।

वे बताते हैं, “मैंने हिमा के माता-पिता से बातचीत की और उन्हें कहा कि हिमा के गुवाहाटी में रहने का खर्च मैं खुद उठाऊंगा, बस आप उसे बाहर आने की मंजूरी दें। इसके बाद वे हिमा को बाहर भेजने के लिए तैयार हो गए।”

हिमा दास का करियर

शुरुआत में हिमा को फुटबॉल खेलने का शौक था, वे अपने गांव या ज़िले के आस पास छोटे-मोटे फुटबॉल मैच खेलकर 100-200 रुपये जीत लेती थी। फुटबॉल में खूब दौड़ना पड़ता था, इसी वजह से हिमा का स्टैमिना अच्छा बनता रहा, जिस वजह से वह ट्रैक पर भी बेहतर करने में कामयाब रहीं। कोच निपुण दास ने हिमा को फुटबॉल से एथलेटिक्स में आने के लिए तैयार किया तो शुरुआत में 200 मीटर की तैयारी करवाई, लेकिन बाद में उन्हें एहसास हुआ कि वे 400 मीटर में अधिक कामयाब रहेंगी।

फिनलैंड विश्व अंडर 20 चैंपियनशिप

रेस के शुरुआती 35 सेकेंड तक हिमा शीर्ष तीन में भी नहीं थीं, शायद ही किसी ने उन्हें फिनलैंड के ट्रैक पर लाइव दौड़ते हुए

देखा होगा। लेकिन एक शख्स थे जिन्हें हिमा की इस रेस का बेसब्री से इंतज़ार था। वे थे उनके कोच निपुण दास। हिमा के यूं अंतिम वक़्त में रफ़्तार पकड़ने पर निपुण दास कहते हैं, “रेस में जब आखिरी 100 मीटर तक हिमा चौथे स्थान पर थी तो मुझे यकीन हो गया था कि वह इस बार गोल्ड ले आएगी, मैं उसकी तकनीक को जानता हूँ वह शुरुआत में थोड़ी धीमी रहती है और अपनी पूरी ऊर्जा अंतिम 100 मीटर में लगा देती है। यही उसकी खासियत है।”

निपुण कहते हैं, “हिमा को ट्रैक के कर्व (मोड़) पर थोड़ी समस्या होती है, यह बहुत हल्की सी दिक्कत है। यही वजह है कि शुरुआत में वह हमेशा पीछे ही रहती है लेकिन जब ट्रैक सीधा हो जाता है तो वह तेज़ी से रिकवर करते हुए सबसे आगे निकल जाती है।”

18वें एशियाई खेल

18 वर्षीय हिमा ने आईएएफ विश्व अंडर-20 चैंपियनशिप में स्वर्ण जीतकर इतिहास रचा था। पूरे देश को एशियाई खेलों में भी उनसे स्वर्ण पदक की उम्मीद थी और वह इसकी दावेदार भी थीं। लेकिन सेमीफाइनल में उनके फाउल होने के कारण भारत के पदक जीतने की उम्मीदों को झटका लगा और हिमा को इस प्रतिस्पर्धा में रजत पदक के साथ संतोष करना पड़ा। फाइनल रेस में उन्होंने 50.79 सेकेंड का समय निकाला। हिमा ने शानदार दौड़ लगाई। आज हिमा दास को दुनिया में हर इन्सान पहचानता है। हिमा दास ने दिखा दिया नामुमकिन कुछ भी नहीं है।

मिताली राज

महिला क्रिकेट की महानतम खिलाड़ी

मिताली राज का जन्म 3 दिसंबर 1982 को राजस्थान के जोधपुर शहर में तमिल परिवार में हुआ. इनके पिता दोराई राज हैं जोकि भारतीय वायुसेना अधिकारी हैं और माता लीला राज हैं जोकि गृहणी हैं। इनका परिवार आन्ध्र प्रदेश में रहता है।

मिताली राज ने 10 साल की उम्र से क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया था और उन्हें भारतीय क्रिकेट टीम के लिए चुना गया। सन 1999 में मिल्टन केन्स में आयरलैंड के खिलाफ एकदिवसीय मैच में उनकी शुरुआत हुई. वे हैदराबाद तेलंगाना में रहती थीं। उन्होंने अपने बड़े भाई के साथ अपने सेंट जॉस स्कूल हैदराबाद में ही क्रिकेट की कोचिंग शुरू कर दी थी। वहाँ वे अपनी बड़े भाई के साथ खेलती थीं। उन्होंने सिकन्दराबाद के कीज गर्ल्स हाईस्कूल में नेट में क्रिकेट का अभ्यास किया, वहाँ वे अक्सर पुरुषों के साथ खेलती थीं. इसके अलावा उन्होंने 8 साल तक शास्त्रीय नृत्य का भी अभ्यास किया, किन्तु अपने क्रिकेट करियर को आगे बढ़ाने के चलते उन्होंने नृत्य करना छोड़ दिया।

मिताली राज का करियर

मिताली राज ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम के लिए टेस्ट और एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट दोनों खेले हैं. सन 1997 में महिला क्रिकेट विश्वकप में उन्हें केवल 14 वर्ष की उम्र में शामिल किया गया था, लेकिन ये अंतिम स्क्वाड में शामिल नहीं

हो सकीं। इसके बाद सन 1999 में मिल्टन केन्स में आयरलैंड के खिलाफ एक दिवसीय मैच में इन्होंने नाबाद 114 रन बनाए। उन्होंने सन 2001-02 के सत्र में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपना पहला टेस्ट मैच खेला। 17 अगस्त 2002 में 19 वर्ष की उम्र में इन्होंने अपने तीसरे टेस्ट में कैरण रोल्टन के विश्व के सबसे अधिक टेस्ट स्कोर 209 का रिकॉर्ड तोड़ दिया और इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे और आखिरी टेस्ट में टांटन के काउंटी मैदान में 214 का नया उच्च स्कोर खड़ा कर दिया। मिताली को सन 2002 में क्रिकइन्फो महिला विश्व कप में टाइफाइड हो गया जिससे भारत की प्रगति में गंभीरता आने लगी। हालाँकि सन 2005 में मिताली ने टीम को दक्षिण अफ्रीका में अपने पहले विश्व कप में फाइनल तक पहुँचाया, जहाँ वे ऑस्ट्रेलिया टीम से मिलीं जोकि बहुत मजबूत टीम साबित हुई।

अगस्त 2006 में, उन्होंने इंग्लैंड में अपनी पहली टेस्ट और सीरीज की जीत के लिए टीम का नेतृत्व किया, और एशिया कप जीतने वाले वर्ष में एक भी गेम छोड़े बिना 12 महीने में दूसरी बार जीत हासिल की। मिताली राज पार्ट टाइम लेग ब्रेक गेंदबाज भी हैं। वे वर्तमान में 703 रेटिंग्स के साथ बल्लेबाज तालिका में सबसे ऊपर हैं। तेज गेंदबाजी में क्रीज और स्कोर करने की क्षमता उन्हें खतरनाक क्रिकेटर बनाती हैं। बल्ले के साथ अपनी क्षमता के अतिरिक्त वे गेंदबाजी में भी माहिर हैं। सन 2013 के विश्वकप में मिताली राज ने अन्य महिलाओं के बीच ओडीआई चार्ट में नंबर 1 क्रिकेटर के रूप में अभिनय किया। इन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 1 शतक और 4 अर्धशतक के साथ ओडीआईस में 5 शतक और 40 अर्धशतक और टी-20 में 10 अर्धशतक लगाये।

फरवरी 2017 में वे डब्ल्यूओडीआईस में 5,500 रन बनाने वाली दूसरी खिलाड़ी बन गईं. मिताली ने एकदिवसीय एवं टी-20 के

अधिकतर मैचों में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान के रूप में टीम का नेतृत्व किया। जुलाई 2017 में मिताली डब्ल्यूओडीआईस में 6,000 रन बनाने वाली पहली महिला खिलाड़ी बनीं।

मिताली राज को सन 2003 में भारत सरकार की तरफ से खेल में उनकी उपलब्धियों के चलते "अर्जुन अवार्ड" से नवाजा गया। मिताली राज को सन 2015 में भारत के राष्ट्रीय पुरस्कार में से चौथे सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार "पद्मश्री" से नवाजा गया।

अमिताभ बच्चन : सदी के महानायक

इस सदी के महानायक, बॉलीवुड के सबसे लोकप्रिय अभिनेता, भारतीय सिनेमा जगत में जिनका कोई सानी नहीं, ऐसे सफलतम व्यक्तित्व का जीवन भी संघर्षों से भरा रहा है। अमिताभ बच्चन ने आज जो मुकाम हासिल किया है, वह न जाने कितने उतार-चढ़ाव, सफलता-असफलता के दौर से गुजरने के बाद हासिल किया है। अमिताभ बच्चन ने अपना कैरियर कोलकाता की एक शिपिंग कम्पनी में नौकरी करने से शुरू किया था। उन्होंने एक बार एक रेडियो सेवा में बतौर समाचार वाचक की नौकरी चाही थी, लेकिन उनकी आवाज को उपयुक्त नहीं माना गया।

वे संघर्ष के दिनों में 7 वर्ष तक प्रसिद्ध हास्य अभिनेता महमूद साहब के निवास पर रहे। उन्होंने राजनीति में भी अपना दांव आजमाया, सांसद भी चुने गए, लेकिन राजनीति उन्हें रास नहीं आई और बीच में ही त्यागपत्र देकर पुनः सिनेमा जगत में भाग्य आजमाने लगे। बोफोर्स विवाद में भी इनका नाम घसीटा गया, जिसके लिए उन्हें अदालत जाना पड़ा, लेकिन अन्ततः उन्हें निर्दोष माना गया।

अमिताभ बच्चन ने वर्ष 1996 में ABCL (Amitabh Bachchan Corporation Ltd.) की स्थापना की। एबीसीएल ने कुछ फिल्में बनाई, लेकिन वे फ्लॉप रहीं। एबीसीएल ने वर्ष 1997 में बैंगलोर में आयोजित 1996 की मिस वर्ल्ड सौन्दर्य प्रतियोगिता (1996 Miss World Beauty Pageant) का आयोजन किया, लेकिन

खराब प्रबन्धन के कारण इसे करोड़ों रुपये का नुकसान उठाना पड़ा। वर्ष 1997 में यह वित्तीय एवं क्रियाशील दोनों तरीकों से ध्वस्त हो गई। कम्पनी प्रशासन के हाथ में चली गई और बाद में इसे भारतीय उद्योग मण्डल द्वारा असफल करार दे दिया गया।

इसके बाद 'कौन बनेगा करोड़पति' टीवी प्रोग्राम का एंकर बनकर अमिताभ बच्चन ने पुनः अपनी साख जमाई। इस कार्यक्रम की सफलता से उन्हें एवं उनके परिवार को नैतिक एवं आर्थिक सम्बल मिला और पुनः सफलता के द्वार खुल गए। हर विषम परिस्थितियों को साहसपूर्वक और धैर्यपूर्वक झेलते हुए अमिताभ बच्चन ने कभी अपना आत्मविश्वास नहीं खोया। बच्चन लगातार संघर्षरत रहते हुए आज सफलता की उन ऊँचाइयों पर पहुँच गए हैं, जहाँ पहुँचने की कल्पना शायद उन्होंने स्वयं भी नहीं की होगी।

निक वुजिसिक : बिना दोनों हाथ व पैरों के

4 दिसम्बर, 1982 को निक का जन्म ऑस्ट्रेलिया के मेलबॉर्न में हुआ। जन्म से ही निक के कंधों से दोनों हाथ नहीं थे एवं पैरों के नाम पर एक छोटा-सा बायाँ पैर, जिस पर मात्र दो अँगुलियाँ थीं। आप कल्पना कर सकते हैं, कितनी कठिनाइयों एवं पीड़ा का सामना किया होगा निक ने अपने जीवन में। धीरे-धीरे उसके कई दोस्त बने। बच्चों ने 'निक' को दोस्त स्वीकार करना शुरू कर दिया। निक ने अपने पैर की दो अँगुलियों से लिखना भी शुरू कर दिया। अपनी उन्हीं दो अँगुलियों से लिखना सीखा, कम्प्यूटर चलाना सीखा, फोन पर बात करना, जवाब देना सीखा। धीरे-धीरे वह टेनिस बॉल भी फेंकने लगे। पानी का गिलास स्वयं उठाना, दाढ़ी बनाना आदि काम वह स्वयं करने लगे। 21 वर्ष की उम्र में कॉलेज से स्नातक पास किया तथा अकाउन्टिंग एवं फाइनेन्सियल प्लानिंग में डबल डिग्री प्राप्त की।

आज वह लोगों को प्रेरणादायक उपदेश देते हैं, उन्हें लोग प्रोत्साहक एवं प्रेरक वक्ता (Inspiring and motivational Preacher) की तरह जानते हैं। 'निक प्रेरकजनक व्यक्तित्व के धनी हैं। वह 'Life Without limb' के निदेशक हैं। वे हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा के ऐसे ऊर्जावान स्रोत हैं, जो आपको रोमांच से सराबोर कर दे।

एक निर्जीव व्यक्ति में जान फूंक सकने वाले निक वास्तव में हमारे सलाम के काबिल हैं। आत्मविश्वास, आत्मबल से सराबोर ऐसे योद्धा को हमारा बार-बार नमन।

जॉर्ज वाशिंगटन : समय का सम्मान

अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन समय के बड़े पाबन्द थे। एक बार उन्होंने कुछ विशिष्ट अतिथियों को तीन बजे दोपहर के भोजन के लिए आमन्त्रित किया। साढ़े तीन बजे उन्हें सैनिक कमाण्डरों की आवश्यक बैठक में भाग लेना था। ठीक तीन बजे भोजन तैयार था। भोजन टेबल पर लगा दिया गया, लेकिन राष्ट्रपति महोदय के अतिथि नहीं आए। प्रतीक्षा करने की अपेक्षा राष्ट्रपति ने ठीक तीन बजे अकेले भोजन करना आरम्भ किया। आधा भोजन समाप्त होने पर, मेहमान आ पहुँचे।

उन्हें दुःख भी हुआ एवं अप्रसन्नता भी हुई, लेकिन वे भोजन में शामिल हो गए। राष्ट्रपति महोदय ने समय पर अपना भोजन समाप्त किया एवं उनसे विदा लेकर बैठक में भाग लेने चले गए। यह घटना समय प्रबन्धन के महत्त्व को दर्शाती है।

यह घटना आपको अतिरंजित लग सकती है, लेकिन समय की पाबन्दी, समय के महत्त्व को परिलक्षित करने वाली यह घटना, एक व्यक्ति की दृढ़ता को व्यक्त करती है।

महानायक सुभाषचन्द्र बोस

एक निडर राजनेता

सुभाषचन्द्र बोस जब बच्चे थे, तो एक दिन माँ के साथ लेटे हुए बिस्तर से उठकर जमीन पर जाकर सो गए। माँ के पूछने पर उन्होंने बताया कि आज अध्यापक जी ने बताया है कि हमारे ऋषि—मुनि जमीन पर सोते एवं कठोर जीवन जीते थे। मैं भी ऋषि बनूंगा। पिताजी ने भी उनकी बात सुनी, तो उन्होंने कहा “मात्र जमीन पर सोना ही पर्याप्त नहीं है, ज्ञान संचय तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय सेवा में संलग्न होना भी आवश्यक है। अभी तुम छोटे हो, माँ के पास जाकर सो जाओ। बड़े होने पर तीनों काम करना।” सुभाष ने पिता की सलाह की गाँठ बाँध ली।

आईसीएस की परीक्षा पास करने के बाद वह खूब ठाठ—बाट का जीवन व्यतीत कर सकते थे, लेकिन उन्होंने कहा, “मैं अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित कर चुका हूँ। मातृभूमि की सेवा करूंगा।”

सुभाष बोस का बलिदान, इस देश के स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों में पहले नम्बर पर गिना जाता है। ऐसे राष्ट्रभक्त को शत्—शत् नमन।

डॉ. भीमराव अंबेडकर

एक जिद्दी महानायक

भारत को संविधान देने वाले महान नेता डॉ. भीमराव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के एक छोटे से गांव में हुआ था। डा. भीमराव अंबेडकर के पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल और माता का भीमाबाई था। अपने माता-पिता की चौदहवीं संतान के रूप में जन्में डॉ. भीमराव अंबेडकर जन्मजात प्रतिभा संपन्न थे। भीमराव अंबेडकर का जन्म महार जाति में हुआ था जिसे लोग अछूत और बेहद निचला वर्ग मानते थे।

बचपन में भीमराव अंबेडकर के परिवार के साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था। अंबेडकर के पूर्वज लंबे समय तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में कार्य करते थे और उनके पिता ब्रिटिश भारतीय सेना की महू छावनी में सेवा में थे। भीमराव के पिता हमेशा ही अपने बच्चों की शिक्षा पर जोर देते थे।

आरम्भिक जीवन

डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर जी का जन्म ब्रिटिशों द्वारा केन्द्रीय प्रांत (अब मध्य प्रदेश में) में स्थापित नगर व सैन्य छावनी महू में हुआ था। वे रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई की 14वीं व अंतिम संतान थे। उनका परिवार मराठी था और वो आंबडवे गांव जो आधुनिक महाराष्ट्र के रत्नागिरी

जिले में है, से संबंधित था। वे हिंदू महार जाति से संबंध रखते थे, जो अछूत कहे जाते थे और उनके साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था।

उनके पिता, भारतीय सेना की महु छावनी में सेवा में थे और यहां काम करते हुये वो सूबेदार के पद तक पहुँचे थे। उन्होंने मराठी और अंग्रेजी में औपचारिक शिक्षा की डिग्री प्राप्त की थी। उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ने और कड़ी मेहनत करने के लिये हमेशा प्रोत्साहित किया।

रामजी अंबेडकर ने सन 1898 में पुनर्विवाह कर लिया और परिवार के साथ मुंबई (तब बंबई) चले आये। यहाँ डॉ. भीमराव अंबेडकर एलिफंस्टोन रोड पर स्थित गवर्नमेंट हाई स्कूल के पहले अछूत छात्र बने। पढ़ाई में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के बावजूद, छात्र भीमराव अंबेडकर लगातार अपने विरुद्ध हो रहे इस अलगाव और भेदभाव से व्यथित रहे। सन 1907 में मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद भीमराव अंबेडकर ने मुंबई विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और इस तरह वो भारतीय महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले पहले अस्पृश्य बन गये।

मैट्रिक परीक्षा पास करने पर उनकी इस बड़ी सफलता से उनके पूरे समाज में एक खुशी की लहर दौड़ गयी, क्योंकि तब के समय में मैट्रिक परीक्षा पास होना बहुत बड़ी बात थी और अछूत का मैट्रिक परीक्षा पास होना तो आश्चर्यजनक एवं बहुत महत्वपूर्ण बड़ी बात थी। इसलिए मैट्रिक परीक्षा पास होने पर उनका एक सार्वजनिक समारोह में सम्मान किया गया। इसी समारोह में उनके एक शिक्षक कृष्णाजी अर्जुन केलूसकर ने उन्हें अपनी लिखी हुई पुस्तक 'गौतम बुद्ध की जीवनी' भेंट की, श्री केलूसकर, एक मराठा जाति के विद्वान थे। इस बुद्ध चरित्र को

पढ़कर पहली बार भीमराव बुद्ध की शिक्षाओं से ज्ञान होकर बुद्ध से बहुत प्रभावी हुए।

राजनीतिक जीवन

31 जनवरी 1920 को एक साप्ताहिक अख़बार “मूकनायक” शुरू किया। 1924 में बाबासाहेब ने दलितों को समाज में अन्य वर्गों के बराबर स्थान दिलाने के लिए बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की। 1932 को गांधी जी और डॉ. अंबेडकर के बीच एक संधि हुई जो ‘पूना संधि’ के नाम से जानी जाती है। अगस्त 1936 में “स्वतंत्र लेबर पार्टी” की स्थापना की। 1937 में डॉ. अंबेडकर ने कोंकण क्षेत्र में पट्टेदारी को ख़त्म करने के लिए विधेयक पास करवाया। भारत के आज़ाद होने पर डॉ. अंबेडकर को संविधान की रचना का काम सौंपा गया।

फरवरी 1948 को अंबेडकर ने संविधान का प्रारूप प्रस्तुत किया और जिसे 26 जनवरी 1949 को लागू किया गया। 1951 में डॉ. अंबेडकर ने कानून मंत्री के पद से त्यागपत्र दे दिया। हिन्दी सहित सभी क्षेत्रीय भाषाओं में डॉ. बी.आर. अंबेडकर के कामों के व्याख्यान को उपलब्ध करा रहे हैं। डॉ. अंबेडकर के जीवन के मिशन के साथ ही विभिन्न सम्मेलनों, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों, व्याख्यान, सेमिनार, संगोष्ठी और मेलों का आयोजन। समाज के कमजोर वर्ग के लिए डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार और सामाजिक परिवर्तन के लिए डॉ. अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार देना।

हर साल डॉ. अंबेडकर की 14 अप्रैल को जन्मोत्सव और 6 दिसंबर पर पुण्यतिथि का आयोजन। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के मेधावी छात्रों के बीच में पुरस्कार वितरित करने के लिए डॉ. अंबेडकर नेशनल मेरिट अवार्ड योजनाएं शुरू करना। हिन्दी भाषा में सामाजिक न्याय संदेश की

एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन। अनुसूचित जाति से संबंधित हिंसा के पीड़ितों के लिए डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय राहत देना।

डॉ. अंबेडकर जी ने अस्पृश्यता, अशिक्षा, अन्धविश्वास के साथ-साथ सामाजिक, राजनैतिक एवम आर्थिक विषमता को सबसे बड़ी बुराई रूप में प्रस्तुत किया और एक नैतिक एवम् न्यायपूर्ण आदर्श समाज के निर्माण के लिये उन्होंने स्वाधीनता, समानता और भ्रातृत्व के सूत्रों को आवश्यक बताया और उनका कड़े शब्दों में समर्थन किया।

धीरूभाई अम्बानी

300 से 75000 करोड़ का सफर

23 दिसम्बर, 1932 को धीरूभाई का जन्म मोढ़ वैश्व परिवार में गुजरात में हुआ था। धीरूभाई के पिता हीराचन्द गोवर्धनदास अम्बानी एक अध्यापक थे। जब धीरूभाई 16 वर्ष के थे, तो वे यमन (Yemen) चले गए, जहाँ उन्होंने ए. बीस एण्ड कम्पनी (A-Besse & Co) में 300 रु प्रतिमाह पर काम किया। कुछ दिनों बाद इस कम्पनी के शैल कम्पनी की डिस्ट्रीब्यूटर्स बन जाने से, धीरूभाई इस कम्पनी के पेट्रोल पम्प का कार्य देखने लगे।

वर्ष 1958 में वे भारत वापस लौट आए और उन्होंने एक टेक्सटाइल ट्रेडिंग कम्पनी की स्थापना की। धीरे-धीरे पूर्ण निष्ठा एवं लगन से आगे बढ़ते हुए, धीरूभाई ने अपने व्यवसाय को इतना बढ़ाया कि लोग दाँतों तले अँगुली दबाने को बाध्य हो गए। लाइन्स इण्डस्ट्रीज के नाम से विश्व में विख्यात उनके टेक्सटाइल्स इण्डस्ट्रीज का टर्नओवर महानायक धीरूभाई अम्बानी के जीवन के अन्त समय में लगभग 75000 करोड़ था। धीरूभाई की प्रगति यात्रा बहुत उतार-चढ़ाव भरी रही और उन्हें अपने जीवन में हर सफलता के पथिक की तरह कड़े संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा। धीरूभाई ने कभी हार नहीं मानी एवं लगातार संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते रहे। आज धीरूभाई अम्बानी की सफलता की यात्रा को लोग एक ऐतिहासिक संघर्ष की गाथा के रूप में जानते हैं।

आर. माधवन : बेमिसाल शख्सियत

“भारत को कम-से-कम 10 लाख माधवन की आवश्यकता है।”

-एपीजे अब्दुल कलाम (पूर्व राष्ट्रपति)

ONGC जैसी नवरत्न कम्पनी की नौकरी छोड़कर खेती के व्यवसाय में उतरने वाले आर. माधवन एक बेमिसाल शख्सियत हैं। उनकी सफलता की कहानी कुछ इस प्रकार है—

माधवन जी को बचपन से ही पेड़-पौधे लगाने, सब्जियाँ उगाने में बेहद रुचि थी। किशोरावस्था में ही उन्होंने कई बार अपनी माँ को खुद की उगाई हुई सब्जियाँ लाकर दी थीं और माँ की शाबाशी पाकर उनका उत्साह बढ़ जाता था। बचपन से उनका सपना ‘किसान’ बनने का ही था, लेकिन जैसा भारत के लगभग प्रत्येक मध्यवर्गीय परिवार में होता है कि ‘खेती करोगे? कमाओगे क्या? और भविष्य क्या होगा?’ जैसा सवाल प्रत्येक युवा से पूछा जाता है, इनसे भी पूछा गया। परिवार के दबाव के कारण किसान बनने का कार्यक्रम माधवन को उस समय छोड़ना पड़ा।

माधवन जी ने आईआईटी—जेईई परीक्षा दी और आईआईटी चेन्नई से मैकेनिकल इंजीनियर की डिग्री प्राप्त की। जाहिर है कि एक उम्दा नौकरी, एक उम्दा कैरियर और एक चमकदार भविष्य उनके आगे खड़ा था, लेकिन कहते हैं न कि “बचपन का प्यार एक ऐसी शै है, जो आसानी से नहीं भूलती।”

इसके अतिरिक्त, आईआईटी करने के दौरान ‘किसानी’ का यह शौक उनके लिए “आजीविका के साथ समाजसेवा” का रूप ले

चुका था। ONGC में काम करते हुए भी उन्होंने अपने इस शौक को पूरा करने की जुगत लगा ही ली।

समुद्र के भीतर तेल निकालने के 'रिंग' (Oil Rig) पर काम करने वालों को लगातार 14 दिन काम करने के बाद अगले 14 दिनों का सवैतनिक अवकाश दिया जाता है। माधवन ने यह काम लगातार नौ साल तक किया। 14 दिन तक मैकेनिकल इंजीनियरिंग का काम और अगले 14 दिन, खेती-किसानी के नए-नए प्रयोग एवं अनुभव।

माधवन के शब्दों में जब मैंने पिता से कहा कि इतने सालों की नौकरी के बाद अब मैं खेती करना चाहूँगा, तो उस वक्त भी उन्होंने मुझे मूर्ख ही समझा था। चार साल की नौकरी में मैंने इतना पैसा बचा लिया था कि चेन्नई के निकट चेंगलपट्टू गाँव में 6 एकड़ जमीन खरीद सकें। वर्ष 1989 में गाँव में पैंट-शर्ट पहनकर खेती करने वाला मैं पहला व्यक्ति था और लोग मुझे आश्चर्य से देखते थे।

6 एकड़ में उनकी सबसे पहली फसल मात्र 2 टन की ही थी और इससे वे बेहद निराश हुए, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। वर्ष 1996 में उनके जीवन का 'टर्निंग प्वाइंट' साबित हुई उनकी इजराइल यात्रा। उन्होंने सुन रखा था कि 'टपक-सिंचाई' (Drip Irrigation) और जल-प्रबंधन के मामले में इजराइल की तकनीक सर्वोत्तम है। इजराइल जाकर उन्होंने देखा कि भारत में एक एकड़ में एक टन उगने वाली मक्का को इजराइली एक एकड़ में सात टन कैसे उगाते हैं?

जितनी जमीन पर भारत में 6 टन टमाटर उगाया जाता है, उतनी ही जमीन पर इजराइली लोग 200 टन टमाटर का उत्पादन कर लेते हैं, उन्होंने इजराइल में 15 दिन रहकर सारी तकनीकें सीखीं।

इजराइल में उन्हें मिले एक और हम वतन, डॉ. लक्ष्मणन, जो एक तरह से उनके 'किसानी-गुरु' माने जा सकते हैं। कैलिफोर्निया में रहने वाले डॉ. लक्ष्मणन पिछले 35 सालों से अमेरिका में खेती कर रहे हैं और लगभग 60,000 एकड़ जमीन के मालिक हैं। उन्होंने माधवन की ज़िद, तपस्या और संघर्ष को देखकर उन्हें लगातार 'गाइडेन्स' दिया। उनसे मिलकर माधवन को लगा कि पैसे के लिए काम करते हुए, यदि मन की खुशी भी मिले, तो काम का आनन्द दोगुना हो जाता है।

लगभग 8 साल के सतत् संघर्ष, घाटे और निराशा के बाद सन् 1997 में उन्हें पहली बार खेती में प्रॉफिट हुआ। माधवन बताते हैं "इतने संघर्ष के बाद भी मैंने हार नहीं मानी। मेरा मानना था कि यह एक सीखने की प्रक्रिया है और इसमें मैं गिरूंगा और फिर उठूंगा, भले ही कोई मुझे सहारा दे या न दे। मुझे स्वयं ही लड़ना है और जीतकर दिखाना है।"

माधवन के जीवन का एक और स्वर्णिम क्षण तब आया, जब पूर्व राष्ट्रपति से तय मिनट की मुलाकात दो घण्टे में बदल गई और अन्ततः कलाम साहब के मुँह से निकला कि "भारत को कम-से-कम दस लाख माधवन की आवश्यकता है।"

स्वभाव से बेहद विनम्र श्री माधवन कहते हैं कि "यदि मैं किसी उद्यमशील युवा को प्रेरणा दे सकूँ, तो यह मेरे लिए खुशी की बात होगी।"

एन.आर. नारायणमूर्ति

वर्ष 1946 में जन्मे नारायणमूर्ति के पिता एक स्कूल अध्यापक थे। शुरू से ही मेधावी छात्र रहे नारायणमूर्ति ने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की डिग्री मैसूर विश्वविद्यालय से प्राप्त की एवं बाद में IIT खड़गपुर से कम्प्यूटर साइन्स की पढ़ाई पूरी की।

वर्ष 1981 में अपने छह अन्य साथियों के साथ, उन्होंने मात्र 50 हजार रु. की पूँजी से अपना व्यवसाय शुरू किया। तब से वर्ष 1991 तक का, दस वर्ष का समय काफी मेहनत एवं कठिनाइयों में बीता। नारायणमूर्ति अपनी पत्नी के साथ एक कमरे के मकान में रहते थे। वर्ष 1991 में उदारीकरण की शुरुआत के साथ उनकी कम्पनी इंफोसिस (Infosys) के दिन बदल गए।

Infosys प्रथम भारतीय कम्पनी है, जिसके शेयर NASDAQ में लिस्ट हुए। आज Infosys दुनिया की सफलतम कम्पनियों में गिनी जाती है। नारायण मूर्ति सरलता एवं सादगी के प्रतीक हैं। नारायणमूर्ति का सारा परिवार आज भी दिखावटी खर्चे का विरोधी है। नारायणमूर्ति के बच्चों को भी स्वयं के द्वारा किए गए व्यय का हिसाब रखना आवश्यक है।

वर्ष में करोड़ों रुपयों का दान करने वाली कंपनी Infosys के कर्ता-धर्ता, यह परिवार वास्तव में सादगी, सरलता, कड़ी मेहनत से प्राप्त सफलता की ज्वलंत मिसाल है।

अरुणिमा सिन्हा

कभी न हार मानने वाली शख्सियत

11 अप्रैल, 2011! राष्ट्रीय स्तर की वालीबॉल खिलाड़ी अरुणिमा सिन्हा, पद्मावती एक्सप्रेस में लखनऊ से दिल्ली जा रही थीं, बीच रास्ते में कुछ लुटेरों ने सोने की चेन छीनने का प्रयास किया, जिसमें कामयाब न होने पर उन्होंने अरुणिमा को ट्रेन से नीचे फेंक दिया।

पास के ट्रैक पर आ रही दूसरी ट्रेन उनके बाएँ पैर के ऊपर से निकल गयी जिससे उनका पूरा शरीर खून से लथपथ हो गया। वे अपना बायाँ पैर खो चुकी थीं और उनके दाएँ पैर में लोहे की छड़ें डाली गयी थीं। उनका चार महीने तक दिल्ली के आल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज (AIIMS) में इलाज चला। इस हादसे ने उन्हें लोगों की नज़रों में असहाय बना दिया था और वे खुद को असहाय नहीं देखना चाहती थीं।

अरुणिमा की कहानी

क्रिकेटर युवराज सिंह से प्रेरित होकर उन्होंने कुछ ऐसा करने की सोची ताकि वह फिर से आत्मविश्वास भरी सामान्य जिंदगी जी सकें। अब उनके कृत्रिम पैर लगाया जा चुका था और अब उनके पास एक लक्ष्य था। वह लक्ष्य था दुनिया कि सबसे ऊँची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट को फतह करना। अब तक कोई विकलांग ऐसा नहीं कर पाया था। एम्स से छुट्टी मिलते ही वे भारत की एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला पर्वतारोही

“बछेन्द्री पॉल” से मिलने चली गई। अरुणिमा ने पॉल की निगरानी में ट्रेनिंग शुरू की। कई मुसीबतें आईं लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और धीरे-धीरे पर्वतारोहण की ट्रेनिंग पूरी की।

प्रशिक्षण पूरा होने के बाद उन्होंने एवरेस्ट की चढ़ाई शुरू की। 52 दिनों की कठिन चढ़ाई के बाद आखिरकार उन्होंने 21 मई 2013 को एवरेस्ट फतह कर ली। एवरेस्ट फतह करने के साथ ही वे विश्व की पहली विकलांग महिला पर्वतारोही बन गईं। एवरेस्ट फतह करने के बाद भी वे रुकी नहीं। उन्होंने विश्व के सातों महाद्वीपों की सबसे ऊँची पर्वत चोटियों को फतह करने का लक्ष्य रखा। जिसमें से अब तक वे कई पर्वत चोटियों पर तिरंगा फहरा चुकी हैं और वे अपने इस लक्ष्य पर लगातार आगे बढ़ रही हैं।

वे अपने इन महान प्रयासों के साथ-साथ विकलांग बच्चों के लिए “शहीद चंद्रशेखर आजाद विकलांग खेल अकादमी” भी चलाती हैं। एक भयानक हादसे ने अरुणिमा की जिंदगी बदल दी। वे चाहती तो हार मानकर असहाय की जिंदगी जी सकती थीं लेकिन उन्हें असहाय रहना मंजूर नहीं था। उनके हौसले और प्रयासों ने उन्हें फिर से एक नई जिंदगी दे दी।

अरुणिमा जैसे लोग भारत की शान हैं और यही वो लोग हैं, जो नए भारत का निर्माण करने में एक नींव का काम कर रहे हैं। युवराज सिंह से प्रेरित होकर अरुणिमा ने अपनी जिंदगी बदल दी और अब अरुणिमा की कहानी हजारों लोगों की जिंदगी बदल रही है। अरुणिमा की कहानी निराशा के अंधकार में प्रकाश की एक किरण के सामान है जो सम्पूर्ण अन्धकार को प्रकाश में बदल देती है।

कारपेंटर राजू : विकिपीडिया के जनक

जोधपुर के राजू जांगिड़, वर्ष 2011 में आठवीं कक्षा के छात्र थे। एक दिन वह इंटरनेट पर बॉलीवुड अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती के बारे में जानकारी खोज रहे थे। उनकी तलाश उन्हें अभिनेता के विकिपीडिया (Wikipedia) पेज पर ले आई। Wikipedia जिसे दुनिया का सबसे बड़ा मुक्त विश्वकोश भी माना जाता है। इसके बाद उन्होंने नोटिस किया कि वह जो कुछ भी इंटरनेट पर ढूंढते हैं, तकरीबन हर खोज के लिए उन्हें एक Wikipedia पेज देखने को मिलता है।

उन्होंने बताया, “साइट पर मेरे द्वारा खोजे गए हर विषय के बारे में जानकारी थी। इस तरह जानकारियां अर्जित करने में मेरी रुचि बढ़ती गई, और मैं उन्हें खोजने के क्रम में वेबसाइट ब्राउज़ करता रहा।”

अगले कुछ महीनों में, राजू ने Wikipedia के बारे में समझा तथा पेज बनाने वालों, योगदानकर्ताओं, संपादकों और इस संगठन के बारे में अधिक जानकारी एकत्रित की। अपनी कमजोर वित्तीय स्थिति के कारण, ठाडिया गाँव के इस युवा के पास स्मार्टफोन नहीं था। वह अपने सभी शोधों के लिए एक ‘कीपैड हैंडसेट’ का इस्तेमाल करते थे।

वह बताते हैं, “वेबसाइट पर मौजूद सदस्यों के बीच चर्चा होती थी तथा मैं अपने हर प्रश्न का उत्तर पाने के लिए उन सदस्यों से सम्पर्क करने लगा। मुझे पता चला कि, यह प्लेटफॉर्म अपने

योगदानकर्ताओं को पेमेंट नहीं देता है। इसके अतिरिक्त, कोई भी इस पेज पर कंटेंट को 'लिख' या 'संपादित' कर सकता है।"

यह बात सुनने या दिखने में सरल लगती है लेकिन, राजू को अपने लेखों को मंजूर करवाने के लिए उतना ही संघर्ष करना पड़ा। शुरुआती दौर में 'कीपैड हैंडसेट' से लिखना आसान नहीं था लेकिन, उन्होंने हार नहीं मानी और आज, वह हिंदी Wikipedia के समीक्षकों में से एक हैं। उन्होंने 1,880 लेखों में अपना योगदान तथा 57,000 से अधिक लेखों का हिंदी में संपादन भी किया है।

मुश्किल थी शुरुआत

राजू अब 22 साल के हैं। उनका मानना है कि उनका सफर व्यक्तिगत और प्रोफेशनल दोनों ही स्तर पर काफी संघर्ष भरा रहा है। उन्हें अपने किसान माता-पिता की मदद करने के लिए अपनी शिक्षा छोड़नी पड़ी। उनके परिवार के पास लगभग 7.5 एकड़ जमीन थी तथा खेती द्वारा, बड़ी मुश्किल से घर चल पाता था। इस कारणवश घरवालों ने उनसे कमाने का आग्रह किया।

उन्होंने बताया, "मैंने दसवीं कक्षा के बाद स्कूल छोड़ दिया, और गाँव में एक कारपेंटर के रूप में काम करना शुरू कर दिया। जिससे मुझे हर महीने 7,000 रुपये मिलते थे।"

इसके साथ-साथ Wikipedia में भी उनकी रुचि बनी रही। उन्होंने हिंदी लेखन के माध्यम से, Wikipedia को योगदान देने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने और अपने भाई के लिए एक पेज बनाकर इसकी शुरुआत की, जिसमें अपने गाँव के बारे में भी कुछ जरूरी तथ्य लिखे। हालाँकि, अगले दिन ये सब गायब हो गया। तथ्यों का समर्थन करने हेतु, सम्बंधित 'संदर्भ' की अनुपस्थिति के कारण, संपादकों ने लेख को हटा दिया।

राजू ने द बेटर इंडिया को बताया, “मैंने लेखों को अपलोड करने के लिए दो वर्षों तक लगातार प्रयास किए लेकिन, असफल रहा। इस दौरान मुझे 2013 तथा 2014 में उनके द्वारा तीन बार ब्लॉक किया गया। इसके फलस्वरूप, मैंने सीखा कि सभी लेखों को निष्पक्ष और तटस्थ होने की काफी आवश्यकता होती है। साथ ही यह भी जाना कि, वे किसी व्यक्ति या सेलिब्रिटी का प्रचार नहीं कर सकते तथा लेखों की विश्वसनीयता के लिए उद्धरणों और संदर्भों के समर्थन की आवश्यकता होती है।”

उन्होंने 2015 में एक नया अकाउंट बनाया और सभी सामुदायिक दिशा-निर्देशों का पालन करने का निर्णय लिया। वह आगे कहते हैं, “मैंने अपने गाँव और पड़ोसी क्षेत्रों के तथ्यों को लिखना शुरू किया। उन्हें मंजूरी मिलने के बाद, मैंने क्रिकेट के बारे में लिखा। क्योंकि खेल में मुझे काफी दिलचस्पी थी। आखिरकार, मैंने भूगोल, इतिहास और मनोरंजन पर लेख लिखने शुरू किये।”

लिखने की क्षमता और आत्मविश्वास के बावजूद, राजू को तकनीकी बाधाओं का सामना करना पड़ा। उन्होंने बताया, “मेरे पास स्मार्टफोन नहीं था, इसलिए मैं 150–200 शब्दों से ज़्यादा कोई लेख नहीं लिख सकता था। इस हैंडसेट में सॉफ्टवेयर क्रैश हो जाता था, जिससे सभी तथ्य मिट जाते थे। मैंने आखिरकार एक स्मार्टफोन खरीदा, लेकिन यह समस्या बनी रही। नए डिवाइस से मुझे लगभग 400 शब्द के लंबे लेख लिखने में मदद मिली। लेकिन, मुझे संदर्भों और उद्धरणों के लिए टैब स्विच करना पड़ता था। जिससे संपादन पृष्ठ रिफ्रेश होते रहने के कारण पूर्व-लिखित तथ्य मिट जाया करते थे।

इस बीच, कारपेंटर के रूप में राजू का वेतन 14,000 रुपये हो गया था। वह अपने माता-पिता को 10,000 रुपये दे देते, और

शेष व्यक्तिगत खर्च के लिए रखते थे। इस आय से उन्हें बारहवीं कक्षा की परीक्षा देने में मदद मिली। उन्होंने कहा, "मैं हर दिन सुबह 9 से 12 घंटे की शिफ्ट में काम करता था और काम के बीच में अपने लेखन के लिए समय निकालता था। फिर देर रात तक भी लिखता था।"

लाखों लोगों तक पहुंचे

2016 के मध्य में, राजू को पुणे, महाराष्ट्र में एक हिंदी विकिपीडिया सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला। "मुझे समुदाय के सदस्यों द्वारा तकनीकी चुनौतियों के बारे में पता चला, जिनका सामना संपादकों को करना पड़ता था। इसलिए मैंने उनकी मदद करने का फैसला किया। दो सदस्यों को मेरी कमजोर आर्थिक हालातों के बारे में पता चला और उन्होंने दूसरे सदस्यों के साथ इस मुद्दे पर चर्चा की। उन्होंने मुझे एक लैपटॉप और इंटरनेट कनेक्शन देने के लिए एक 'डोनेशन कैम्पेन' करने का सुझाव दिया। यह एक लंबी प्रक्रिया थी, क्योंकि सभी नए तथा वरिष्ठ सदस्यों को हार्डवेयर दान के पक्ष में नामांकित और वोट करने की आवश्यकता थी। उन्होंने बताया कि 6 महीने बाद दिसंबर माह में, उन्हें दोनों डिवाइस मिल गए। तब से, राजू ने हिंदी विकिपीडिया पर लंबे लेखों के लिए योगदान दिया और संपादक से लेकर एक समीक्षक तक के रूप में काफी प्रगति की है।

2017 में, राजू ने अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए कारपेंटर की नौकरी छोड़ दी और कंटेंट राइटिंग में अपना कैरियर बनाया। उन्होंने कहा, "मैं विकिपीडिया पर लिखने से कमा नहीं रहा, लेकिन फिर भी मेरी इसमें रुचि है। मुझे इस बात की तसल्ली है कि लाखों लोग मेरे द्वारा लिखी गई जानकारी तक पहुंच रहे हैं। इस मंच ने मुझे पाठकों को सटीक और उपयोगी जानकारी प्रदान करने की अनुमति दी। मुझे दुनिया में सबसे अधिक एक्सेस की जाने वाली वेबसाइटों में से एक Wikipedia

के लिए लिखने पर काफी गर्व है। इसके अलावा, मुझे इसमें कोई पैसा भी नहीं लगाना पड़ता।”

राजू ने सैकड़ों लेखों में योगदान देते हुए 2018 में आर्ट्स में स्नातक की पढ़ाई पूरी की। उन्हें जोधपुर में एक कंटेंट राइटिंग कंपनी में नौकरी भी मिल गई तथा विकिपीडिया समुदाय ने भी अंततः उन्हें समीक्षक बनने के लिए नामांकित किया। उन्होंने बताया, “मेरी जिम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं, मैं अब तथ्य-जाँच और लेखों को सही और उनकी समग्र गुणवत्ता में सुधार करने का कार्य करता हूँ। कई अवसरों पर, लेखकों के बीच तथ्यों की विश्वसनीयता को लेकर विवाद होते हैं तथा मेरा काम इस तरह के विवादों को हल करना और पाठकों तक विश्वसनीय जानकारी पहुंचाना है।”

राजू के असाधारण योगदान को ध्यान में रखते हुए, समुदाय के सदस्यों ने, उन्हें तीन बार ‘एडमिनिस्ट्रेटर’ की जिम्मेदारी के लिए नामित किया है। हालाँकि, उन्होंने अब तक इस पद को स्वीकार नहीं किया है। वह कहते हैं, “मैं अभी अतिरिक्त जिम्मेदारी लेने के लिए पूर्णतः आश्वस्त नहीं हूँ, लेकिन अगला मौका आने पर मैं अपने फ़ैसले पर फिर से विचार करूंगा।”

निष्पक्ष कंटेंट की ज़रूरत

राजू के काम की सराहना करते हुए, हिंदी विकिपीडिया के संस्थापक और निदेशक अभिषेक सूर्यवंशी कहते हैं, “भाषा के प्रति उनका योगदान बहुत अधिक रहा है। भारत में इस अनुभाग के लिए केवल 11 सक्रिय योगदानकर्ता हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में जानकारी देने में उनका काम सराहनीय रहा है। राजू के काम को पूरे भारत में लाखों लोग पढ़ते हैं। लेख लिखने के अलावा, उन्होंने अधिकाधिक लेखकों को योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, विभिन्न आउटरीच कार्यक्रमों में भी भाग लिया है।”

अभिषेक आगे कहते हैं, “हाल ही में, राजू ने SWASTHA – ‘स्पेशल विकिपीडिया अवेयरनेस स्कीम फॉर हेल्थकेयर एफलिएट्स’ में भी योगदान दिया है, जो हिंदी में COVID-19 पर ‘इंटरनेट समुदाय’ को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

राजू का मानना है कि, वेबसाइट में और अधिक योगदानकर्ता शामिल हों। उन्होंने अंत में कहा, “विभिन्न क्षेत्रों में इंटरनेट उपयोगकर्ता जो पढ़ना चाहते हैं, उन टॉपिक्स पर जानकारी के लिए हजारों पृष्ठ हैं। लेकिन, कोई भी जानकारी हिंदी में उपलब्ध नहीं है। तत्कालीन समय में निष्पक्ष और गैर-विवादास्पद जानकारी की आवश्यकता है, और हमारे जैसे आम लोग इसे प्रदान करने में मदद कर सकते हैं।”

जुलेखा बानो: समुदाय की पहली वकील

24 वर्षीय जुलेखा बानो, लद्दाख के बोगदंग गाँव की रहने वाली हैं। पिछले महीने उन्होंने अपनी वकालत की पढ़ाई पूरी की। जब उन्हें पता चला कि, वह अपने 'बाल्टी समुदाय' में इस उपलब्धि को हासिल करने वाली पहली महिला हैं, तो उनका दिल गर्व से भर गया। वास्तव में, जुलेखा हाशिये पर जी रहीं महिलाओं के लिए, एक प्रेरणा हैं। जुलेखा ने, देहरादून स्थित 'लिब्रा कॉलेज ऑफ लॉ' से पाँच वर्षीय एल.एल.बी. कोर्स पूरा किया है।

उन्होंने द बेटर इंडिया को बताया, "शुरुआत में, मुझे नहीं पता था कि, मैं अपने समुदाय में लॉ की पढ़ाई करने वाली पहली महिला हूँ। अंतिम साल के नतीजे आने के बाद, मुझे सोशल मीडिया पर बधाई संदेश मिलने लगे। इस खबर से, मैं एक तरफ जहाँ हैरान थी, वहीं बहुत खुश भी थी।" जुलेखा ने अपनी इस उपलब्धि का श्रेय, अपने माता-पिता को दिया। जिनका गाँव वालों ने पहले बहिष्कार कर दिया था। लेकिन, जुलेखा की सफलता के बाद, लोगों ने सब कुछ भुला कर, उन्हें बधाई दी।

बाल्टी समुदाय और ऑपरेशन सद्भावना

'बाल्टी समुदाय' कौन है, जिनकी जुलेखा एक हिस्सा हैं? भारत के उत्तरी गाँवों, जो कि कारगिल, नुब्रा, लेह और गिलगित-बल्तिस्तान (पाकिस्तानी प्रांत) के इलाकों में बसने वाला, यह वो समुदाय है, जिनकी एक विशिष्ट भाषा और संस्कृति है, और मुख्यतः इस्लाम धर्म का अनुसरण करते हैं।

विभाजन के बाद से, इस इलाके में भारत और पाकिस्तान के बीच की नियंत्रण रेखा कई बार बदली गई। इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला 'बाल्टी समुदाय' ही था।

लेकिन, 1971 की जंग के बाद तुर्तुक, त्याक्षी, थांग, चुलुंका जैसे नुब्रा घाटी के कई गाँवों को पाकिस्तानी कब्जे से मुक्त कर भारत में शामिल कर लिया गया। इसके बाद ही 'बाल्टी समुदाय' के लोगों की जिंदगी स्थिर हुई। लेकिन, यहाँ मूलभूत सुविधा का अभाव था और 1999 में, कारगिल युद्ध ने, स्थानीय लोगों की दुश्वारियों से देश को अवगत कराया। सेना को भी एहसास हुआ कि, यहाँ लोगों के भरोसे को कायम कर, सीमा क्षेत्रों को अधिक सुरक्षित किया जा सकता है।

हालाँकि, जुलेखा और उनके चार भाई-बहन (तीन बहनें और एक भाई) बोगदंग के हैं, जो 1948 से भारत में बसे हुए हैं। चौथी कक्षा तक, जुलेखा ने वहाँ के आर्मी गुडविल स्कूल में पढ़ाई की। जो लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) अर्जुन रे द्वारा स्थापित किया गया था। अर्जुन रे, 14 कोर के पूर्व कमांडर थे, जिन्होंने ऑपरेशन सद्भावना का शुभारंभ किया।

इसी पहल के तहत बोगदंग में, आर्मी गुडविल स्कूल की शुरुआत की गई। लेकिन, दहशतगर्दों के खौफ के कारण कोई अपने बच्चों को यहाँ भेजना नहीं चाहता था। ऐसे में, यहाँ के नंबरदार अहमद शाह बाल्टी ने, अपनी दो बेटियों, जुलेखा और शेरिन फातमा तथा बेटे शब्बीर को इस स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा।

अहमद शाह, एक छोटे ठेकेदार थे, और वह सेना को मजदूरों की जरूरतों को पूरा करने में मदद करते थे।

वह कहते हैं, "वर्ष 2000 में, मुझे गाँव का नंबरदार बनाया गया था। उस वक्त, यहाँ टीवी देखने, मोबाइल टॉवर लगाने, और

यहाँ तक कि पर्यटकों को आने की भी अनुमति नहीं थी। लड़कियों की शिक्षा तो दूर की बात थी। स्थानीय मौलवी, उन्हें 8वीं क्लास से ज्यादा नहीं पढ़ने देते थे।" वह आगे कहते हैं, "हाँ, यह सच है कि सभी लोग अपने बच्चों को पढ़ाने में सक्षम नहीं थे। लेकिन, सामाजिक बंदिशों को भी नकारा नहीं जा सकता है। मैं बचपन में देखता था कि, बोगदंग में लड़कियों को स्कूल भेजने को लेकर विचार भी नहीं किया जाता था। हालांकि, 1971 में पाकिस्तान से मुक्त कराए गए तुरुक, त्याक्षी जैसे गाँवों में आधुनिक शिक्षा को लेकर खुले विचार थे। शुक्र है कि, आज हमारे गाँव की स्थिति में भी काफी सुधार है।"

गाँव छोड़ने को हुए मजबूर

अपनी पारिवारिक मजबूरियों के कारण वह 8वीं क्लास तक ही पढ़ पाए थे और उन्हें अपनी पढ़ाई पूरी न कर पाने का मलाल हमेशा रहा। वह अपने बच्चों को आधुनिक शिक्षा देने के लिए लालायित थे, और 'ऑपरेशन सद्भावना' ने उनके सपनों को नया आयाम दे दिया। फिर, उन्होंने अपने बच्चों का दाखिला आर्मी गुडविल स्कूल में करा दिया। यहाँ एक बार सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें जुलेखा का डाँस करना और शेरिन का गाना, बिरादरी को नागवार गुजरा। आलम यह था कि कुछ प्रभावशाली लोग, अहमद के परिवार पर धर्म से भटकने का आरोप लगाने लगे। लेकिन, अहमद ने झुकने से इंकार कर दिया। इसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ा, और गाँव वालों ने उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया। उन्हें मस्जिद में आने पर रोक लगा दी गई, और यहाँ तक कि, उनसे वास्ता रखने वालों पर भी जुर्माना लगा दिया गया। आखिरकार, 2004 में वह अपने गाँव को छोड़ने के लिए मजबूर हो गए।

अहमद कहते हैं कि, उन्होंने जुलेखा और शब्बीर को आगे की पढ़ाई के लिए देहरादून भेज दिया। जबकि, बाकी परिवार लेह

में रहने लगा। वह यहाँ छोटी-मोटी ठेकेदारी का काम करते थे। साथ ही, उन्होंने सामाजिक बहिष्कार के खिलाफ भी अपनी लड़ाई जारी रखी। इस सिलसिले में उन्होंने कई अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और पत्रकारों से संपर्क किया। लेकिन, उन्हें कोई मदद नहीं मिली।

जुलेखा कहती हैं, “हमारी पढ़ाई के लिए मेरे पिता को अपनी जिप्सी और जमीन बेचनी पड़ी। वह एक प्रगतिशील विचारों वाले शख्स हैं, जिनका मानना है कि बेटियों को उचित शिक्षा मिलनी चाहिए। हमारी माँ, सकीना बानो को भी लगा कि, यदि उनकी बेटियाँ गाँव में रहकर अच्छी शिक्षा नहीं पा सकती हैं, तो यहाँ रहने का मतलब क्या है।”

नई शुरुआत

लद्दाख के काफी छात्र देहरादून में पढ़ाई करते थे। इसे देखते हुए अहमद ने, अपने कुछ दोस्तों के सुझाव पर, यहाँ हॉस्टल खोलने का फैसला किया। ताकि, घर को ठीक से चलाया जा सके। फिर, उन्होंने अपनी पत्नी के साथ मिलकर 35 छात्रों के लिए एक हॉस्टल को शुरू किया। जुलेखा और शेरिन भी यहीं रहने लगीं। दोनों बहनें पढ़ाई करतीं, और साथ ही छात्रों के लिए खाना बनाने में, अपनी माँ की मदद भी करने लगीं। इस तरह उनकी जिंदगी सरपट भागने लगी।

आज, जुलेखा उच्च शिक्षा प्राप्त कर, अपने समुदाय की पहली महिला वकील बनी हैं। वहीं शेरिन ने 12वीं के बाद गायन को अपना कैरियर बना लिया। आज वह बाल्टी भाषा की, एक लोकप्रिय गायिका बन चुकी हैं तथा उनके भाई शब्बीर ने भी अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर ली है।

गाँव वालों ने फिर से लगाया गले

इतने वर्षों बाद, बोगदंग के लोगों ने अहमद और उनके परिवार को, फिर से गले लगा लिया। जुलेखा की इस कामयाबी के बाद, वे लोग भी खुशियाँ मना रहे हैं, जिन्होंने उन्हें गाँव छोड़ने पर मजबूर कर दिया था।

इसे लेकर बोगदंग के एक शख्स, जो फिलहाल दिल्ली में काम करते हैं, नाम न बताने की शर्त पर कहते हैं, “पिछले एक दशक में लोगों की सोच में काफी बदलाव आया है। आज यहाँ की कई लड़कियाँ कॉलेज में पढ़ाई कर रही हैं। अब लोगों को लड़कियों की शिक्षा का महत्व पता चल रहा है। हालांकि, उन्हें पढ़ाई के लिए, लद्दाख से बाहर भेजने में, वित्तीय संकटों का सामना भी करना पड़ता है।”

सच है कि, यदि अहमद लोगों से डर कर अपनी बेटियों के लिए कोशिश न करते तो, आज यह बदलाव देखने को न मिलता। जुलेखा के लिए, बोगदंग किसी जन्त से कम नहीं है। वह नुब्रा में वकालत करने के साथ-साथ, अपने गाँव में, मानसिक और शारीरिक विकलांगता से जूझ रहे बच्चों के लिए, एक एनजीओ शुरू करना चाहती हैं।

मैरी कॉम : एक दमदार महिला मुक्केबाज

मैंगते चंगेइजैंग मैरी कॉम (एम.सी. मैरी कॉम) का जन्म 1 मार्च 1983 को मणिपुर के चुराचांदपुर जिले में हुआ। उनके पिता एक गरीब किसान थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा लोकटक क्रिश्चियन मॉडल स्कूल (कक्षा 6 तक) और सेंट जेवियर स्कूल (कक्षा 8 तक) में हुई। इसके बाद उन्होंने कक्षा 9 और 10 की पढ़ाई के लिए इम्फाल के आदिमजाति हाईस्कूल में दाखिला लिया लेकिन वह मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास नहीं कर सकीं।

मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में दोबारा बैठने का उनका विचार नहीं था इसलिए उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और आगे की पढ़ाई 'नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग' (NIOS), इम्फाल, से की। उन्होंने अपना स्नातक चुराचांदपुर कॉलेज से पूरा किया।

उनको खेल-कूद का शौक बचपन से ही था और उनके ही प्रदेश के मुक्केबाज डिङ्को सिंह की सफलता ने उन्हें मुक्केबाज बनने के लिए और प्रोत्साहित कर दिया। उन्होंने अपनी ट्रेनिंग की शुरुआत मणिपुर राज्य के बॉक्सिंग कोच नरजीत सिंह की देख-रेख में मणिपुर की राजधानी इम्फाल में शुरू कर दिया।

मुक्केबाजी कैरियर और सफलताएँ

एक बार बॉक्सिंग रिंग में उतरने का फैसला करने के बाद मैरी कॉम ने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। एक महिला होने के नाते उनका सफ़र और भी मुश्किल था पर उनका हौसला भी फौलाद का बना है— एक बार जो ठान लिया वो करके दिखाना

है! राष्ट्रीय बॉक्सिंग चैंपियनशिप के अलावा मैरी कॉम अकेली ऐसी महिला मुक्केबाज़ हैं जिन्होंने अपनी सभी 6 विश्व प्रतियोगिताओं में पदक जीता है। एशियन महिला मुक्केबाजी प्रतियोगिता में उन्होंने 5 स्वर्ण और एक रजत पदक जीता है, महिला विश्व वयस्क मुक्केबाजी चैंपियनशिप में भी उन्होंने 5 स्वर्ण और एक रजत पदक जीता है, एशियाई खेलों में मैरी ने 2 रजत और 1 स्वर्ण पदक जीता है। 2012 के लन्दन ओलंपिक्स में कांस्य पदक जीतकर उन्होंने देश का नाम ऊँचा किया। इसके अलावा मैरी ने इंडोर एशियन खेलों और एशियन मुक्केबाजी प्रतियोगिता में भी स्वर्ण पदक जीता है।

1 अक्टूबर 2014 को मैरी ने इन्चिओन, दक्षिण कोरिया, एशियन खेलों में स्वर्ण जीतकर नया इतिहास रचा। वह एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला मुक्केबाज़ बनीं।

सन् 2001 में प्रथम बार नेशनल वुमन्स बॉक्सिंग चैंपियनशिप जीतने वाली मैरी कॉम अब तक 10 राष्ट्रीय खिताब जीत चुकी हैं। मुक्केबाजी में देश को गौरवान्वित करने वाली मैरी को भारत सरकार ने वर्ष 2003 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया। वर्ष 2006 में पद्मश्री और 2009 में उन्हें देश के सर्वोच्च खेल सम्मान 'राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

गीता फोगाट : चट्टान का दूसरा नाम

गीता फोगाट एक ऐसे गाँव से थीं जहाँ बेटों का होना अभिशाप माना जाता था। बेटों के पैदा होते ही खुशियों की जगह दुःख का मातम छा जाता था। इतना ही नहीं लड़कियों को पढ़ने के लिए स्कूल जाना भी मना था और आज भी हमारे देश में केवल बेटों की चाह रखने वाले लोगों की कमी नहीं है। शुरुआत में तो गीता के माता-पिता की भी सोच कुछ ऐसी ही थी। बेटे की चाह में वह चार बेटियों के पिता बन गए, जिनमें गीता सबसे बड़ी हैं। लेकिन बाद में गीता के पिताजी को एहसास हुआ कि बेटियाँ भी बेटों से कम नहीं होतीं और उन्होंने अपनी बेटियों को उस राह पे चलाने का फैसला बना लिया जिसके बारे में तो कोई सोच भी नहीं सकता था। वे अपनी बेटियों को पहलवान बनाने में जुट गए।

खेलने की उम्र में गीता को कठोर परिश्रम करना पड़ता था। वे अपनी बहन बबीता के साथ सुबह-सुबह दौड़ने चली जातीं। इसके बाद अखाड़े में घंटों तक Practice करनी पड़ती, जिसमें लड़कों से मुकाबले भी शामिल रहते थे। अब आप खुद ही सोचिये जिस गाँव में लड़कियों को स्कूल जाने तक की मनाही हो वहाँ कोई लड़की पहलवानी करे तो क्या होगा? गीता की कुश्ती सीखने की बात सुनते ही गाँव में हंगामा मच गया। लेकिन उनके पिता इसकी परवाह न करते हुए गीता को आगे बढ़ने के लिए प्रशिक्षण देने लगे।

गीता को कुश्ती सीखते देख उनको एक बिगड़ैल लड़की समझा जाने लगा। गाँव के सभी लोगों ने अपनी बेटियों को गीता से

मिलने तक को मना कर दिया था। गांव के सभी लोग उनके पिता को बेशर्म कहने लगे। वे कहते थे कि कैसा पिता है ! अपनी बेटी को ससुराल भेजने के बजाये उनसे कुश्ती लड़वा रहा है। इस पर उनके पिताजी का एक ही जवाब रहता था कि "जब लड़की प्रधानमन्त्री बन सकती है तो पहलवान क्यों नहीं बन सकती"? और वो कहते हैं न कि अगर इरादे मजबूत हों तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती। फिर क्या था गीता और उसके पिता को भी कोई नहीं रोक पाया और आगे चलकर गीता ने कुश्ती में वो इतिहास रचा जिसे कोई आज तक किसी भारतीय महिला ने नहीं कायम किया था।

वर्ष 2000 में सिडनी ओलंपिक में जब 'कर्णम मल्लेश्वरी' ने Weight Lifting में Bronze Medal जीता तो वह ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बन गयीं। इस जीत का असर गीता के पिता महावीर सिंह फोगाट पर हुआ। उन्हें लगा जब 'कर्णम मल्लेश्वरी' पदक जीत सकती है तो मेरी बेटियां भी मेडल जीत सकती हैं और यहीं से उनके पिता अपनी बेटियों को Champion बनाने की राह पर निकल पड़े। इसके बाद उन्होंने अपनी बेटी गीता और बबीता को पदक जिताने के लिए तैयारी कराना शुरू कर दिया।

आपको पता है गीता के पिता 80 के दशक के एक बेहतरीन पहलवान थे और गीता के लिए एक सख्त कोच भी थे। गीता बताती हैं कि "पापा मुझसे अक्सर कहते थे कि तुम जब लड़कों की तरह खाती-पीती हो, तो फिर लड़कों की तरह कुश्ती क्यों नहीं लड़ सकती? इसलिए मुझे कभी नहीं लगा कि मैं पहलवानी नहीं कर सकती"!! गाँव के दंगल से आगे बढ़ते हुए गीता ने जिला और राज्य स्तर तक कुश्ती में सभी को पछाड़ दिया और National व International मुकाबलों के लिए खुद को और

बेहतरीन तरीकों से तैयार करने लगीं। वर्ष 2009 में 'राष्ट्रमंडल कुश्ती चैम्पियनशिप' में गीता ने Gold Medal जीता। इसके बाद गीता अपनी कुश्ती का सफर जारी रखते हुए आगे बढ़ती चली गयीं।

साल 2010 में दिल्ली के राष्ट्रमंडल खेलों में Free Style महिला कुश्ती के 55 Kg कैटेगरी में Gold Medal हासिल किया और ऐसा करने वाली वे पहली भारतीय महिला बन गयीं। क्या आपको पता है कि बिलाली हरियाणा के उन गाँवों में से आता है जो जन्म से पहले ही बेटी की भ्रूण हत्या के लिए पहले से बदनाम है और आप सोच सकते हैं कि ऐसे गाँव की बेटी होने के बावजूद भी गीता ने इतना कुछ कर दिखाया।

Commonwealth Games में Gold Medal जीतकर जब गीता पहली बार अपने गाँव पहुंचीं तो जो लोग कभी उन्हें ताना मारते थे, वही लोग उनके स्वागत के लिए बैंड बाजे और फूलों का हार लेकर खड़े थे। गीता की जीत ने गाँव वालों की पिछड़ी सोच को भी हरा दिया। और आज हरियाणा के सैकड़ों गाँव बदल चुके हैं। अब यहाँ बेटियों को लोग प्यार करने लगे हैं। बेटी के जन्म पर जश्न मनाए जा रहे हैं और लड़कियों को भी लड़कों की तरह खेलने-कूदने और घूमने की आजादी दी जाने लगी है। इतना ही नहीं गीता फोगाट के जीवन पर आधारित फिल्म "दंगल" को भारतीय दर्शकों ने काफी ज्यादा पसंद किया और इस फिल्म ने चीन में 1200 करोड़ रुपये कमाकर इतिहास रच दिया।

International Games में गीता के योगदान को देखते हुए 18 अक्टूबर 2016 को गीता को हरियाणा पुलिस का Deputy Superintendent बनाया गया। गीता ने Gold Medal जीतकर लोगों के दिलों में एक मिसाल कायम कर दी। आज पूरे देश को

अपनी इस बेटी पर गर्व है। महावीर सिंह फोगाट और गीता की सफलता की ये कहानी करोड़ों हिन्दुस्तानियों के लिए एक प्रेरणा है। इससे पता चलता है कि चाहे कितनी भी मुश्किलें आएँ अगर इंसान के अन्दर उस चीज़ को करने की इच्छा शक्ति है तो वह अपने परिश्रम के बल पर हर चीज़ को संभव बना सकता है।

आज ही क्यों नहीं? कहानी

एक बार की बात है एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर-सम्मान किया करता था। गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब गुरुजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य अपने जीवन-संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है, तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता। यहाँ तक कि वह अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पाता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बनाई। एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरुजी ने कहा।

“मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा दो दिन के लिए दे कर, कहीं दूसरे गाँव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुमसे वापस ले लूंगा।” शिष्य इस सुअवसर को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते-करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण

होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर-चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठना पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रातःकाल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरुजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ ज़रूर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाज़ार से लोहे के बड़े-बड़े सामान खरीदकर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा।

दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा कि अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाज़ार जाकर सामान लेता आएगा। उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात ही सामान लेने निकलूंगा परन्तु भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी, और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा। पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नींद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था। अब वह जल्दी-जल्दी बाज़ार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरुजी मिल गए उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा लेकिन गुरुजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर-चूर हो गया। पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी। उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बनकर दिखायेगा।

भला आदमी- कहानी

एक बार एक धनी पुरुष ने एक मंदिर बनवाया। मंदिर में भगवान की पूजा करने के लिए एक पुजारी रखा। मंदिर के खर्च के लिए बहुत सी भूमि, खेत और बगीचे मंदिर के नाम लगाए। उन्होंने ऐसा प्रबंध किया था कि जो मंदिर में भूखे, दीन दुखी या साधु-संत आयें, वे वहां दो-चार दिन ठहर सकें और उनको भोजन के लिए भगवान का प्रसाद मंदिर से मिल जाया करे। अब उन्हें एक ऐसे मनुष्य की आवश्यकता हुई जो मंदिर की संपत्ति का प्रबंध करे और मंदिर के सब कामों को ठीक-ठीक चलाता रहे!

बहुत से लोग उस धनी पुरुष के पास आए। वे लोग जानते थे कि यदि मंदिर की व्यवस्था का काम मिल जाए तो वेतन अच्छा मिलेगा। लेकिन उस धनी पुरुष ने सबको लौटा दिया। वह सब से कहता था— 'मुझे एक भला आदमी चाहिए, मैं उसको अपने आप छांट लूंगा।' बहुत से लोग मन ही मन में उस धनी पुरुष को गालियां देते थे। बहुत लोग उसे मूर्ख या पागल बतलाते थे। लेकिन वह धनी पुरुष किसी की बात पर ध्यान नहीं देता था। जब मंदिर के पट खुलते और लोग भगवान के दर्शन के लिए आने लगते तब वह धनी पुरुष अपने मकान की छत पर बैठकर मंदिर में आने वाले लोगों को चुपचाप देखता रहता था।

एक दिन एक मनुष्य मंदिर में दर्शन करने आया। उसके कपड़े मैले और फटे हुए थे वह बहुत पढ़ा-लिखा भी नहीं जान पड़ता था। जब वह भगवान का दर्शन करके जाने लगा तब धनी पुरुष

ने उसे अपने पास बुलाया और कहा— 'क्या आप इस मंदिर की व्यवस्था संभालने का काम करेंगे?'

वह मनुष्य बड़े आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा— 'मैं तो बहुत पढ़ा-लिखा नहीं हूँ मैं इतने बड़े मंदिर का प्रबंध कैसे कर सकूंगा?'

धनी पुरुष ने कहा— 'मुझे बहुत विद्वान नहीं चाहिए मैं तो एक भले आदमी को मंदिर का प्रबंधक बनाना चाहता हूँ।'

उस मनुष्य ने कहा— 'आपने इतने मनुष्य में मुझे ही क्यों भला आदमी माना।'

धनी पुरुष बोला— 'मैं जानता हूँ कि आप भले आदमी हैं। मंदिर के रास्ते में एक ईंट का टुकड़ा गड़ा रह गया था और उसका एक कोना ऊपर निकला था मैं उधर से बहुत दिनों से देख रहा था कि उस मंदिर के टुकड़े की नोक से लोगों को ठोकर लगती थी, लोग गिरते थे, लुढ़कते थे और उठ कर चलते थे। आपको उस टुकड़े से ठोकर नहीं लगी किंतु आपने उसे देखकर ही उखाड़ देने का यत्न किया। मैं देख रहा था कि आप मेरे मजदूर से फावड़ा मांगकर ले गए और उस टुकड़े को खोदकर आपने वहां की भूमि भी बराबर कर दी।'

उस मनुष्य ने कहा— 'यह तो कोई बात नहीं है रास्ते में पड़े कांटे, कंकड़ और लगने योग्य पत्थर, ईंटों को हटा देना तो प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है।'

धनी पुरुष ने कहा— 'अपने कर्तव्यों को जानने और पालन करने वाले लोग ही भले आदमी होते हैं।'

वह मनुष्य मंदिर का प्रबंधक बन गया उसने मंदिर का बड़ा सुंदर प्रबंध किया।

बिना विचारे काम मत करो

एक किसान ने एक नेवला पाल रखा था। नेवला बहुत चतुर और स्वामीभक्त था। एक दिन किसान कहीं गया था। किसान की स्त्री ने अपने छोटे बच्चे को दूध पिलाकर सुला दिया और नेवले को वहीं छोड़कर वह घड़ा और रस्सी लेकर कुएं पर पानी भरने चली गई।

किसान की स्त्री के चले जाने पर वहां एक काला सांप बिल में से निकल आया। बच्चा पृथ्वी पर कपड़ा बिछाकर सुलाया गया था और सांप बच्चे की ओर ही आ रहा था। नेवले ने यह देखा तो सांप के ऊपर टूट पड़ा और उसने सांप को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डाला और घर के दरवाजे पर किसान की स्त्री का रास्ता देखने लगा।

किसान की स्त्री घड़ा भरकर लौटी, उसने घर के बाहर दरवाजे पर नेवले को देखा। नेवले के मुख रक्त लगा देखकर उसने समझा कि इसने मेरे बच्चे को काट डाला है। दुख और क्रोध के मारे भरा घड़ा उसने नेवले पर पटक दिया, बेचारा नेवला कुचल कर मर गया। वह स्त्री दौड़कर घर में आई, उसने देखा कि उसका बच्चा सुख से सो रहा है। वहां एक काला सांप कटा पड़ा है। स्त्री को उसकी भूल का पता लग गया, वह दौड़कर फिर नेवले के पास आई और नेवले को गोद में उठाकर रोने लगी लेकिन अब उसके रोने से क्या लाभ?

इसलिए कहा है— बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए। काम बिगारे आपनो, जग में होत हंसाय।।

दया का फल

बादशाह सुबुतगिन पहले बहुत गरीब था। एक साधारण सैनिक था। एक दिन वह बन्दूक लेकर घोड़े पर बैठकर जंगल में शिकार खेलने गया था। उस दिन उसे बहुत दौड़ना और हैरान होना पड़ा। बहुत दूर जाने पर उसे एक हिरणी अपने छोटे बच्चे के साथ दिखाई पड़ी। सुबुतगिन ने उसके पीछे घोड़ा दौड़ा दिया।

हिरणी डर के मारे भागकर एक झाड़ी में छिप गई; लेकिन उसका छोटा बच्चा पीछे छूट गया। सुबुतगिन ने हिरण के बच्चे को पकड़ लिया और उसके पैर बांधकर घोड़े पर उसे लाद लिया। बहुत दूँढ़ने पर भी जब हिरणी नहीं मिली तो बच्चे को लेकर ही वह लौट पड़ा।

हिरणी ने देखा कि उसके बच्चे को शिकारी बांधकर लिए जा रहा है। वह अपने बच्चे के मोह से झाड़ी से निकल आई और सुबुतगिन के घोड़े के पीछे-पीछे दौड़ने लगी। बहुत दूर जाकर सुबुतगिन ने पीछे देखा। अपने पीछे हिरणी को दौड़ता देख उसे आश्चर्य हुआ और दया आ गई। उसने उसके बच्चे के पैर खोलकर घोड़े से उतार दिया। हिरणी प्रसन्न होकर अपने बच्चे को लेकर भाग गई।

उस दिन घर लौटकर जब रात में सुबुतगिन सोया तो उसने एक स्वप्न देखा। उससे कोई देवदूत कह रहा था “सुबुतगिन ! तूने आज एक हिरणी पर जो दया की है। परमात्मा ने तेरा नाम बादशाहों की सूची में लिख लिया है। तू एक दिन बादशाह बनेगा” सुबुतगिन का स्वप्न सच्चा था। वह आगे चलकर बादशाह हुआ।

बाजीराव पेशवा और किसान

बाजीराव पेशवा मराठा-सेना के प्रधान सेनापति थे। एक बार वे अनेक लड़ाइयों में विजय हासिल करके अपनी सेना सहित राजधानी लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने मालवा में अपनी सेना का पड़ाव डाला। बहुत दूर से चले आ रहे उनके सैनिक थककर चूर हो गए थे। वे भूख-प्यास से व्याकुल थे और उनके पास खाने के लिए पर्याप्त सामग्री भी नहीं थी।

बाजीराव ने अपने एक सरदार को बुलाकर आदेश दिया, तुम अपने साथ सौ सैनिकों को लेकर जाओ और किसी खेत से फसल कटवाकर छावनी में ले आओ।

सरदार सेना की एक टुकड़ी लेकर गाँव की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे एक किसान दिखाई दिया। सरदार ने उससे कहा, देखो, तुम मुझे इस इलाके के सबसे बड़े खेत पर ले चलो। किसान उन्हें एक बहुत बड़े खेत के पास ले गया। सरदार ने सैनिकों को आदेश दिया, सारी फसल काट लो और अपने-अपने बोरों में भर लो। यह सुनकर किसान चकरा गया। उसने हाथ जोड़कर कहा, महाराज, आप इस खेत की फसल न काटें। मैं आपको एक दूसरे खेत पर ले चलता हूँ। उस खेत की फसल पककर एकदम तैयार है। सरदार और उसके सैनिक किसान के साथ दूसरे खेत की ओर चल पड़े। यह खेत वहाँ से कुछ मीलों की दूरी पर और बहुत छोटा था।

किसान ने कहा, महाराज, आपको जितनी फसल चाहिए, इस खेत से कटवा लीजिए। सरदार को किसान की इस हरकत पर बहुत गुस्सा आया। उसने किसान से पूछा, यह खेत तो बहुत छोटा है। फिर तुम हमें वहाँ से इतनी दूर क्यों ले आए? किसान ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, महाराज, नाराज मत होइए। वह खेत मेरा नहीं था। यह खेत मेरा है। इसीलिए मैं आपको यहाँ ले आया।

किसान के जवाब से सरदार का गुस्सा टंडा हो गया। वह अनाज कटवाए बिना ही पेशवा के पास पहुँचा। उसने यह बात पेशवा को बताई। पेशवा को अपनी गलती का एहसास हो गया। वे सरदार के साथ स्वयं किसान के खेत पर गए। उन्होंने किसान को उसकी फसल के बदले ढेर सारी अशरफियाँ दीं और फसल कटवाकर छावनी पर ले आए।

नम्रता का परिणाम हमेशा अच्छा होता है।

विकारों का समाधान

महात्मा बुद्ध एक बार अपने प्रिय शिष्य आनंद के साथ कहीं जा रहे थे। गर्मी का महीना था। वन में काफी चलने के बाद दोपहर में वे एक वृक्ष तले विश्राम करने के लिए रुके। उन्हें काफी जोर की प्यास लगी थी। आनंद पास स्थित पहाड़ी झरने पर पानी लेने गया, लेकिन झरने से अभी-अभी कुछ पशु उधम मचाकर निकले थे, जिससे झील का पानी काफी गन्दा हो गया था। पशुओं की भाग-दौड़ से झरने के पानी में कीचड़ ही कीचड़ था। और सड़े पत्ते बाहर उभर कर आ गए थे। गन्दा पानी देखकर आनंद बिना पानी लिए लौट आया।

उसने बुद्ध से कहा कि झरने का पानी निर्मल नहीं है। उसे पिया नहीं जा सकता। मैं पीछे लौटकर नदी से पानी ले आता हूँ। लेकिन नदी बहुत दूर थी, तो बुद्ध ने उसे झरने का पानी ही लाने को वापस लौटा दिया। आनंद थोड़ी देर में फिर खाली लौट आया। पानी अब भी गन्दा था, इसीलिए उसने पानी नहीं लिया था। लेकिन महात्मा बुद्ध ने उसे इस बार भी वापस लौटा दिया। कुछ देर बाद जब तीसरी बार आनंद झरने पर पानी लेने के लिए पहुंचा, तो देखकर चकित हो गया कि झरना अब बिल्कुल निर्मल और शांत हो गया था, कीचड़ नीचे बैठ गया था। और पानी अब बिल्कुल निर्मल साफ हो गया था। वह इस बार पानी लेकर लौटा।

महात्मा बुद्ध ने उसे समझाते हुए कहा कि यही स्थिति हमारे मन की भी है। जीवन की दौड़-भाग मन को भी विक्षुब्ध कर देती है,

मथ देती है। लेकिन कोई यदि शांति और धीरज से बैठकर उसे देखता रहे, तो मन की विक्षुब्धता कीचड़ के समान अपने-आप नीचे बैठ जाती है और सहज निर्मलता का आगमन हो जाता है। इसीलिए बुरे समय में आदमी को अपना धीरज नहीं खोना चाहिए।

आदर्श वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई

वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर 1835 को काशी में हुआ। पिता का नाम मोरोपंत ताम्बे और माता का नाम भागीरथी बाई था। लक्ष्मीबाई का उपनाम मणिकर्णिका था, इसीलिए अपने बाल्यकाल में वे मनुबाई के नाम से जानी जाती थीं। लक्ष्मीबाई के पिता बलवंत राव के बाजीराव पेशवा की सेना में सेनानायक होने के कारण मोरोपंत पर भी पेशवा की कृपा रहने लगी।

सन् 1838 में गंगाधर राव को झांसी का राजा घोषित किया गया। वे विधुर थे। सन् 1850 में मनुबाई से उनका विवाह हुआ। सन् 1851 में उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। झांसी के कोने-कोने में आनंद की लहर प्रवाहित हुई, लेकिन चार माह पश्चात उस बालक का निधन हो गया। सारी झांसी शोक सागर में निमग्न हो गई। राजा गंगाधर राव को तो इतना गहरा धक्का पहुंचा कि वे फिर स्वस्थ न हो सके और 21 नवंबर 1853 को चल बसे।

महाराजा का निधन महारानी के लिए असहनीय था, लेकिन फिर भी वे घबराई नहीं, उन्होंने विवेक नहीं खोया। राजा गंगाधर राव ने अपने जीवनकाल में ही अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दत्तक पुत्र मानकर अंग्रेजी सरकार को सूचना दे दी थी। परंतु ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार ने दत्तक पुत्र को अस्वीकार कर दिया।

27 फरवरी 1854 को लार्ड डलहौजी ने गोद की नीति के अंतर्गत दत्तकपुत्र दामोदर राव की गोद अस्वीकृत कर दी और

झांसी को अंग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। पोलिटिकल एजेंट की सूचना पाते ही रानी के मुख से यह वाक्य प्रस्फुटित हो गया, 'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी'।

7 मार्च 1854 को झांसी पर अंग्रेजों का अधिकार हुआ। झांसी की रानी ने पेंशन अस्वीकृत कर दी व नगर के राजमहल में निवास करने लगीं। यहीं से भारत की प्रथम स्वाधीनता क्रांति का बीज प्रस्फुटित हुआ। अंग्रेजों की राज्य लिप्सा की नीति से उत्तरी भारत के नवाब और राजे-महाराजे असंतुष्ट हो गए और सभी में विद्रोह की आग भभक उठी। रानी लक्ष्मीबाई ने इसको स्वर्ण अवसर माना और क्रांति की ज्वालाओं को अधिक सुलगाया तथा अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की योजना बनाई। नवाब वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल, अंतिम मुगल सम्राट की बेगम जीनत महल, स्वयं मुगल सम्राट बहादुर शाह, नाना साहब के वकील अजीमुल्ला, शाहगढ़ के राजा, वानपुर के राजा मर्दन सिंह और तात्या टोपे आदि सभी महारानी के इस कार्य में सहयोग देने का प्रयत्न करने लगे।

भारत की जनता में विद्रोह की ज्वाला भभक गई। समस्त देश में सुसंगठित और सुदृढ़ रूप से क्रांति को कार्यान्वित करने की तिथि 31 मई 1857 निश्चित की गई, लेकिन इससे पूर्व ही क्रांति की ज्वाला प्रज्ज्वलित हो गई और 7 मई 1857 को मेरठ में तथा 4 जून 1857 को कानपुर में, भीषण विप्लव हो गए। कानपुर तो 28 जून 1857 को पूर्ण स्वतंत्र हो गया। अंग्रेजों के कमांडर सर ह्यूरोज ने अपनी सेना को सुसंगठित कर विद्रोह दबाने का प्रयत्न किया।

उन्होंने सागर, गढ़कोटा, शाहगढ़, मदनपुर, मडखेड़ा, वानपुर और तालबेहट पर अधिकार किया और नृशंसतापूर्ण अत्याचार किए। फिर झांसी की ओर अपना कदम बढ़ाया और अपना मोर्चा

कैमासन पहाड़ी के मैदान में पूर्व और दक्षिण के मध्य लगा लिया। लक्ष्मीबाई पहले से ही सतर्क थीं और वानपुर के राजा मर्दन सिंह से भी इस युद्ध की सूचना तथा उनके आगमन की सूचना प्राप्त हो चुकी थी।

23 मार्च 1858 को झांसी का ऐतिहासिक युद्ध आरंभ हुआ। कुशल तोपची गुलाम गौस खां ने झांसी की रानी के आदेशानुसार तोपों के लक्ष्य साधकर ऐसे गोले फेंके कि पहली बार में ही अंग्रेजी सेना के छक्के छूट गए। रानी लक्ष्मीबाई ने सात दिन तक वीरतापूर्वक झांसी की सुरक्षा की और अपनी छोटी-सी सशस्त्र सेना से अंग्रेजों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया। रानी ने खुले रूप से शत्रु का सामना किया और युद्ध में अपनी वीरता का परिचय दिया।

वे अकेले ही अपनी पीठ के पीछे दामोदर राव को कसकर घोड़े पर सवार हो, अंग्रेजों से युद्ध करती रहीं। बहुत दिन तक युद्ध का क्रम इस प्रकार चलना असंभव था। सरदारों का आग्रह मानकर रानी ने कालपी प्रस्थान किया। वहां जाकर वे शांत नहीं बैठीं।

उन्होंने नाना साहब और उनके योग्य सेनापति तात्या टोपे से संपर्क स्थापित किया और विचार-विमर्श किया। रानी की वीरता और साहस का लोहा अंग्रेज मान गए, लेकिन उन्होंने रानी का पीछा किया। रानी का घोड़ा बुरी तरह घायल हो गया और अंत में वीरगति को प्राप्त हुआ, लेकिन रानी ने साहस नहीं छोड़ा और शौर्य का प्रदर्शन किया। कालपी में महारानी और तात्या टोपे ने योजना बनाई और अंत में नाना साहब, शाहगढ़ के राजा, वानपुर के राजा मर्दन सिंह आदि सभी ने रानी का साथ दिया। रानी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया और वहां के किले पर अधिकार कर लिया। विजयोल्लास का उत्सव कई दिनों तक चलता रहा लेकिन रानी इसके विरुद्ध थीं। यह समय विजय का

नहीं था, अपनी शक्ति को सुसंगठित कर अगला कदम बढ़ाने का था।

इधर सेनापति सर ह्यूरोज अपनी सेना के साथ संपूर्ण शक्ति से रानी का पीछा करता रहा और आखिरकार वह दिन भी आ गया जब उसने ग्वालियर का किला घमासान युद्ध करके अपने कब्जे में ले लिया। रानी लक्ष्मीबाई इस युद्ध में भी अपनी कुशलता का परिचय देती रहीं। 18 जून 1858 को ग्वालियर का अंतिम युद्ध हुआ और रानी ने अपनी सेना का कुशल नेतृत्व किया। वे घायल हो गईं और अंततः उन्होंने वीरगति प्राप्त की।

ऐसी महान भारत को गौरवान्वित करने वाली झांसी की रानी वीरांगना लक्ष्मीबाई वास्तविक अर्थ में आदर्श वीरांगना थीं।

सूरत से ज्यादा सीरत अच्छी

दार्शनिक सुकरात दिखने में बहुत कुरूप थे और एक बार वो एक कमरे में बैठकर आईना देख रहे थे। इतने में उनका एक शिष्य कमरे में आता है तो सुकरात को आईना देखते हुए बहुत अजीब सा महसूस करता है और मुस्कुराने लगता है लेकिन शर्म के मारे कुछ भी नहीं बोला, लेकिन सुकरात उसकी मुस्कुराहट का राज समझ गये थे। थोड़ी देर बाद सुकरात ने शिष्य से बोला मुझे तुम्हारे मुस्कुराने की वजह पता है शायद तुम इसी लिए मुस्कुरा रहे हो कि मैं तो कुरूप हूँ मुझे आईना देखने की जरूरत क्या है तो इस पर शिष्य का मुंह शर्म से झुक गया।

सुकरात ने उससे कहा, शायद तुम नहीं जानते मैं रोज इसलिए आईना देखता हूँ ताकि मुझे अपनी कुरूपता का आभास हमेशा रहे" और मैं कोशिश करूँ कि मैं इतने अच्छे काम करूँ कि मेरे चेहरे की कुरूपता मेरे अच्छे कामों से ढंक जाये। शिष्य को ये जवाब अच्छा लगा लेकिन उसने फिर अपनी शंका व्यक्त की कि "गुरुजी इसका मतलब जो लोग सुंदर हैं उन्हें आईना नहीं देखना चाहिए" इस पर सुकरात ने उसे जवाब दिया कि उन्हें भी हमेशा आईना देखते रहना चाहिए ताकि उन्हें ये हमेशा अहसास रहे कि जितने सुंदर वो दिखते हैं उसी के अनुरूप वो अच्छे काम भी करें। और कुछ भी ऐसा बुरा काम नहीं करें जो उनकी सुन्दरता को ढंक ले। क्योंकि सूरत से अधिक सीरत की कुरूपता दुखदायी होती है।

डाकू रत्नाकर और नारद

बहुत समय पहले की बात है किसी राज्य में एक बड़े ही खूंखार डाकू का भय व्याप्त था। उस डाकू का नाम रत्नाकर था। वह अपने साथियों के साथ जंगल से गुजर रहे राहगीरों को लूटता और विरोध करने पर उनकी हत्या भी कर देता।

एक बार देवऋषि नारद जंगलों से भगवान का जप करते हुए जा रहे थे। जब वे घने बीहड़ों में पहुंचे तभी उन्हें कुछ लोग विपरीत दिशा में भागते हुए दिखे।

देवऋषि ने उनसे ऐसा करने का कारण पूछा तो सभी ने मार्ग में रत्नाकर के होने की बात बतायी। पर बावजूद इसके देवऋषि आगे बढ़ने लगे।

“क्या आपको भय नहीं लगता?” ,भाग रहे लोगों ने उन्हें ऐसा करते देख पूछा।

“नहीं, मैं मानता ही नहीं कि मेरे अलावा यहाँ कोई और है, और भय तो हमेशा किसी और के होने से लगता है, स्वयं से नहीं।”, ऋषि ने ऐसा कहते हुए अपने कदम आगे बढ़ा दिए।

कुछ ही दूर जाने पर डाकू रत्नाकर अपने साथियों के साथ उनके समक्ष आ पहुंचा।

रत्नाकर — नारद, मैं रत्नाकर हूँ, डाकू रत्नाकर।

नारद मुस्कुराते हुए बोले— मैं नारद हूँ देवऋषि नारद, तुम्हारा अतिथि और मैं निर्भय हूँ। क्या तुम निर्भय हो?

रत्नाकर— क्या मतलब है तुम्हारा?

नारद— न मुझे प्राणों का भय है, न असफलता का, न कल का, न कलंक का, और कोई भय है जो तुम जानते हो? अब तुम बताओ क्या तुम निर्भय हो?

रत्नाकर— हाँ, मैं निर्भय हूँ, न मुझे प्राणों का भय है, न असफलता का, न कल का, न कलंक का।

नारद— तो तुम यहाँ इन घने जंगलों में छिपकर क्यों रहते हो? क्या राजा से डरते हो?

रत्नाकर— नहीं !

नारद— क्या प्रजा से डरते हो?

रत्नाकर— नहीं !

नारद— क्या पाप से डरते हो?

रत्नाकर— नहीं !

नारद— तो यहाँ छिपकर क्यों रहते हो?

यह सुनकर रत्नाकर घबरा गया और एकटक देवऋषि को घूरने लगा।

नारद— उत्तर मैं देता हूँ। तुम पाप करते हो और पाप से डरते हो।

रत्नाकर हँसते हुए बोला, नारद तुम अपनी इन बातों से मुझे भ्रमित नहीं कर सकते। न मैं पाप से डरता हूँ, न पुण्य से, न देवताओं से न दानवों से, न राजा से न राज्य से, न दंड से न

विधान से। मैंने राज्य के साथ द्रोह किया है, मैंने समाज के साथ द्रोह किया है, इसलिए मैं यहाँ इन बीहड़ों में रहता हूँ। ये प्रतिशोध है मेरा।

नारद— क्या था वो पाप जिससे तुम डरते हो?

रत्नाकर— मुझे इतना मत उकसाओ कि मैं तुम्हारी हत्या कर दूँ नारद। इतना तो मैं जान ही चुका हूँ कि पाप और पुण्य की परिभाषा हमेशा ताकतवर तय करते हैं और उसे कमजोरों पर थोपते हैं। मैंने साम्राज्यों का विस्तार देखा है, हत्या से, बल से, छल से, मैंने वाणिज्य का विस्तार देखा है, कपट से, अनीति से, अधर्म से, वो पाप नहीं था? मैं सैनिक था, दुष्ट और निर्दयी सौदागरों की भी रक्षा की। वो पाप नहीं था? युद्ध में हारे हुए लोगों की स्त्रियों के साथ पशुता का व्यवहार करने वाले सैनिकों की हत्या क्या की मैंने, मैं पापी हो गया? राजा, सेना और सेनापति का अपराधी हो गया मैं। क्या वो पाप था?

नारद— दूसरों का पाप अपने पाप को सही नहीं ठहरा सकता रत्नाकर।

रत्नाकर चीखते हुए— मैं पापी नहीं हूँ।

नारद— कौन निर्णय करेगा? वो जो इस यात्रा में तुम्हारे साथ हैं या नहीं हैं? क्या तुम्हारी पत्नी, तुम्हारा पुत्र, इस पाप में तुम्हारे साथ हैं?

रत्नाकर— हाँ, वो क्यों साथ नहीं होंगे, मैं जो ये सब करता हूँ, उनके सुख के लिए ही तो करता हूँ।

नारद— तो जो तुम्हारे साथ हैं उन्ही को निर्णायक बनाते हैं। जाओ, अपनी पत्नी से, अपने पुत्र से, अपने पिता से, अपने

निकट सम्बन्धियों से पूछकर आओ, जो तुम कर रहे हो, क्या वो पाप नहीं है, और क्या वे सब इस पाप में तुम्हारे साथ हैं? इस पाप के भागीदार हैं?

रत्नाकर — ठीक है मैं अभी जाकर लौटता हूँ।

और अपने साथियों को नारद को बाँधकर रखने का निर्देश देकर रत्नाकर सीधा अपनी पत्नी के पास जाता है और उससे पूछता है— “ये मैं जो कर रहा हूँ, क्या वो पाप है? क्या तुम इस पाप में मेरी भागीदार हो?”

पत्नी कहती है, “नहीं स्वामी, मैंने आपके सुख में, दुःख में साथ देने की कसम खाई है, आपके पाप में भागीदार बनने की नहीं।”

यह सुन रत्नाकर स्तब्ध रह जाता है। फिर वह अपने अंधे पिता के समक्ष यही प्रश्न दोहराता है, “पिताजी, ये जो मैं कर रहा हूँ, क्या वो पाप है? क्या आप इस पाप में मेरे भागीदार हैं?”

पिताजी बोलते हैं, “नहीं पुत्र, ये तो तेरी कमाई है, इसे मैं कैसे बाँट सकता हूँ।?”

यह सुनते ही मानो रत्नाकर पर बिजली टूट पड़ती है। वह बेहद दुखी हो जाता है और धीरे-धीरे चलते हुए वापस देवऋषि नारद के पास पहुँच जाता है।

नारद— तुम्हारे साथी मुझे अकेला छोड़ जा चुके हैं रत्नाकर।

रत्नाकर, देवऋषि के चरणों में गिरते हुए— क्षमा देवऋषि क्षमा, अब तो मैं भी अकेला ही हूँ।

नारद— नहीं रत्नाकर, तुम्हीं अपने मित्र, और तुम्हीं अपने शत्रु हो, तुम्हारे पुराने संसार की रचना भी तुम्हीं ने की थी। तुम्हारे नए संसार की रचना भी तुम्हीं करोगे। इसलिए उठो और अपने

पुरुषार्थ से अपना भविष्य लिखो। राम—राम, तुम्हारा पथ सुबह हो। मित्रों, इस घटना के पश्चात डाकू रत्नाकर का जीवन पूरी तरह बदल गया, उसने पाप के मार्ग को त्याग पुण्य के मार्ग को अपनाया और आगे चलकर यही डाकू राम—कथा का रचयिता महर्षि वाल्मीकि बना।

उपनिषदों से ली गयी यह कथा बताती है कि मनुष्य असीम संभावनाओं का स्वामी है, जहां एक तरफ वह अपने पुरुषार्थ से राजा बन सकता है तो वहीं अपने आलस्य से रंक भी। वह अपने अविवेक से अपना नाश कर सकता है तो अपने विवेक से अपना निर्वाण भी। यानि, हम सब अपने आपमें महाशक्तिशाली हैं, पर हममें से ज्यादातर लोग पूरे जीवन काल में अपनी असीम शक्तियों का एक छोटा सा हिस्सा भी प्रयोग नहीं कर पाते। क्यों न हम भी डाकू रत्नाकर की तरह सामान्यता को त्याग कर उत्कृष्टता की ओर बढ़ चलें !

ईश्वर दिखाई नहीं देता

आज हम एक महान संत से सम्बंधित एक प्रेरक प्रसंग आपसे साझा कर रहे हैं। तेरहवीं सदी में महाराष्ट्र में एक प्रसिद्ध संत हुए संत नामदेव। इनके बारे में प्रसिद्ध है कि जब वे बहुत छोटे थे तभी से भगवान की भक्ति में डूबे रहते थे। बालकाल में ही एक बार उनकी माता ने उन्हें भगवान विठोबा को प्रसाद चढ़ाने के लिए दिया तो वे उसे लेकर मंदिर पहुंचे और उनके हठ के आगे भगवान को स्वयं प्रसाद ग्रहण करने आना पड़ा।

एक बार संत नामदेव अपने शिष्यों को ज्ञान-भक्ति का प्रवचन दे रहे थे। तभी श्रोताओं में बैठे किसी शिष्य ने एक प्रश्न किया, “गुरुवर, हमें बताया जाता है कि ईश्वर हर जगह मौजूद है, पर यदि ऐसा है तो वो हमें कभी दिखाई क्यों नहीं देता, हम कैसे मान लें कि वो सचमुच है, और यदि वो है तो हम उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं?”

नामदेव मुस्कुराये और एक शिष्य को एक लोटा पानी और थोड़ा सा नमक लाने का आदेश दिया।

शिष्य तुरंत दोनों चीजें लेकर आ गया।

वहां बैठे शिष्य सोच रहे थे कि भला इन चीजों का प्रश्न से क्या सम्बन्ध, तभी संत नामदेव ने पुनः उस शिष्य से कहा, “पुत्र, तुम नमक को लोटे में डालकर मिला दो।”

शिष्य ने ठीक वैसा ही किया।

संत बोले, “बताइये, क्या इस पानी में किसी को नमक दिखाई दे रहा है?”

सबने ‘नहीं’ में सिर हिला दिए।

“ठीक है!, अब कोई ज़रा इसे चख कर देखे, क्या चखने पर नमक का स्वाद आ रहा है?”, संत ने पूछा।

“जी”, एक शिष्य पानी चखते हुए बोला।

“अच्छा, अब जरा इस पानी को कुछ देर उबालो।”, संत ने निर्देश दिया।

कुछ देर तक पानी उबलता रहा और जब सारा पानी भाप बनकर उड़ गया, तो संत ने पुनः शिष्यों को लोटे में देखने को कहा और पूछा, “क्या अब आपको इसमें कुछ दिखाई दे रहा है?”

“जी, हमें नमक के कण दिख रहे हैं।”, एक शिष्य बोला।

संत मुस्कराये और समझाते हुए बोले, “जिस प्रकार तुम पानी में नमक का स्वाद तो अनुभव कर पाये पर उसे देख नहीं पाये उसी प्रकार इस जग में तुम्हें ईश्वर हर जगह दिखाई नहीं देता पर तुम उसे अनुभव कर सकते हो। और जिस तरह अग्नि के ताप से पानी भाप बनकर उड़ गया और नमक दिखाई देने लगा उसी प्रकार तुम भक्ति, ध्यान और सत्कर्म द्वारा अपने विकारों का अंत कर भगवान को प्राप्त कर सकते हो।”

डाकू अंगुलिमाल

यह एक सच्ची प्राचीन व ऐतिहासिक कहानी है। मगध देश की जनता में आतंक छाया हुआ था। अँधेरा होते ही लोग घरों से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं जुटा पाते थे, कारण था अंगुलिमाल। अंगुलिमाल एक खूँखार डाकू था जो मगध देश के जंगल में रहता था। जो भी राहगीर उस जंगल से गुजरता था, वह उसे रास्ते में लूट लेता था और उसे मारकर उसकी एक उँगली काटकर माला के रूप में अपने गले में पहन लेता था। इसी कारण लोग उसे "अंगुलिमाल" कहते थे।

एक दिन उस गाँव में महात्मा बुद्ध आए। लोगों ने उनका खूब स्वागत-सत्कार किया। महात्मा बुद्ध ने देखा वहाँ के लोगों में कुछ डर-सा समाया हुआ है। महात्मा बुद्ध ने लोगों से इसका कारण जानना चाहा। लोगों ने बताया कि इस डर और आतंक का कारण डाकू अंगुलिमाल है। वह निरपराध राहगीरों की हत्या कर देता है। महात्मा बुद्ध ने मन में निश्चय किया कि उस डाकू से अवश्य मिलना चाहिए।

बुद्ध जंगल में जाने को तैयार हो गए तो गाँव वालों ने उन्हें बहुत रोका क्योंकि वे जानते थे कि अंगुलिमाल के सामने से बच पाना मुश्किल ही नहीं असंभव भी है। लेकिन बुद्ध अत्यंत शांत भाव से जंगल में चले जा रहे थे। तभी पीछे से एक कर्कश आवाज कानों में पड़ी— "ठहर जा, कहाँ जा रहा है?"

बुद्ध ऐसे चलते रहे मानो कुछ सुना ही नहीं। पीछे से और जोर से आवाज आई—“मैं कहता हूँ ठहर जा।” बुद्ध रुक गए और पीछे पलटकर देखा तो सामने एक खूँखार काला व्यक्ति खड़ा था। लंबा—चौड़ा शरीर, बड़े हुए बाल, एकदम काला रंग, लंबे—लंबे नाखून, लाल—लाल आँखें, हाथ में तलवार लिए वह बुद्ध को घूर रहा था। उसके गले में उँगलियों की माला लटक रही थी। वह बहुत ही डरावना लग रहा था।

बुद्ध ने शांत व मधुर स्वर में कहा— “मैं तो ठहर गया। भला तू कब ठहरेगा?”

अंगुलिमाल ने बुद्ध के चेहरे की ओर देखा, उनके चेहरे पर बिल्कुल भय नहीं था जबकि जिन लोगों को वह रोकता था, वे भय से थर—थर काँपने लगते थे। अंगुलिमाल बोला— “हे सन्यासी! क्या तुम्हें डर नहीं लग रहा है? देखो, मैंने कितने लोगों को मारकर उनकी उँगलियों की माला पहन रखी है।”

बुद्ध बोले—“तुझसे क्या डरना? डरना है तो उससे डरो जो सचमुच ताकतवर है।” अंगुलिमाल जोर से हँसा—‘हे साधु! तुम समझते हो कि मैं ताकतवर नहीं हूँ। मैं तो एक बार में दस—दस लोगों के सिर काट सकता हूँ।’

बुद्ध बोले—‘यदि तुम सचमुच ताकतवर हो तो जाओ उस पेड़ को दस पत्ते तोड़ लाओ।’ अंगुलिमाल ने तुरंत दस पत्ते तोड़े और बोला—‘इसमें क्या है? कहो तो मैं पेड़ ही उखाड़ लाऊँ।’ महात्मा बुद्ध ने कहा—‘नहीं, पेड़ उखाड़ने की जरूरत नहीं है। यदि तुम वास्तव में ताकतवर हो तो जाओ इन पत्तियों को पेड़ में जोड़ दो।’ अंगुलिमाल क्रोधित हो गया और बोला—‘भला कहीं टूटे हुए पत्ते भी जुड़ सकते हैं।’ महात्मा बुद्ध ने कहा—‘तुम जिस चीज को जोड़ नहीं सकते, उसे तोड़ने का अधिकार तुम्हें किसने दिया?’

एक आदमी का सिर जोड़ नहीं सकते तो काटने में क्या बहादुरी है? अंगुलिमाल अवाक रह गया। वह महात्मा बुद्ध की बातों को सुनता रहा। एक अनजानी शक्ति ने उसके हृदय को बदल दिया। उसे लगा कि सचमुच उससे भी ताकतवर कोई है। उसे आत्मग्लानि होने लगी।

वह महात्मा बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा और बोला—‘हे महात्मन! मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं भटक गया था। आप मुझे शरण में ले लीजिए।’ भगवान बुद्ध ने उसे अपनी शरण में ले लिया और अपना शिष्य बना लिया। आगे चलकर यही अंगुलिमाल एक बहुत बड़ा साधु हुआ।

सहनशीलता

एक बार छत्रपति शिवाजी महाराज जंगल में शिकार करने निकले। अभी वे जंगल में कुछ दूर ही आगे बढ़े थे कि एक पत्थर आकर उनके सिर पे लगा। शिवाजी क्रोधित हो उठे, और इधर-उधर देखने लगे, पर उन्हें कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था, तभी शिवाजी को पेड़ों के पीछे से एक बुढ़िया सामने आती दिखी उसने कहा, “ये पत्थर मैंने फेंका था!”

“आपने ऐसा क्यों किया?“, शिवाजी के पूछने पर बुढ़िया बोली—
“क्षमा कीजियेगा महाराज, मैं तो आम के इस पेड़ से कुछ आम तोड़ना चाहती थी, पर बूढ़ी होने के कारण मैं इस पर चढ़ नहीं सकती इसलिए पत्थर मारकर फल तोड़ रही थी, पर गलती से वो पत्थर आपको जा लगा।”

निश्चित ही वह औरत सजा की हकदार थी कोई साधारण व्यक्ति ऐसी गलती से क्रोधित हो उठता और गलती करने वाले को सजा देता, पर शिवाजी कोई साधारण व्यक्ति तो थे नहीं वे महानता के प्रतीक थे, भला वे ऐसा कैसे करते।

उन्होंने सोचा, “यदि यह साधारण सा एक पेड़ इतना सहनशील और दयालु हो सकता है जो कि मारने वाले को भी मीठे फल देता हो तो भला मैं एक राजा होकर सहनशील और दयालु क्यों नहीं हो सकता?”

और ऐसा सोचते हुए उन्होंने बुढ़िया को कुछ स्वर्ण मुद्राएं भेंट कर दीं।

मित्रों, सहनशीलता और दया कमजोरों नहीं बल्कि वीरों के गुण हैं। आज जबकि छोटी-छोटी बातों पर लोगों का क्रोधित हो जाना और मार-पीट पर उतर आना आम होता जा रहा है ऐसे में शिवाजी के जीवन का यह प्रसंग हमें सहिष्णु और दयालु बनने की सीख देता है।

राजा महाराणा प्रताप

भारत के इतिहास में राजा महाराणा प्रताप का नाम अमर है। महाराणा प्रताप राजस्थान के शूरवीर एवं स्वाभिमानी राजा थे। जयपुर के राजा मान सिंह ने अकबर द्वारा अपने राज्य को कष्ट न हो; इसलिए अपनी बहन का विवाह अकबर से किया। एक बार अपने वैभव के प्रदर्शन हेतु राजपूत दिल्ली जाते समय मार्ग में स्थित महाराणा प्रताप से मिलने कुंभलगढ़ गये। महाराणा प्रताप ने उन सभी का योग्य आदर सत्कार किया; परंतु उसने साथ बैठकर भोजन न करने की इच्छा व्यक्त की। मान सिंह द्वारा कारण पूछने पर महाराणा प्रताप ने कहा, "मुगल शासक से अपने राज्य की रक्षा करने की अपेक्षा अपनी बेटी-बहनों को मुगलों के हाथ देकर उनसे राज्य की रक्षा कराने वाले स्वाभिमान रहित राजपूतों के साथ बैठकर मैं भोजन नहीं करता।" महाराणा प्रताप द्वारा कहे गए कटु सत्य सुनकर मान सिंह भोजन की थाली छोड़, उठ खड़ा हुआ और क्रोधित होकर चिल्लाया, "महाराणा प्रताप ! रणक्षेत्र में तेरा सत्यानाश नहीं किया, तो मेरा नाम मानसिंह नहीं!"

कुछ समय उपरांत मान सिंह, अकबर के पुत्र सलीम एवं प्रचंड सैन्य के साथ महाराणा प्रताप से युद्ध करने आया। यह सूचना मिलते ही महाराणा प्रताप ने अरावली पर्वत के पास मार्ग पर मान सिंह की सेना पर आक्रमण कर दिया और उनकी अधिकांश सेना को मिट्टी में मिला दिया। महाराणा प्रताप की तलवार से सलीम का वध होने वाला था; परंतु वह वार उसके हाथी पर हुआ और सलीम बच गया। महाराणा प्रताप की तलवार के भय से मान सिंह सेना के पीछे था। महाराणा अपनी धारदार चमकती

तलवार को शत्रु के घेरे में ऐसे चला रहे थे कि उनका जौहर देखते बनता था। इतने में किसी शत्रु सैनिक ने महाराणाजी के घोड़े 'चेतक' के एक पैर में तीर मारकर उसे घायल कर दिया। ऐसी स्थिति में भी वह स्वामीनिष्ठ घोड़ा अपनी पीठ पर बैठे महाराणाजी को बचाने के लिए भागकर उस घेरे को भेदने का प्रयास करने लगा। इतने में मार्ग में नाला आया। चेतक ने छलांग लगाकर वह नाला पार किया, परंतु हृदय गति रुकने के कारण उसने अपने प्राण त्याग दिए।

महाराणा प्रतापजी ने पीछे मुड़कर देखा, तो अकबर की सेना में भर्ती हुआ उनका छोटा भाई शक्ति सिंह, चार-पांच मुगल सैनिकों को जान से मार रहा था। वह दृश्य देखकर महाराणाजी आश्चर्यचकित हुए। इतने में उन पांच सैनिकों के प्राण लेकर शक्ति सिंह महाराणा के पास आया एवं उन्हें आलिंगन में लेकर कहने लगा, "भैया! मैं मुगलों की सेना में हूँ, तो भी आपके असीम शौर्य, पराक्रम के कारण आप ही मेरा आदर्श हैं। मैं आपके इस स्वामीनिष्ठ घोड़े से भी तुच्छ हूँ।"

मेवाड़ का इतिहास लिखने वाले कर्नल टॉण्ड ने महाराणा प्रतापजी का गौरव बताते हुए कहा है, उत्कृष्ट, महत्वाकांक्षी, शासन निपुणता एवं अपरिमित साधन-संपत्ति के बल पर अकबर ने दृढ़निश्चयी, धैर्यशील, उज्ज्वल कीर्तिमान और साहसी महाराणा प्रताप के आत्मबल को गिराने का प्रयास किया; परंतु वह निष्फल हुआ।

बालमित्रों, यदि हम सर्व प्राणी मात्र से प्रेम करें, तो पशु भी हमसे प्रेम करने लगते हैं। यह आपको घोड़े 'चेतक' के उदाहरण से ज्ञात होगा। उस स्वामीनिष्ठ घोड़े ने अपने प्राणों की चिंता किये बिना राजा को बचाया। महाराणा प्रताप के भाई शक्ति सिंह ने भी स्वामीनिष्ठ चेतक को श्रेष्ठ बताया। हमें भी सबसे प्रेम करना सीखना चाहिए। साथ ही अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

शिबी नामक राजा

अतिप्राचीन काल में शिबी नामक एक राजा था। वह बहुत दयालु और न्यायी राजा था। यदि कोई सहायता मांगने के लिए आए, तो राजा उन्हें सहायता किए बिना नहीं रहता था। एक बार एक कबूतर उड़ते हुए शिबी राजा के सामने आया। वह भय से कांप रहा था। राजा शिबी ने उसे प्रेम से हाथ में लिया। उसी क्षण एक क्रूर चील उड़ते हुए वहां पहुंचा। उसने राजा शिबी से कहा, “महाराज, मुझे मेरा कबूतर दे दीजिए।”

शिबी ने कहा, “यह कबूतर मेरी शरण में आया है। यदि मैंने इसे तुम्हारे हाथ दिया तो तुम उसे खा जाओगे। इसलिए इसका पाप मुझे लगेगा।” चील ने कहा, “मुझे बहुत भूख लगी है और यह कबूतर मेरा अन्न है। यदि यह अन्न आपने मुझसे छीन लिया, तो मैं मर जाऊंगा। इसलिए तो क्या इसका पाप आपको नहीं लगेगा?” राजा ने कहा, “तुम दूसरा कोई भी अन्न मुझसे मांग लो, मैं तुम्हें अवश्य दूंगा।” चील ने कहा, “ठीक है। इस कबूतर के जितना भार होगा, उतना मांस आप आपने शरीर से काटकर दें।”

राजा ने यह बात स्वीकार की। तराजू के एक पलड़े में कबूतर रखा गया और दूसरे पलड़े में अपने शरीर का मांस काटकर रख दिया। तब भी कबूतर का पलड़ा भारी था। अंत में राजा स्वयं ही पलड़े में बैठने लगे। साक्षात् अग्निदेव ने कबूतर का और इंद्रदेव ने चील का रूप लिया था। दोनों अपने झूठे रूप फेंककर अपने वास्तव रूप में राजा के सामने प्रकट हुए। राजा

ने दोनों देवताओं को नमस्कार किया। वे दोनों बोले, “राजा, हम आपकी परीक्षा लेने के लिए आए थे। आप वास्तव में ही दयालु और न्यायी हो! आपके बारे में सुनकर हमने आपकी परीक्षा लेनी चाही, और आप इस परीक्षा में सफल भी हुए हैं। आप युगों—युगों तक अपनी दयालुता व न्याय के लिए जाने जायेंगे। और यह कहकर दोनों देव गायब हो गए। देवताओं के जाते ही राजा पहले की भांति ठीक हो गया। और मृत्यु के बाद स्वर्ग को चला गया।

मेरी ताकत

जापान के एक छोटे से कस्बे में रहने वाला एक दस वर्षीय बालक जिसका नाम श्युयौंग था वह जूडो सीखने का बहुत शौकीन था। पर बचपन में हुई एक दुर्घटना में उसका बायाँ हाथ कट जाने के कारण उसके माता-पिता उसे जूडो सीखने की आज्ञा नहीं देते थे। पर अब वो बड़ा हो रहा था और उसकी जिद भी बढ़ती जा रही थी।

अंततः माता-पिता को झुकना ही पड़ा और वो श्युयौंग को नजदीकी शहर के एक मशहूर मार्शल आर्ट्स गुरु के यहाँ दाखिला दिलाने ले गए।

गुरु ने जब श्युयौंग को देखा तो उन्हें अचरज हुआ कि, बिना बाएँ हाथ का यह लड़का भला जूडो क्यों सीखना चाहता है?

उन्होंने पूछा, "तुम्हारा तो बायाँ हाथ ही नहीं है तो भला तुम और लड़कों का मुकाबला कैसे करोगे।"

"ये बताना तो आपका काम है", श्युयौंग ने कहा। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि मुझे सभी को हराना है और एक दिन खुद "सैंसेई" (मास्टर) बनना है।"

गुरु उसकी सीखने की दृढ़ इच्छा शक्ति से काफी प्रभावित हुए और बोले, "ठीक है मैं तुम्हें सिखाऊंगा लेकिन एक शर्त है, तुम मेरे हर एक निर्देश का पालन करोगे और उसमें दृढ़ विश्वास रखोगे।"

शुयौंग ने सहमति में गुरु के समक्ष अपना सिर झुका दिया।

गुरु ने एक साथ लगभग पचास छात्रों को जूडो सिखना शुरू किया। शुयौंग भी अन्य लड़कों की तरह सीख रहा था। पर कुछ दिनों बाद उसने ध्यान दिया कि गुरु जी अन्य लड़कों को अलग-अलग दांव-पेंच सिखा रहे हैं लेकिन वह अभी भी उसी एक किक का अभ्यास कर रहा है जो उसने शुरू में सीखी थी। उससे रहा नहीं गया और उसने गुरु से पूछा, “गुरुजी आप अन्य लड़कों को नयी-नयी चीजें सीखा रहे हैं, पर मैं अभी भी बस वही एक किक मारने का अभ्यास कर रहा हूँ। क्या मुझे और चीजें नहीं सीखनी चाहिये?”

गुरुजी बोले, “तुम्हें बस इसी एक किक पर महारथ हासिल करने की आवश्यकता है” और वो आगे बढ़ गए।

शुयौंग को विस्मय हुआ पर उसे अपने गुरु में पूर्ण विश्वास था और वह फिर अभ्यास में जुट गया।

समय बीतता गया और देखते-देखते दो साल गुजर गए, पर शुयौंग उसी एक किक का अभ्यास कर रहा था। एक बार फिर शुयौंग को चिंता होने लगी और उसने गुरु से कहा, “क्या अभी भी मैं बस यही करता रहूँगा और बाकी सभी नयी तकनीकों में पारंगत होते रहेंगे?”

गुरुजी बोले, “तुम्हें मुझमें यकीन है तो अभ्यास जारी रखो”

शुयौंग ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए बिना कोई प्रश्न पूछे अगले 6 साल तक उसी एक किक का अभ्यास जारी रखा।

सभी को जूडो सीखते आठ साल हो चुके थे कि तभी एक दिन गुरुजी ने सभी शिष्यों को बुलाया और बोले “मुझे आपको जो ज्ञान देना था वो मैं दे चुका हूँ और अब गुरुकुल की परंपरा के

अनुसार सबसे अच्छे शिष्य का चुनाव एक प्रतिस्पर्धा के माध्यम से किया जायेगा और जो इसमें विजयी होने वाले शिष्य को "सेंसेई" की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा।"

प्रतिस्पर्धा आरम्भ हुई। गुरुजी ने शूयोंग को उसके पहले मैच में हिस्सा लेने के लिए आवाज़ दी।

शूयोंग ने लड़ना शुरू किया और खुद को आश्चर्यचकित करते हुए उसने अपने पहले दो मैच बड़ी आसानी से जीत लिए। तीसरा मैच थोड़ा कठिन था, लेकिन कुछ संघर्ष के बाद विरोधी ने कुछ क्षणों के लिए अपना ध्यान उस पर से हटा दिया, शूयोंग को तो मानो इसी मौके का इंतज़ार था, उसने अपनी अचूक किक विरोधी के ऊपर जमा दी और मैच अपने नाम कर लिया। अभी भी अपनी सफलता से आश्चर्य में पड़े शूयोंग ने फाइनल में अपनी जगह बना ली। इस बार विरोधी कहीं अधिक ताकतवर, अनुभवी और विशाल था। देखकर ऐसा लगता था कि शूयोंग उसके सामने एक मिनट भी टिक नहीं पायेगा। मैच शुरू हुआ, विरोधी शूयोंग पर भारी पड़ रहा था, रेफरी ने मैच रोक कर विरोधी को विजेता घोषित करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन तभी गुरुजी ने उसे रोकते हुए कहा, "नहीं, मैच पूरा चलेगा" मैच फिर से शुरू हुआ।

विरोधी अतिआत्मविश्वास से भरा हुआ था और अब शूयोंग को कम आंक रहा था। और इसी दंभ में उसने एक भारी गलती कर दी, उसने अपना गार्ड छोड़ दिया!! शूयोंग ने इसका फायदा उठाते हुए आठ साल तक जिस किक की प्रैक्टिस की थी उसे पूरी ताकत और सटीकता के साथ विरोधी के ऊपर जड़ दी और उसे ज़मीन पर धराशाई कर दिया। उस किक में इतनी शक्ति थी कि विरोधी वहीं मूर्छित हो गया और शूयोंग को विजेता घोषित कर दिया गया।

मैच जीतने के बाद श्रुयौंग ने गुरु से पूछा, “संसेई , भला मैंने यह प्रतियोगिता सिर्फ एक मूव सीखकर कैसे जीत ली?”

“तुम दो वजहों से जीते,” गुरुजी ने उत्तर दिया “पहला, तुमने जूडो की एक सबसे कठिन किक पर अपनी इतनी मास्टरी कर ली कि शायद ही इस दुनिया में कोई और यह किक इतनी दक्षता से मार पाए, और दूसरा कि इस किक से बचने का एक ही उपाय है, और वह है विरोधी के बाएँ हाथ को पकड़कर उसे ज़मीन पर गिराना।”

श्रुयौंग समझ चुका था कि आज उसकी सबसे बड़ी कमजोरी ही उसकी सबसे बड़ी ताकत बन चुकी थी।

मित्रों इंसान होने का मतलब ही है अपूर्ण होना। दोष अपने आप में बुरे नहीं होते, बुरा होता है हमारा उसे समझने का तरीका अगर श्रुयौंग चाहता तो अपने बाएँ हाथ के न होने का रोना रोकर एक अपाहिज की तरह जीवन बिता सकता था, लेकिन उसने इस वजह से कभी खुद को हीन नहीं महसूस होने दिया। उसमें अपने सपने को साकार करने की दृढ़ इच्छा थी और यकीन जानिये जिसके अन्दर यह इच्छा होती है भगवान उसकी मदद के लिए कोई न कोई गुरु भेज देता है, ऐसा गुरु जो उसकी सबसे बड़ी कमजोरी को ही उसकी सबसे बड़ी ताकत बना उसके सपने साकार कर सकता है।

महानता के बीज

एक गाँव का लड़का जंगल में लकड़ियाँ काट के शाम को पास वाले शहर के बाजार में बेचकर अपना गुजारा करता था। वह इस संसार में अकेला था। एक दिन एक व्यक्ति बाजार से जा रहा था। उसने देखा कि उस बालक का गट्टर बहुत ही सुन्दर व मजबूती से बंधा हुआ है।

उसने उस लड़के से पूछा— “क्या यह गट्टर तुमने बांधा है?”

लड़के ने जवाब दिया “जी हाँ, मैं दिनभर लकड़ी काटता हूँ, स्वयं गट्टर बांधता हूँ और रोज शाम को गट्टर बाजार में बेचता हूँ” पर उस व्यक्ति को उस पर यकीन नहीं हुआ।

उस व्यक्ति ने अनुरोध किया “क्या तुम इसे खोलकर इसी प्रकार दुबारा बांध सकते हो?”

“जी हाँ, यह देखिए”—इतना कहते हुए लड़के ने गट्टर खोला तथा बड़े ही सुन्दर तरीके से पुनः उसे बांध दिया। यह कार्य वह बड़े ध्यान, लगन और फुर्ती के साथ कर रहा था।

लड़के की एकाग्रता, लगन तथा कलात्मक रीति से काम करने का तरीका देख उस व्यक्ति ने कहा “क्या तुम मेरे साथ चलोगे? मैं तुम्हें शिक्षा दिलाऊंगा और तुम्हारा सारा व्यय वहन करूँगा।”

बालक ने सोच—विचार कर अपनी स्वीकृति दे दी और उसके साथ चला गया। उस व्यक्ति ने बालक के रहने और उसकी

शिक्षा का प्रबंध किया। वह स्वयं भी उसे पढ़ाता था। थोड़े ही समय में उस बालक ने अपनी लगन तथा कुशाग्र बुद्धि के बल पर उच्च शिक्षा आत्मसात कर ली। बड़ा होने पर यही बालक यूनान के महान दार्शनिक पाइथागोरस के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह भला आदमी जिसने बालक के भीतर पड़े महानता के बीज को पहचान कर उसे पल्लवित किया, वह था यूनान का विख्यात तत्वज्ञानी डेमोक्रीटस।

इस कहानी से हम सीख ले सकते हैं कि हमें छोटे-छोटे कार्य भी लगन एवं ईमानदारी से करने चाहिये, उसी में महानता के बीज छिपे होते हैं।

शिष्टाचार

स्वामी विवेकानंदजी ने कहा है कि—विश्व में अधिकांश लोग इसलिए असफल हो जाते हैं, क्योंकि उनमें समय पर साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो उठते हैं। स्वामीजी की कही सभी बातें हमें उनके जीवन काल की घटनाओं में सजीव दिखाई देती हैं। उपरोक्त लिखे वाक्य को शिकागो की एक घटना ने सजीव कर दिया, किस तरह विपरीत परिस्थिति में भी उन्होंने भारत को गौरवान्वित किया। हमें बहुत गर्व होता है कि हम इस देश के निवासी हैं जहाँ विवेकानंदजी जैसे महान संतों का मार्गदर्शन मिला। आज मैं आपके साथ शिकागो धर्म सम्मेलन से सम्बंधित एक छोटा सा वृत्तान्त बता रही हूँ जो भारतीय संस्कृति में समाहित शिष्टाचार की ओर इंगित करता है।

1893 में शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन चल रहा था। स्वामी विवेकानंद भी उसमें बोलने के लिए गये हुए थे। 11 सितंबर को स्वामीजी का व्याख्यान होना था। मंच पर ब्लैक बोर्ड पर लिखा हुआ था— हिन्दू धर्म—मुर्दा धर्म। कोई साधारण व्यक्ति इसे देखकर क्रोधित हो सकता था, पर स्वामीजी भला ऐसा कैसे कर सकते थे। वह बोलने के लिये खड़े हुए और उन्होंने सबसे पहले (अमरीकावासी बहनों और भाइयों) शब्दों के साथ श्रोताओं को संबोधित किया। स्वामीजी के शब्द ने जादू कर दिया, पूरी सभा ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया।

इस हर्ष का कारण था, स्त्रियों को पहला स्थान देना। स्वामीजी ने सारी वसुधा को अपना कुटुंब मानकर सबका स्वागत किया था। भारतीय संस्कृति में निहित शिष्टाचार का यह तरीका किसी को न सूझा था। इस बात का अच्छा प्रभाव पड़ा। श्रोता मंत्रमुग्ध उनको सुनते रहे, निर्धारित 5 मिनट कब बीत गया पता ही न चला। अध्यक्ष कार्डिनल गिबन्स ने और आगे बोलने का अनुरोध किया। स्वामीजी 20 मिनट से भी अधिक देर तक बोलते रहे।

स्वामीजी की धूम सारे अमेरिका में मच गई। देखते ही देखते हजारों लोग उनके शिष्य बन गए। और तो और, सम्मेलन में कभी शोर मचता तो यह कहकर श्रोताओं को शान्त कराया जाता कि यदि आप चुप रहेंगे तो स्वामी विवेकानंदजी का व्याख्यान सुनने का अवसर दिया जायेगा। सुनते ही सारी जनता शान्त होकर बैठ जाती।

अपने व्याख्यान से स्वामीजी ने यह सिद्ध कर दिया कि हिन्दू धर्म भी श्रेष्ठ है, जिसमें सभी धर्मों को अपने अंदर समाहित करने की क्षमता है। भारतीय संस्कृति, किसी की अवमानना या निंदा नहीं करती। इस तरह स्वामी विवेकानंदजी ने सात समंदर पार भारतीय संस्कृति की ध्वजा फहराई।

बुद्धि की सुन्दरता

महाकवि कालिदास राजा विक्रमादित्य के प्रमुख दरबारियों में से एक थे। एक बार राजा विक्रमादित्य ने महाकवि कालिदास से एक सवाल पूछा;

महात्मन आप इतने बड़े विद्वान हैं लेकिन आपका शरीर आपकी बुद्धि के अनुसार सुन्दर नहीं है। इसकी क्या वजह है?

कालीदास मुस्कुराते हुए, चुप रहे और बात को उस समय टाल गए। कुछ दिन बाद महाराज ने अपने सेवक से पीने के लिए पानी मांगा।

सेवक कालिदास के निर्देशानुसार दो बर्तनों में पानी ले आया।

एक बर्तन साधारण मिट्टी का था तो दूसरा बहुमुल्य धातु का था। महाराज ने आश्चर्य से इस तरह पानी लाने की वजह पूछी तो कालिदास ने आग्रह कर उन्हें दोनों बर्तनों से पानी पीने को कहा।

महाराज ने ऐसा ही किया।

पानी पीने के पश्चात कालिदास ने महाराज से पूछा, “महाराज इन दोनों बर्तनों में से किस बर्तन का पानी ज्यादा शीतल लगा?”

राजा विक्रमादित्य बोले “अवश्य मिट्टी के बर्तन का।”

कालिदास मुस्कुराए और बोले, "राजन जिस प्रकार पानी की शीतलता बर्तन की सुन्दरता पर निर्भर नहीं करती उसी प्रकार बुद्धि की सुन्दरता शरीर की सुन्दरता पर निर्भर नहीं करती।"

राजा को अपने सवाल का जवाब मिल चुका था।

अमरत्व के फल

एक बार महात्मा बुद्ध एक गाँव में घूमते हुए एक किसान के घर के पास पानी पीने पहुँचे। किसान ने बुद्ध को पानी पिलाया और बोला, 'महाराज, मैं एक साधारण किसान हूँ। बीज बोकर, हल चलाकर अनाज उत्पन्न करता हूँ और तब उसे ग्रहण करता हूँ। किंतु इससे मेरे मन को तसल्ली नहीं मिलती। मैं कुछ ऐसा करना चाहता हूँ जिससे मेरे खेत में कभी हल न चलाना पड़े और फल भी उत्पन्न हो जाये। आप मुझे मार्गदर्शन दीजिए जिससे मेरे खेत में अमरत्व के फल उत्पन्न होने लगें।'

बात सुनकर बुद्ध मुस्कुराकर बोले, 'भले व्यक्ति, तुम्हें अमरत्व का फल तो अवश्य मिल सकता है किंतु इसके लिए तुम्हें खेत में बीज न बोकर अपने मन में बीज बोने होंगे?' यह सुनकर किसान हैरानी से बोला, 'प्रभु, आप यह क्या कह रहे हैं? भला मन के बीज बोकर भी फल प्राप्त हो सकते हैं।'

बुद्ध बोले, 'बिल्कुल हो सकते हैं और इन बीजों से तुम्हें जो फल प्राप्त होंगे वे वाकई साधारण न होकर अद्भुत होंगे जो तुम्हारे जीवन को भी सफल बनाएंगे और तुम्हें नेकी की राह दिखाएंगे।' किसान ने कहा, 'प्रभु, तब तो मुझे अवश्य बताइए कि मैं मन में बीज कैसे बोऊँ?' बुद्ध बोले, 'तुम मन में विश्वास के बीज बोओ, विवेक का हल चलाओ, ज्ञान के जल से उसे सींचो और उसमें नम्रता का उर्वरक डालो। इससे तुम्हें अमरत्व का फल प्राप्त होगा। उसे खाकर तुम्हारे सारे दुःख दूर हो जाएंगे और तुम्हें

असीम शांति का अनुभव होगा।' बुद्ध से अमरत्व के फल की प्राप्ति की बात सुनकर किसान की आंखें खुल गईं। वह समझ गया कि अमरत्व का फल सद्विचारों के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

सफलता का रहस्य

एक बार सुकरात से एक नवयुवक ने पूछा कि सफलता का क्या रहस्य है?

सुकरात ने उस नवयुवक से कहा कि तुम आज शाम मुझे नदी के किनारे मिलना तभी बतलाऊंगा। शाम को जब सुकरात नदी के किनारे पहुंचे तो वह नवयुवक वहीं उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। फिर सुकरात ने नौजवान से उनके साथ नदी की तरफ बढ़ने को कहा। और जब आगे बढ़ते-बढ़ते पानी गले तक पहुँच गया, तभी अचानक सुकरात ने उस लड़के का सिर पकड़ के पानी में डुबो दिया। लड़का बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगा, लेकिन सुकरात ताकतवर थे और उसे तब तक डुबोये रखे जब तक कि उसका दम नहीं घुटने लगा। फिर सुकरात ने उसका सिर पानी से बाहर निकाल दिया और बाहर निकलते ही उस लड़के का सबसे पहला जो कार्य था हाँफते-हाँफते तेजी से सांस लेना।

सुकरात ने पूछा, “जब तुम नदी के अंदर थे तो तुम सबसे ज्यादा क्या चाहते थे?”

लड़के ने उत्तर दिया, “सांस लेना”

सुकरात ने कहा, “यही सफलता का रहस्य है। जब तुम सफलता को दिल से पाना चाहोगे जितना कि तुम सांस लेना चाहते थे तो वो तुम्हें मिल जाएगी” इसके अलावा और कोई रहस्य नहीं है।

एहसान

एक बहेलिया था। एक बार जंगल में उसने चिड़िया फंसाने के लिए अपना जाल फैलाया। थोड़ी देर बाद ही एक बाज़ उसके जाल में फंस गया। वह उसे घर लाया और उसके पंख काट दिए। अब बाज़ उड़ नहीं सकता था, बस उछल-उछलकर घर के आस-पास ही घूमता रहता।

उस बहेलिए के घर के पास ही एक शिकारी रहता था। बाज़ की यह हालत देखकर उससे सहन नहीं हुआ। वह बहेलिए के पास गया और कहा— “मित्र, जहां तक मुझे मालूम है, तुम्हारे पास एक बाज़ है, जिसके तुमने पंख काट दिए हैं। बाज़ तो शिकारी पक्षी है। छोटे-छोटे जानवर खाकर अपना भरण-पोषण करता है। इसके लिए उसका उड़ना जरूरी है। मगर उसके पंख काटकर तुमने उसे अपंग बना दिया है। फिर भी क्या तुम उसे मुझे बेच दोगे?”

बहेलिए के लिए बाज़ कोई काम का पक्षी तो था नहीं, अतः उसने उस शिकारी की बात मान ली और कुछ पैसे के बदले बाज़ उसे दे दिया।

शिकारी बाज़ को अपने घर ले आया और उसकी दवा-दारु करने लगा। दो माह में बाज़ के नए पंख निकल आए। वे पहले जैसे ही बड़े थे। अब वह उड़ सकता था।

जब शिकारी को यह बात समझ में आ गई तो उसने बाज़ को खुले आकाश में छोड़ दिया। बाज़ ऊंचे आकाश में उड़ गया।

शिकारी यह सब देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। बाज़ भी बहुत प्रसन्न था और शिकारी पर बहुत कृतज्ञ था।

अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बाज़ एक खरगोश मारकर शिकारी के पास लाया।

एक लोमड़ी, जो यह सब देख रही थी, बाज़ से बोली— “मित्र! जो तुम्हें हानि नहीं पहुंचा सकता उसे प्रसन्न करने से क्या लाभ?”

इसके उत्तर में बाज़ ने कहा— “व्यक्ति को हर उस व्यक्ति का एहसान मानना चाहिए, जिसने उसकी सहायता की हो और ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिए जो हानि पहुंचा सकते हों।”

सीख : व्यक्ति को सदा सहायता करने वाले का कृतज्ञ रहना चाहिए।

फिर नहीं ललकारा

बैडी सियार को इन दिनों पहलवानी का शौक चढ़ा था। उसने अच्छी-खासी रकम देकर जंबों हाथी से पहलवान के गुण भी सीख लिए थे। जंबों हाथी ने एक दिन बैडी सियार से कहा—“अब तुम अच्छे पहलवान बन गए हो। मैंने तुम्हें खास और बड़े सभी दांव-पेंच सिखा दिए हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई तुम्हें आसानी से पटकनी दे सकता है।”

बैडी खुश होते हुए बोला—“तो उस्ताद इसका मतलब ये हुआ कि मैं चंपक वन का नामी पहलवान बन गया हूं न?” जंबों हाथी बोला—“तुमने लगन से कुश्ती के सभी गुर सीख लिए हैं। हां अभ्यास करना और विपक्षी को खुद पर हावी मत होने देना। यदि तुम ऐसा कर सके तो तुम्हें कोई नहीं हरा सकता। मैं भी नहीं।”

बैडी मारे खुशी के उछल पड़ा। बोला—“वाह उस्ताद वाह ! बस उस्ताद एक बार मैं ज़रा चंपक वन के सभी तीसमारखांओं को पटक दूं। फिर आपको आपकी गुरु दक्षिणा भी दूंगा।” जंबों हाथी ने मुस्कुराते हुए कहा—“अपने उस्ताद को भूलना नहीं। मिलते रहना।”

बैडी चंपक वन की ओर चल पड़ा। बैडी को चंपक वन में कोई भी मिलता, वह उसे ललकारता। जो भी उससे उलझता, वह उससे कुश्ती कर बैठता। पूरे जोश के साथ वह सामने वाले पर टूट पड़ता और जंबों हाथी के सिखाए एक से बढ़कर एक दांव-पेंच अमल में लाता। सामने वाला कुछ ही क्षण में परस्त हो

जाता और हार मान जाता। कुछ ही दिन में बैड़ी चंपक वन में पहलवानी के लिए पहचाना जाने लगा। जंपी बंदर, ब्लैकी भालू, मटकू गधा, रीटू बैल तक को वह पहलवानी में पछाड़ चुका था। चंपक वन के वासी उसे पहलवानजी कहकर पुकारने लगे थे।

एक दिन की बात है। टॉमी कुत्ता बोला—“पहलवानजी। चंपक वन में कोई है जो आपको ललकार सके। नहीं है कोई।” बैड़ी तैश में आते हुए बोला—“किसी में इतनी हिम्मत कहां है, जो मुझे ललकार सके। अरे ! मेरे उस्ताद तक ने कह दिया था कि अब मुझे वो यानि मेरा उस्ताद भी नहीं हरा सकता। समझे तुम।”

आस-पास मौजूद कई जानवरों को बैड़ी सियार का ये बड़बोलापन अच्छा नहीं लगा। मगर सब चुप रहे। पेड़ पर बैठी सैकी गिलहरी ने कह ही दिया—“पहलवानजी। लगता है शेर को सवा शेर नहीं मिला है अभी।” बैड़ी सियार की आंख पर तो पहलवानी की पट्टी बंधी थी। वह सैकी गिलहरी का इशारा नहीं समझ पाया।

एक दिन की बात है। बैड़ी सियार सैकी गिलहरी को खोज रहा था। जंपी बंदर ने पूछ ही लिया—“पहलवानजी। क्या बात है बड़े गुस्से में हो? किसे खोज रहे हो?” बैड़ी सियार पैर पटकते हुए बोला—“हां। मेरा पारा सातवें आसमान पर है। मैं सैकी को खोज रहा हूं। कहां है वो। उसने मुझे ललकारा है। पिद्दी भर की है और उसने मुझे कुश्ती के लिए ललकारा है। मैं उसका खून पी जाऊंगा।”

देखते ही देखते चंपक वन के कई जानवर चौपाल पर इकट्ठा हो गए। तभी सैकी गिलहरी ने पेड़ से बैड़ी के शरीर पर छलांग लगाई। बैड़ी घबरा गया। इससे पहले वो कुछ समझ पाता। सैकी गिलहरी ने बैड़ी के बदन पर कई जगह काट खाया। अपने नुकीले पंजों से उसने बैड़ी की गर्दन पकड़ ली। बैड़ी जोर-जोर

से खांसने लगा। दूसरे ही क्षण सैकी गिलहरी ने बैडी सियार की पूंछ मरोड़ दी। बैडी सुबह से सैकी को खोजता हुआ यहां—वहां मारा—मारा घूम रहा था। वह भूखा—प्यासा और थका हुआ था। अचानक सैकी को सामने देखकर उसे कुछ नहीं सूझा।

जंबों हाथी को सामने देखकर वह सारे दांव—पेंच भूल गया। कुछ ही देर में वह सैकी के दांव के सामने असहाय नजर आने लगा। जंबों हाथी ने ताली बजाते हुए कहा—“कुश्ती खत्म। सैकी ने बैडी को मात दे दी है। कुश्ती का नियम है कि जब विपक्षी असहाय हो जाए तो कुश्ती रोक दी जाती है। सैकी छोड़ दो बैडी को, तुम जीत गई।” बैडी एक तरफ खड़ा हो गया। वहीं सैकी को दर्शकों ने कंधे पर बिठा लिया। सैकी का विजय जुलूस चंपक वन की ओर चला गया। बैडी ने जंबों हाथी से कहा—“उस्तादजी। आपने तो कहा था कि मैं सारे दांव—पेंच सीख गया हूं फिर सैकी ने कौन से दांव से मुझे हरा दिया?”

जंबों हाथी ने बताया—“बैडी। सैकी का दांव बड़ा ही साधारण था। तुम अपने घमण्ड के चलते हारे हो। सैकी को तुमने हल्के ढंग से लिया था, और तुम उसे सुबह से खोज रहे थे। तुम अपना धैर्य खो चुके थे। यही कारण था कि तुम कुश्ती शुरू होने से पहले ही हार गए। सामने वाले को तुमने पहले ही बेहद कमजोर मान लिया। वह तुम पर हावी हो गई और तुम सैकी गिलहरी की एक ही पटखनी में चित्त हो गए।

याद रखो। सूरज के सामने दीये की रोशनी कुछ भी नहीं होती। लेकिन रात के अंधेरे में वही रोशनी बेहद उपयोगी होती है।”

बेचारा बैडी अपना सा मुंह लेकर रह गया। फिर कभी उसने किसी को ललकारने की कोशिश नहीं की।

सीख : हमें कभी किसी चीज़ का घमंड नहीं करना चाहिए।

बदनामी और नेकनामी

एक छोटे से कस्बे में पंडित रामानंद शास्त्री रहा करते थे। वे बहुत सदाचारी थे और हर किसी की मदद को हमेशा तैयार रहते थे। आस-पास के कई गांवों तक उनकी ख्याति थी। उनका एक पुत्र था रामसेवक। रामसेवक इकलौता होने के कारण बड़ा ही चंचल और नटखट था। पंडितजी की हार्दिक अभिलाषा थी उनका बेटा विद्या प्राप्त करके उन्हीं की तरह सदाचारी बने और पूजा-पंडिताई का काम करे। लेकिन पिता की इच्छा के विपरीत लाड़ला रामसेवक हमेशा शरारतें किया करता था। पंडित रामानंद शास्त्री उसे समझाने का प्रयास करते रहते थे, लेकिन रामसेवक को बुरे कामों में मजा आता था।

अंत में निराश होकर पंडितजी ने रामसेवक को समझाना बंद कर दिया। जब कभी कोई उसके पुत्र की शिकायत लेकर आता तो पंडितजी अपने घर के मुख्य द्वार पर एक कील गाड़ देते। कुछ ही दिनों में दरवाजा कीलों से भर गया। एक दिन एक अंधा मुसाफिर रोता हुआ पंडितजी के पास आया और पूछने पर उसने बताया कि उनके बेटे रामसेवक ने उनकी लाठी खींच ली और उनकी पोटली कुएं में फेंक दी। यह सुनकर पंडितजी को दुख हुआ, उन्होंने दरवाजे की ओर देखा, उसमें केवल एक आखिरी कील के लिए जगह बची थी।

पंडितजी ने उस अंधे मुसाफिर से माफी मांगकर उसे रवाना किया और कील हथौड़ा लेकर दरवाजे पर जैसे ही कील

ठोकनी शुरू की, उसी समय रामसेवक वहां आ पहुंचा। उसने पिता से पूछा, “पिताजी, आप यह क्या कर रहे हैं?”

पंडितजी उदास मन से बोल उठे, “बेटा, मैं तेरे किए गए दुष्कर्मों की गिनती कर रहा हूं।”

रामसेवक आश्चर्य से दरवाजे पर लगी कीलों को देखने लगा और फिर पूछ बैठा, “क्या दरवाजे पर लगी सभी कीलें मेरे कारण लगी हैं?”

इस पर दुखी पंडितजी बोल उठे, “हां, मेरे नालायक बेटे! ये सब कीलें तुम्हारे किए गए दुष्कर्मों की सूचक हैं।”

पंडितजी ने रामसेवक को समझाया, “देखो बेटा! बुरे कर्मों को छोड़कर परोपकार और सत्कर्म करो, ज्ञान—विद्या प्राप्त करो, अब भी अवसर है, नहीं तो शेष जीवन पश्चाताप में बीत जाएगा।” यह सुनकर रामसेवक उदास हो गया। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने मन ही मन प्रण किया कि अब वह अच्छे कर्म करेगा और अपने पिता द्वारा बताए गए मार्ग पर चलेगा।

एकाएक उसके व्यवहार में बदलाव आ गया। उसने लोगों को सताना बंद कर दिया। वह सबकी सहायता करने लगा। उसके इस बदले व्यवहार से पंडितजी खुश रहने लगे। उन्होंने रामसेवक के प्रत्येक अच्छे काम पर दरवाजे पर लगी एक कील निकालनी शुरू कर दी। धीरे—धीरे सारी कीलें निकल गईं। एक दिन पंडितजी आंगन में बैठकर धूप सेक रहे थे, कि तभी उन्हें किसी ने बताया कि अभी—अभी रामसेवक ने एक निर्धन बुढ़िया महिला की सहायता की है। इस सूचना पर प्रसन्न होकर पंडितजी ने जैसे ही अंतिम कील निकाली, उसी वक्त रामसेवक वहां आ पहुंचा। रामसेवक कभी अपने पिता को देखता तो कभी

दरवाजे को। उसने कहा, “पिताजी कील तो सारी निकल गई पर उनके निशान दरवाजे पर सदा के लिए रह गए।”

इस पर पंडितजी बोले, “देखो बेटा, बुरे काम छोड़ देने पर भी उसकी बदनामी मिटाई नहीं जा सकती, इसलिए हमें कभी भी बुरे काम नहीं करने चाहिए। मनुष्य द्वारा किए गए छोटे से छोटे बुरे काम की बदनामी उसका पीछा नहीं छोड़ती, जैसे ऋषि वाल्मीकि का प्रारंभिक जीवन उनके परिचय में हमेशा उल्लिखित किया जाता है।”

बगल में छोरा, नगर ढिंढोरा

एक पंडितजी थे। उनके पास एक मोटी ताजी दुधारू गाय थी। यह गाय किसी ने उन्हें दान में दी थी। गाय के कारण घर में दूध, घी, दही की कमी नहीं होती थी। खा-पीकर पंडितजी मोटे तगड़े होते जा रहे थे। एक शाम की बात है, पंडितजी जैसे ही दूध दुहने गोशाला पहुंचे तो गाय वहां से गायब मिली। खूंटा भी उखड़ा हुआ था। पंडितजी की जान सूख गई। उन्होंने सोचा, "हो न हो गाय कहीं निकल भागी है।" गाय चूंकि उन्हें बहुत प्रिय थी सो वह फौरन ढूंढने निकल पड़े।

थोड़ी दूर पर पंडितजी को एक गाय चरती हुई दिखाई दी। वह खुश हो गए। लेकिन सांझ के झुरमुट में यह नहीं जान पाए कि जिसे वह अपनी गाय समझ बैठे हैं, वह पड़ोसी का मरखना सांड है। उन्होंने लपककर ज्यों ही रस्सी थामी कि सांड भड़क उठा। जब तक सारी बात समझ में आती, देर हो चुकी थी। सांड हुंकारता हुआ उनके पीछे दौड़ पड़ा। थुलथुल शरीर वाले पंडितजी हांफते-हांफते गिरते-पड़ते भाग खड़े हुए।

भागते-भागते उनका दम निकला जा रहा था और सांड था कि हार मानने को तैयार ही नहीं था। आखिरकार एक गड़्ढा देखकर पंडितजी उसमें धप से कूद गए। सांड फिर भी न माना। पीछे-पीछे वह भी गड़्ढे में उतर पड़ा।

पंडितजी फिर भागे। अबकी बार उन्हें भूसे का एक ढेर दिखा, पंडितजी उस पर कूद गए और दम साधकर पड़े रहे। सांड ने

भूसे के दो एक चक्कर लगाए और थोड़ी देर ठहर कर इधर-उधर उन्हें तलाशता रहा, फिर चला गया। भूसे के ढेर से पंडितजी वापस आए तो उनका रूप बदल चुका था। पूरे शरीर पर भूसा चिपक गया था। वह किसी दूसरे ग्रह के जीव नजर आ रहे थे। तभी उधर से गुजरते हुए एक आदमी की नजर उन पर पड़ी। वह डरकर चीख उठा। उसकी चीख सुनकर दस-बीस आदमी मदद को आ जुटे। अब आगे-आगे पंडितजी और पीछे-पीछे सारे लोग। वह चीखते रहे, “भाइयों, मैं हूं पंडित जी.” पर लोगों ने एक न सुनी।

आखिरकार बचने का एकमात्र उपाय देखकर पंडितजी एक तालाब में कूद पड़े, तन से भूसा छूटा तो लोग हैरान रह गए। जब सारे लोगों को उनकी रामकहानी मालूम हुई तो सारे वापस अपने घरों को लौट गए। पंडितजी गाय की खोज में हांफते-हांफते आगे बढ़े। गांव के बाहर आम के बाग थे। गाय चरती हुई अक्सर उधर चली जाती थी। पंडितजी एक आशा की किरण लिए आगे बढ़े। उन दिनों आम पकने लगे थे। रखवाले बागों में झोपड़ी बनाकर रखवाली करते थे। जब उन्होंने चुपके-चुपके किसी को बाग में घुसते देखा तो लाठी लेकर शोर मचाते हुए उस ओर दौड़ पड़े जिस ओर से पंडितजी आ रहे थे। पंडितजी के होश उड़ गए। वह सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए।

भागते-भागते वह एक खेत में पहुंचे। खेत में खरबूजे और ककड़ियां बोई थीं। खेत के रखवाले ने गोल मटोल पंडितजी को देखा तो समझा कोई जानवर घुस आया है। वे लाठियां और जलती मशालें लेकर उनके पीछे लपक लिए। अब पंडितजी का धैर्य टूट गया। इस बार भागे तो सीधा घर जाकर रुके। उनकी हालत देखकर पंडिताइन ने पूछा, “क्यों जी कहां से आ रहे हो?”

पंडित जी हांफते हुए बोले, “मैं गाय की खोज में दुबला हो गया और तुम पूछती हो कि कहां से आ रहे हो?” “गाय की खोज? गाय तो घर के पिछवाड़े बंधी है। गौशाला का खूंटा उखड़ गया था। इसलिए मैंने गाय को पिछवाड़े में ले जाकर बांध दिया था।”

पंडिताइन की बात सुनकर पंडितजी ने सिर पीट लिया।

किसी कार्य को करने से पहले उसका अंजाम पहले सोचो रोचक बाल कहानी

एक कंजूस महिला की यह आदत थी कि जैसे ही मुर्गे ने भोर में बांग लगाई— ‘कुंकड़ू—कूं और उसने अपनी नौकरानियों को उनके बिस्तरों से उठाना शुरू कर दिया।

नौकरानियां जवान मगर काहिल थीं। उन्हें इस तरह अपनी मालकिन द्वारा गहरी नींद से उठाया जाना बिल्कुल पंसद नहीं था। वे चाहती थीं कि किसी प्रकार इस समस्या का हल निकल आए। वह मुर्गा उनके लिए सबसे अधिक चिंता का विषय था। चाहे गरमी हो या बरसात, जाड़ा हो या बसन्त, बेरोकटोक सूर्य की निर्मल किरणें धरती पर पड़ते ही वह बांग देना शुरू कर देता था। उसकी बांग की आवाज सुनकर वह कंजूस महिला खुद तो उठ ही जाती, साथ ही गहरी नींद सोती हुई अपनी नौकरानियों को भी उठा देती।

“यह सब उस मुर्गे के कारण होता है। उसकी वजह से ही हमारी नींद में खलल पड़ती है। हमारी इस समस्या का हल यही है कि हम उस मुर्गे को ही जान से मार दें।” उनमें से एक नौकरानी ने अपनी राय दी। उसकी बात सुनकर सभी नौकरानियां काफी खुश हुईं। उन्होंने मुर्गे को मारने की एक योजना भी बनाई। एक दिन मौका पाकर उन्होंने मुर्गे को पकड़ा

और एकांत में ले जाकर उसकी गरदन ऐंठकर उसे जान से मार दिया।

अब वे सभी यह सोचकर प्रसन्न थीं कि न तो मुर्गा भोर में बांग देगा और न ही मालकिन उठकर उन्हें जगाएगी। इस प्रकार उन्हें सुबह देर तक सोए रहने का अवसर प्राप्त हो जाएगा। मगर उन्हें निराशा ही हाथ लगी। अब मालकिन के पास चूंकि सही समय जानने का कोई साधन नहीं था, इसलिए वह सूर्य निकलने के बहुत पहले या कभी-कभी आधी रात को ही उठ बैठती और साथ ही अपनी नौकरानियों को भी उठा देती।

नौकरानियों ने अपनी समस्या के हल के लिए मुर्गे को जान से मारा था, मगर हाय रे भाग्य! इससे उनकी समस्या बजाय घटने के और बढ़ गई।

शिक्षा— किसी कार्य को करने से पहले उसका अंजाम पहले सोचो।

कौए और सीपी

एक समय की बात है, किसी कौए को नदी किनारे एक सीपी पड़ी मिल गई। उसने सोचा, उसे खाकर वह अपना पेट भरेगा। कौआ सीपी पर चोंच मारने लगा। मगर सीपी टूटती कैसे। सीपी तो बहुत कठोर होती है।

तभी एक दूसरा कौआ कहीं से आ गया और कहने लगा— “क्या बात है दोस्त? किस काम में उलझे हुए हो?”

“भाई कुछ खास नहीं!” पहला कौआ बोला— “मैं यह सीपी तोड़कर भीतर का नरम माल खाना चाहता हूँ, मगर यह कम्बखत सीपी है कि टूटती ही नहीं।”

“ओह! मेरे प्यारे दोस्त!” दूसरा कौआ बोला— “भला इसमें इतना परेशान होने वाली क्या बात है। इसे तोड़ना तो बहुत आसान है। सीपी चोंच में दबाकर खूब ऊंचाई तक उड़ जाओ और फिर ऊपर से किसी चट्टान पर उसे गिरा दो। जब वह ऊपर से नीचे गिरेगी तो अपने आप ही टूट जाएगी।”

पहला कौआ खुश हो गया।

उसने मुंह में सीपी दबाई और उड़ चला ऊपर आकाश की ओर।

दूसरा कौआ बड़ा ही धूर्त और चालबाज था। वह हमेशा अवसर की तलाश में रहता था और आमतौर पर अपने मिलने-जुलने वालों का ही धोखा दिया करता था। फलस्वरूप वह भी उसके साथ ही उड़ रहा था, मगर उससे बहुत नीचे। जब पहला कौआ किसी चट्टान के ऊपर से गुजरने लगा तो उसने चोंच से सीपी नीचे गिरा दी।

सीपी नीचे चट्टान पर गिरते ही टुकड़े-टुकड़े हो गई और पहला कौआ सीपी को टूटता देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने नीचे चट्टान पर झपट्टा मारा।

मगर इससे पहले कि वह टूटी हुई सीपी तक पहुंचता, दूसरे कौए ने बिजली की सी फुर्ती से सीपी पर धावा बोला और उसे लेकर उड़ गया। बेचारा पहला कौआ देखता रह गया। उसे आश्चर्य हो रहा था अपने मित्र की चालाकी देखकर।

शिक्षा— अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का गला न काटो।

मेंढक तथा सांड

घमंडी व्यक्ति का सिर सदैव नीचा होता है

यह किसी तालाब के किनारे की घटना है। एम मेंढक का बच्चा पहली बार पानी से बाहर आया। तालाब के कुछ दूर पर भीमकाय सांड घास चर रहा था। मेंढक के बच्चे ने तो कभी भी इतना भयानक एवं भीमकाय जानवर नहीं देखा था। बेचारा समझ नहीं पर रहा था कि यह है क्या?

वह उल्टे पैरों भय से कांपता हुआ घर आया। घर पहुंच कर अपनी मां से लिपट गया और हांफता-हांफता हुआ कहने लगा—“मां, मैंने अभी-अभी तालाब से बाहर एक बहुत बड़ा जानवर देखा है।”

“कैसा था देखने में वह जानवर?” मां ने बच्चे को गोद में झुलाते हुए पूछा।

“उसका वजन बताना तो मेरे लिए कठिन है, मगर समझ लो कि उसके चार पैर लम्बे-लम्बे थे। एक पूंछ थी, दो बड़ी-बड़ी आंखें। सिर से दो नुकीली भाले जैसी दो चीजें निकली पड़ी थीं।” मेंढक का बच्चा बोला।

मेंढक की मां ने भी कभी तालाब से बाहर कदम नहीं रखा था, इसलिए वह भी ठीक से समझ नहीं पा रही थी कि आखिर वह कौन सा जानवर हो सकता है? उसे यह सुनकर कुछ अपमान

भी महसूस हुआ कि उसका बेटा उसके आकार को उससे भी बड़ा बता रहा है, जबकि वह अपने से बड़ा किसी को समझती ही नहीं थी। इसलिए उसने जोर से सांस खींची और अपना शरीर फुलाते हुए बोली— “क्या इतना बड़ा था, जितनी मैं हूँ?”

“अरे नहीं मां, वह तो तुमसे बहुत अधिक बड़ा था।” मेंढक का बच्चा कांपते हुए चिल्लाया। इस बार मेंढक की मां ने अपने फेफड़ों में ढेर सी हवा भरी और आशा भरे स्वर में बोली— “अब देखो! क्या अब भी वह मुझसे बड़ा लगता था?”

“नहीं मां, तुम तो उसके आगे कुछ भी नहीं हो।” मेंढक का बच्चा बोला।

अब तो उसकी मां के लिए यह बात एक चुनौती बन गई। वह अपने फेफड़ों में जबरदस्ती हवा भरकर फूलने का प्रयत्न करने लगी, मगर आखिर वह कितना फूलती। एक समय आया जब उसका पेट किसी गुब्बारे की भांति फट गया।

शिक्षा— घमंडी व्यक्ति का सिर सदैव नीचा होता है।

कठिन परिस्थितियों को जीतना सीखो

परिस्थितियां कभी जीवन में एक जैसी नहीं रहती, जीवन के भंवर में उतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं। आपकी सोच बताती है कि आप कठिन परिस्थितियों का कैसे सामना करते हैं? क्या आपके अंदर वो काबिलियत है जो हर परिस्थिति से आपको बाहर निकाल दे?

एक कहानी यूँ है कि पुराने समय में एक व्यापारी ने किसी धनी साहूकार से पैसा उधार ब्याज पर लिया था लेकिन व्यापार में नुकसान हो जाने की वजह से वह साहूकार का पैसा लौटा नहीं पा रहा था।

व्यापारी की एक बेहद सुन्दर बेटी थी। साहूकार बड़ा कुटिल था उसने सोचा कि व्यापारी पैसा तो वापस कर नहीं पा रहा है तो क्यों न इसकी परिस्थिति का फायदा उठाया जाए। उसने व्यापारी को एक सुझाव दिया कि अगर वह अपनी बेटी की शादी उस साहूकार से कर दे तो वह व्यापारी का सारा कर्ज माफ़ कर देगा।

व्यापारी बेचारा मरता क्या ना करता। उसने अपनी बेटी को सारी बात बताई। समस्या बड़ी थी, साहूकार अंधेड़ उम्र का कुरूप व्यक्ति था। अब उस बेटी के आगे 2 ही रास्ते थे। पहला, या तो साहूकार से विवाह करने से इंकार कर दे और अपने पिता को कर्ज में दबा रहने दे। दूसरा, साहूकार से खुशी से विवाह कर ले ताकि उसका पिता स्वतंत्रता से रह सके।

मित्रों, अक्सर हमारे जीवन में भी ऐसे मोड़ आते हैं जब हमें यकीन होने लगता है कि अब कोई रास्ता नहीं बचा है और अब हम बुरी तरह फंस चुके हैं। अखबारों में सुनने में आता है कि लोग आत्महत्या तक कर लेते हैं, लेकिन अपने दिमाग को पानी की तरह रखिये, एकदम निर्मल, शांत और चलायमान। पानी को देखा है? पानी हर जगह से अपना रास्ता निकाल ही लेता है। ठीक वैसे ही बन जाओ।

आगे देखिये लड़की ने क्या फैसला लिया। लड़की ने साहूकार के आगे एक शर्त रखी कि साहूकार एक थैला लाये और उसमें दो गोलियां डाले, एक सफ़ेद रंग की तथा दूसरी काले रंग की। इसके बाद लड़की उस थैले से आँख बंद करके कोई एक गोली निकालेगी। गोली अगर काली निकली तो लड़की साहूकार से विवाह कर लेगी और उसके पिता का कर्ज माफ़ कर दिया जायेगा। साथ ही, अगर गोली सफ़ेद निकली तो भी पिता का कर्ज माफ़ किया जायेगा लेकिन लड़की साहूकार से विवाह नहीं करेगी।

साहूकार तुरंत बात मान गया और जल्द ही एक थैला लेकर आ गया। अब वह जब थैले में गोलियां डाल रहा था तो लड़की ने देखा कि साहूकार ने चालाकी से दोनों गोली काली ही थैले में डाल दी हैं। अब लड़की परेशान हो गयी कि अब वह करे तो क्या करे, साहूकार का भांडा फोड़ भी दे तो भी वह दूसरी किसी चाल में उनको जरूर फंसाएगा।

लड़की कुछ सोचकर आगे बढ़ी और उसने थैले से एक गोली निकाली। और गोली बाहर निकालते ही, उसे हाथ से छिटका दी, जिससे गोली नाली में जा गिरी। लड़की बोली—माफ़ करना, गोली मेरे हाथ से छिटक गयी लेकिन चिंता की कोई बात नहीं, थैले में अभी दूसरी गोली भी तो होगी उसे देख लेते हैं। अगर

गोली काली निकली तो मैंने सफ़ेद गोली उठायी होगी और थैले में गोली सफ़ेद निकली तो मैंने काली गोली उठाई होगी।

व्यापारी ने थैले में हाथ डाला तो देखा, काली गोली निकली। व्यापारी बोला— अहा, बेटी थैले में काली गोली बची है इसका मतलब तुमने सफ़ेद गोली चुनी थी। साहूकार बेचारा बोलता भी क्या? अगर बोलता तो चोरी पकड़ी जाती। इस प्रकार पिता का कर्ज भी माफ़ हो गया और बेटी ने अपनी रक्षा भी कर ली।

मित्रों, अगर हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानी भी सोच लेते कि हम शक्तिशाली अंग्रेजों से कभी नहीं जीत पायेंगे तो शायद हमारा यह देश कभी आजाद ही नहीं हो पाता। जब तक आप समस्याओं के समाधान के बारे में नहीं सोचेंगे तब तक आप समस्याओं में ही उलझे रहेंगे।

अपने विचारों को खुलने दें, थोड़ा हटकर सोचें, यह सोचें कि हर समस्या का हल है तो मेरी समस्या का भी कोई न कोई हल जरूर होगा। जब आप ऐसा सोचने लगेंगे तो यकीन मानिये आपको समस्याओं के हल भी मिलना शुरू हो जायेंगे।

मेहनत बनाती है, असंभव को संभव

हर व्यक्ति के जीवन में कुछ कार्य ऐसे जरूर होते हैं जिन्हें करना हमेशा असंभव ही लगता है.. और जब कोई दूसरा व्यक्ति आकर उसी असंभव काम को संभव करके दिखा देता है तो हमें लगता है कि यार वो बहुत लकी है।

दरअसल, असंभव कार्य को करने के लिए जितनी कठोर मेहनत की आवश्यकता होती है, उतनी आपने कभी की ही नहीं।

कोई भी काम असंभव नहीं होता, बल्कि थोड़ा कठिन होता है। जब कोई काम इतना कठिन होता है जिसे हम आसानी से नहीं कर सकते तो बस हम उसे असंभव कहने लगते हैं, यही असंभव शब्द जब हमारे दिमाग में बैठ जाता है तो हम फिर प्रयास करना ही बंद कर देते हैं। आपको याद होगा कि पहले वन-डे क्रिकेट में 300 रन बनाना, किसी भी टीम के लिए बहुत बड़ी बात होती थी, अगर किसी टीम ने 300 रन बना लिए तो उसकी जीत निश्चित हो जाती थी क्योंकि उस समय तक 300 रन को पछाड़ना असंभव सा प्रतीत होता था।

लेकिन समय बदला, नए लोग आये। पिच पर रन तेजी से बनने लगे और आज तो वन-डे में 300 रन बनाना बहुत मामूली सी बात है, अब तो लोग 400 रन को भी पछाड़ देते हैं। पहले वन-डे में शतक बनाने पर बहुत तारीफें होती थीं और वन-डे में दोहरा शतक लगाना तो असंभव ही था। उसके बारे में तो कोई सोचता भी नहीं था। लेकिन हमारे मास्टर ब्लास्टर सचिन

तेंदुलकर ने लोगों के इस भ्रम को तोड़ा और वन-डे में 200 रन बनाकर एक कीर्तिमान स्थापित किया.. और ये कहानी यहीं नहीं रुकी, कुछ ही दिन बाद विस्फोटक बल्लेबाज सहवाग ने भी दोहरा शतक लगा दिया। इसके बाद 200 रन कई लोग अब बना चुके हैं।

तो मित्रों असंभव तो कुछ था ही नहीं.. बल्कि काम बेहद कठिन था इसलिए हम उसे असंभव मान बैठे।

कोई फर्क नहीं पड़ता, अगर आपने असंभव मान लिया।

अरे कोई फर्क नहीं पड़ता, अगर आपने प्रयास नहीं किया।

कोई फर्क नहीं पड़ता.. अगर आपने हिम्मत छोड़ दी।

लेकिन एक बात याद रखना.. एक न एक दिन एक ऐसा शख्स आयेगा जो इस असंभव को संभव बनाकर दिखा देगा.. और ऐसा करके वो शख्स दुनिया में छा जायेगा और सिर्फ यही बोलोगे कि वो लकी है। दुनिया में मेहनत करने वालों की कमी नहीं है। आप नहीं तो कोई और सही.. असंभव के चक्रव्यूह को कोई आकर चुटकियों में ढेर कर देगा।

तो मित्रों, असंभव शब्द को अपने मन, मस्तिष्क से निकाल दीजिये क्योंकि यह शब्द आपको आगे बढ़ने से रोक रहा है।

असफलता सफलता से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है।

सभी के जीवन में एक समय ऐसा आता है जब सभी चीजें आपके विरोध में हो रही हों और हर तरफ से निराशा मिल रही हो। चाहें आप एक प्रोग्रामर हैं या कुछ और, आप जीवन के

उस मोड़ पर खड़े होते हैं जहाँ सब कुछ ग़लत हो रहा होता है। अब चाहे ये कोई सॉफ्टवेयर हो सकता है जिसे सभी ने रिजेक्ट कर दिया हो, या आपका कोई फैसला हो सकता है जो बहुत ही भयानक साबित हुआ हो।

लेकिन सही मायने में, विफलता सफलता से ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है। हमारे इतिहास में जितने भी बिजनेसमैन, साइंटिस्ट और महापुरुष हुए हैं वो जीवन में सफल बनने से पहले लगातार कई बार फेल हुए हैं। जब हम बहुत सारे कम कर रहे हों तो ये ज़रूरी नहीं कि सब कुछ सही ही होगा। लेकिन अगर आप इस वजह से प्रयास करना छोड़ देंगे तो कभी सफल नहीं हो सकते।

हेनरी फ़ोर्ड, जो बिलियनेर और विश्व प्रसिद्ध फ़ोर्ड मोटर कंपनी के मालिक हैं। सफल बनने से पहले फ़ोर्ड पाँच अन्य बिज़नेस में फेल हुए थे। कोई और होता तो पाँच बार अलग-अलग बिज़नेस में फेल होने और कर्ज़ में डूबने के कारण टूट जाता। लेकिन फ़ोर्ड ने ऐसा नहीं किया और आज एक बिलियनेर कंपनी के मालिक हैं।

अगर विफलता की बात करें तो थॉमस अल्वा एडिसन का नाम सबसे पहले आता है। लाइट बल्ब बनाने से पहले उसने लगभग 1000 विफल प्रयोग किए थे। अल्बर्ट आइंस्टीन जो 4 साल की उम्र तक कुछ बोल नहीं पाता था और 7 साल की उम्र तक निरक्षर था। लोग उसको दिमागी रूप से कमजोर मानते थे लेकिन अपनी थ्योरी और सिद्धांतों के बल पर वो दुनिया का सबसे बड़ा साइंटिस्ट बना।

अब ज़रा सोचो कि अगर हेनरी फ़ोर्ड पाँच बिज़नेस में फेल होने के बाद निराश होकर बैठ जाता, या एडिसन 999 असफल

प्रयोग के बाद उम्मीद छोड़ देता और आइंस्टीन भी खुद को दिमागी कमजोर मान के बैठ जाता तो क्या होता?

हम बहुत सारी महान प्रतिभाओं और आविष्कारों से अंजान रह जाते।

तो मित्रों, असफलता सफलता से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है...

असफलता ही इंसान को सफलता का मार्ग दिखाती है। किसी महापुरुष ने बात कही है कि जीतने वाले कभी हार नहीं मानते और हार मानने वाले कभी जीत नहीं सकते।

आज सभी लोग अपने भाग्य और परिस्थितियों को कोसते हैं। अब जरा सोचिये अगर एडिसन भी खुद को अनलकी समझ कर प्रयास करना छोड़ देता तो दुनिया एक बहुत बड़े आविष्कार से वंचित रह जाती। आइंस्टीन भी अपने भाग्य और परिस्थितियों को कोस सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया तो आप क्यों करते हैं।

अगर किसी काम में असफल हो भी गए हो तो क्या हुआ ये अंत तो नहीं है न, फिर से कोशिश करो, क्योंकि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

इंसान की कीमत

एक बार एक टीचर क्लास में पढ़ा रहे थे। बच्चों को कुछ नया सिखाने के लिए टीचर ने जेब से 100 रुपये का एक नोट निकाला। अब बच्चों की तरफ वह नोट दिखाकर कहा— क्या आप लोग बता सकते हैं कि यह कितने रुपये का नोट है?

सभी बच्चों ने कहा— "100 रुपये का"

टीचर— इस नोट को कौन-कौन लेना चाहेगा? सभी बच्चों ने हाथ खड़ा कर दिया।

अब उस टीचर ने उस नोट को मुट्ठी में बंद करके बुरी तरह मसला जिससे वह नोट बुरी तरह कुचल सा गया। अब टीचर ने फिर से बच्चों को नोट दिखाकर कहा कि अब यह नोट कुचल सा गया है अब इसे कौन लेना चाहेगा?

सभी बच्चों ने फिर हाथ उठा दिया।

अब उस टीचर ने उस नोट को जमीन पर फेंका और अपने जूते से बुरी तरह कुचला। फिर टीचर ने नोट उठाकर फिर से बच्चों को दिखाया और पूछा कि अब इसे कौन लेना चाहेगा?

सभी बच्चों ने फिर से हाथ उठा दिया।

अब टीचर ने कहा कि बच्चों आज मैंने तुमको एक बहुत बड़ा पाठ पढ़ाया है। ये 100 रुपये का नोट था, जब मैंने इसे हाथ से

कुचला तो ये नोट कुचल गया लेकिन इसकी कीमत 100 रुपये ही रही, इसके बाद जब मैंने इसे जूते से मसला तो ये नोट गन्दा हो गया लेकिन फिर भी इसकी कीमत 100 रुपये ही रही।

ठीक वैसे ही इंसान की जो कीमत है और इंसान की जो काबिलियत है वो हमेशा वही रहती है। आपके ऊपर चाहें कितनी भी मुश्किलें आ जाएँ, चाहें जितनी मुसीबतों की धूल आपके ऊपर गिरे लेकिन आपको अपनी कीमत नहीं गंवानी है। आप कल भी बेहतर थे और आज भी बेहतर हैं।

हाथी और रस्सी

एक व्यक्ति रास्ते से गुजर रहा था कि तभी उसने देखा कि एक हाथी एक छोटे से लकड़ी के खूंटे से बंधा खड़ा था। व्यक्ति को देखकर बड़ी हैरानी हुई कि इतना विशाल हाथी एक पतली रस्सी के सहारे उस लकड़ी के खूंटे से बंधा हुआ है। ये देखकर व्यक्ति को आश्चर्य भी हुआ और हंसी भी आयी। उस व्यक्ति ने हाथी के मालिक से कहा— अरे ये हाथी तो इतना विशाल है फिर इस पतली सी रस्सी और खूंटे से क्यों बंधा है? ये चाहे तो एक झटके में इस रस्सी को तोड़ सकता है लेकिन ये फिर भी क्यों बंधा है?

हाथी के मालिक ने व्यक्ति से कहा कि श्रीमान जब यह हाथी छोटा था मैंने उसी समय इसे रस्सी से बांधा था। उस समय इसने खूंटा उखाड़ने और रस्सी तोड़ने की पूरी कोशिश की लेकिन यह छोटा था इसलिए नाकाम रहा। इसने हजारों कोशिश कीं लेकिन जब इससे यह रस्सी नहीं टूटी तो हाथी को यह विश्वास हो गया कि यह रस्सी बहुत मजबूत है और यह उसे कभी नहीं तोड़ पायेगा। इस तरह हाथी ने रस्सी तोड़ने की कोशिश ही खत्म कर दी।

आज यह हाथी इतना विशाल हो चुका है लेकिन इसके मन में आज भी यही विश्वास बना हुआ है कि यह रस्सी को नहीं तोड़ पायेगा इसलिए यह इसे तोड़ने की कभी कोशिश ही नहीं करता। इसलिए इतना विशाल होकर भी यह हाथी एक पतली सी रस्सी से बंधा है। दोस्तों उस हाथी की तरह ही हम इंसानों

में भी कई ऐसे विश्वास बन जाते हैं जिनसे हम कभी पार नहीं पा पाते। एक बार असफल होने के बाद हम ये मान लेते हैं कि अब हम सफल नहीं हो सकते और फिर हम कभी आगे बढ़ने की कोशिश ही नहीं करते और झूठे विश्वासों में बंधकर हाथी जैसी जिंदगी गुजार देते हैं।

हमेशा अपने आस-पास सकारात्मकता रखें

आप बहुत अच्छे मूड में हैं। आप का दिन बहुत अच्छा गुजर रहा है। अचानक "वह एक इंसान" आपके सामने आता है। वही जो हर समय आपको तुच्छता का अनुभव कराता है और गुस्सा दिलाता है। ये वही इंसान हैं, जो आपको हानि पहुँचा सकता है, इन्हें अपनी ज़िंदगी बरबाद न करने दें। ये सिर्फ़ तभी ऐसा कर सकते हैं, जब "आप" इन्हें ऐसा करने देंगे।

1. इस तरह के लोगों को अपने करीब आने से पहले पहचानें
हम सभी की ज़िंदगी में एक मध्यम दौर आता है। लेकिन ऐसा समय जब किसी ज़हरीले इंसान के जीवन में आता है, तो वो इसे हर किसी के सामने लाने की कोशिश करते हैं, वे नहीं चाहते कि वे अकेले इस दौर से गुजरें। और उन्हें लगता है, कि उनके पास मौजूद हर किसी को उनके ही तरह दुख का अनुभव हो।

इस तरह के लोगों में पाए जाने वाले लक्षण

- a) चिड़चिड़ापन, नकारात्मक ऊर्जा।
 - b) निरंतर किसी न किसी बात का रोना और शिकायत करना।
 - c) हमेशा आपके साथ रहना और आप पर निर्भर रहना।
 - d) आलोचक, हर किसी की आलोचना करना।
 - e) नकारात्मक और निंदक दृष्टि।
2. अपने अंदर की आवाज़ सुनें, यदि कोई आपको दुखी और असहज महसूस करवाता है, तो उनसे दूरी बना लें : जब

भी आप किसी स्टोर पर कुछ सामान लेने जाते हैं, तो जाते ही आप वहाँ के कैशियर का मूड तो समझ जाते हैं। बिल्कुल, आप इसे उसके साथ हुई बातचीत के जरिए पहचान सकते हैं। आप ऐसी ही पहचान अपने मित्रों की भी कर सकते हैं! भले ही वो आपको न बताए, लेकिन आप पहचान सकते हैं, कि कुछ गड़बड़ है, और यह भी जान सकते हैं, कि किन लोगों को अपने जीवन से बाहर करना है। खुद पर विश्वास रखें—यहाँ ऐसे बहुत सारे लोग मौजूद हैं, जो खुश रहते हैं, और खुशी बाँटते हैं, तो आप भी क्यों न ऐसे ही लोगों का साथ पाएँ।

3. **उनके शारीरिक हाव-भाव और बोलने के अंदाज़ पर ध्यान दें :** लोगों के द्वारा बोली जा रही बातों के अलावा उसके पीछे की आवाज़ सुनने की कोशिश करें, या यूँ कहिए कि, जो वो नहीं बोल रहे हैं, उसे सुनने की कोशिश करें। बिल्कुल, आप इसे सुन सकते हैं। लोग आपसे किस तरह से बात करते हैं? कुछ बोलते समय उनके अंदर कैसे विचार जन्म लेते हुए समझ आते हैं?

a) बुरे शारीरिक हाव-भाव में लोग, उदास, सुस्त किशोर की तरह, झुके हुए कंधे, आँखों के संपर्क की कमी, भारी, प्रतिरोधात्मक मुद्रा में नज़र आते हैं।

b) अच्छी मुद्रा में सीधी पीठ, पीछे की ओर कंधे, ठुड्डी ऊपर और आँखों का संपर्क शामिल है।

4. **गुस्से को महसूस करने के लिए अपनी आँखें और कानों को खुला रखें :** इस तरह के विषैले लोगों में, गुस्सा, चिल्लाना और नकारात्मक आलोचना के लक्षण देखने को मिलते हैं। गुस्से में इंसान को किसी की मदद की ज़रूरत होती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है, कि आप वहाँ उनके गुस्से को अपने ऊपर झेलने खड़े हो जाएँ। इस तरह के

लोग, कभी-कभी आपके अंदर भी गुस्से को जन्म देने में कामयाब हो जाते हैं। तो बेहतरी इसी में है, कि ऐसे लोगों से दूर हो जाएँ और कुछ खुशमिजाज लोगों का साथ पाने की कोशिश करें।

- a) ऐसे लोग जिनका अपनी भावनाओं पर नियंत्रण होता है, उन्हें कभी किसी के ऊपर चिल्लाने की ज़रूरत नहीं होती, तो इस बात को भी ध्यान में लेकर आगे बढ़ें।
- b) शांत और अंदर ही अंदर पनप रहे गुस्से को भी देखें। कुछ लोग ज़्यादा तो नहीं बोलते, लेकिन अपनी भावनाओं को अंदर दबाकर रख लेते हैं। ऐसे लोग किसी और समय पर, जबकि उनके गुस्से में आने का कोई कारण भी न हो, चिल्लाना शुरू कर देते हैं।
- c) यदि आपको गुस्सैल लोगों के साथ में काम करना पड़ रहा है, तो कभी भी उनके गुस्से के सामने झुकें नहीं—इस तरह से आप उनको और भी बढ़ावा देंगे। यदि वे गुस्से में दिखें, तो आप शांत और प्रोफेशनल रहें और वहाँ से चुपचाप बाहर निकल जाएँ। उन्हें उस समय आपके इस बर्ताव पर गुस्सा आएगा, लेकिन बाद में उन्हें सब समझ आ जाएगा।

नकारात्मक दृष्टि

1. निंदा से दूर रहें : क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जिसे हर बात में कुछ न कुछ बुराई नज़र आती है? ये लोग हर समय कोई न कोई शिकायत करते रहते हैं, इन्हें कभी कुछ सही नज़र नहीं आता और ये हर चीज़ से नफ़रत करते हैं। ये लोग एक अच्छी परिस्थिति को भी खराब कर सकते हैं।
2. नकारात्मक दृष्टि के साथ वाले लोग, हमेशा ही अपने दुख में डूबे रहते हैं, और चाहते हैं कि हर कोई इससे भी ज़्यादा

दुखी हो। ऐसे लोगों की ओर ध्यान दें, जो अपनी असफलताओं और दुख के बारे में भी मुस्कुराते हुए बताते हैं। ऐसा कोई भी व्यक्ति, जो दूसरों की असफलताओं की निंदा करे, विषैले व्यवहार के हो सकते हैं, लेकिन इन्हें नकारा भी जा सकता है।

3. ध्यान आकर्षित करने वाले लोगों से दूर रहें : असुरक्षित भावना वाले लोग, अपनी खुद की पहचान को बनाए रख पाने में असमर्थ होते हैं, और हर समय दूसरे लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की मंशा बनाए रखते हैं। जब लोग उन पर ध्यान नहीं देते तो इनके मन में उसे पाने की लालसा उत्पन्न हो जाती है और ये किसी न किसी तरह इसे पाने के तरीकों को खोज लेते हैं। और कोई भी अपने जीवन में इस तरह का ड्रामा नहीं चाहेगा।
4. दया की याचना करना (“आज मेरा बिल्कुल भी काम नहीं हुआ”) इस तरह की बातें भी विषैले लोगों में पाई जाती हैं। इस तरह के लोग हर समय अपने आपको वहाँ मौजूद हर किसी से ऊपर जताते हैं, या हर समय किसी भी बात के विषय को घुमा-फिराकर कैसे भी अपने ऊपर ले आते हैं।
5. इस तरह के गपशप करने वाले और अफवाह फैलाने वाले लोगों को खुद से दूर रखें : इस तरह की गपशप से आपके मन में ईर्ष्या की भावना जागृत होगी। गपशप करना कभी-कभी बहुत मजेदार लगता है, और इससे आपको गपशप करने वाले के साथ में निकटता का अनुभव भी होता है। यदि आप कभी भी गपशप करते पाए गये हैं, तो ऐसा मत समझिए कि सिर्फ आप ही ऐसा करते हैं, बिल्कुल हर किसी को गपशप करने में मज़ा आता है। लेकिन आपको एक बात का ध्यान रखना चाहिए, जो नियमित रूप से गपशप करते हैं, उनके लिए आप भी कभी न कभी चर्चा का विषय बन सकते हैं।

6. इस तरह के लोग हर समय अपनी तुलना किसी और के साथ करते हुए पाए जाते हैं, जो शायद अपनी असफलताओं और निराशाओं से उबरने का एक बेहतर तरीका भी है। लेकिन, अपने आसपास के लोगों के बारे में सोचने के बजाय पहले अपने ही बारे में सोचें, आपकी अंतरआत्मा सब जानती है।

a) एक बार खुद से बहुत ईमानदारी के साथ एक सवाल करें, क्या आपका कोई दोस्त इस तरह के (विषाक्त) व्यवहार वाला है, क्या आपके जीवन में मौजूद लोग आपको अच्छा करने को प्रेरित करते हैं या आप उन की नकारात्मकता को ग्रहण करते जा रहे हैं? क्या यहाँ ऐसे लोग हैं, जो आपको बुरा महसूस कराते हैं, या फिर आप अच्छा महसूस करते हैं, जब आप वहाँ से निकल जाते हैं? अपने मित्रों को इस तरह से अलग करना एक बहुत कठिन काम है, लेकिन आपको यह करना होगा।

b) नुकसान पहुँचाने वाले व्यवहार को नियंत्रित करने या ढँकने की कोशिश न करें, यह आपको भी प्रदूषित कर देगा। हानि पहुँचाने वाले लोग तभी तक इस श्रेणी में आते हैं, जब तक ये आपको बुरी तरह से हानि पहुँचाते हैं। आप गुस्सैल लोगों के साथ भी मित्रता रख सकते हैं। आप नकारात्मक लोगों से भी मित्रता रख सकते हैं। व्यक्तियों को, वो जैसे भी हैं, उसी रूप में अपनाएँ, लेकिन उन्हें आपकी जिंदगी को प्रभावित न करने दें।

- हर एक व्यक्ति आपका मित्र नहीं रहने वाला! ऐसा ही होता है।
- नकारात्मक विचारों की भी एक सीमा होती है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति हर समय गुस्से में रहता है और नकारात्मक विचार लेकर चलता है, तो ऐसे लोगों से बिल्कुल दूर हो जाएँ।

- c) लोगों से सहानुभूति रखें, लेकिन इन्हें बदलने की कोशिश बिल्कुल न करें : खुद से सवाल करें, हो सकता है सामने वाले व्यक्ति के इस तरह के बर्ताव के पीछे कोई कारण रहा हो। क्या उनके जीवन में कुछ सही नहीं है? क्या उनकी नौकरी में या घर में कोई तनाव है? याद रखें, आप अपने अलावा और किसी व्यक्ति को नहीं बदल सकते, तो किसी भी तरह के बहाने न बनाएँ। उनकी परिस्थितियों को समझने की कोशिश करें—इस तरह से आपको उनके इस बर्ताव से निपटने में आसानी होगी।
- d) नफ़रत करने वालों को बाहर करें : यदि आप किसी के द्वारा बोली जा रही बातों को पसंद नहीं कर रहे हैं, तो उस पर ध्यान देना बंद कर दें। चर्चा में मौजूद किसी सकारात्मक और रचनात्मक भाग पर ध्यान दें और यदि वह नकारात्मकता की ओर आगे बढ़ने लगे तो आप अपनी किसी और सोच में डूब जाएँ।
- नकारात्मकता का भी सकारात्मकता के साथ सामना करें। यदि वे किसी चीज़ की बुराई करते हैं, तो आप उसमें मौजूद अच्छाई को उनके सामने लाएँ। जैसे वे बोलें कि "स्कूल एक बहुत बेकार जगह है", तो आप कह सकते हैं "क्यों कितना अच्छा तो है, यहाँ पर कम से कम लंच तो कर सकते हैं"। ये लोग अपनी नकारात्मकता को आगे किसी और स्तर पर ले जाएँगे।
 - चर्चा के विषय को बदल दें। जब भी यह व्यक्ति चर्चा को नकारात्मकता की ओर ले जाने की कोशिश करे, तो आप इसका विषय बदल सकते हैं। किसी भी समस्या के समाधान की तलाश करें।
7. विषाक्त लोगों से ठीक उसी तरह से बचने की कोशिश करें, जिस तरह आप कीचड़ से बचते हैं : यदि आप अपनी

ज़िंदगी में विषाक्त लोगों के द्वारा फैलाई हुई नकारात्मकता का सामना करने में परेशानी का सामना कर रहे हैं, तो उन लोगों के साथ मेल-जोल को कम कर दें। आप लोगों के बर्ताव को नहीं बदल सकते, तो कम से कम उनसे बच तो सकते हैं।

- a) यदि आप हर दिन इनके साथ चर्चा की शुरुआत करते हैं, तो इसे बंद कर दें। यदि ये लोग भी पहल करना बंद कर देते हैं, तो आप भाग्यशाली हैं!
- b) यदि वह आपके सामने किसी भी चीज़ की बुराई करता है, तो आप ईमानदार रहें। और उसे कहें "मैं तुम्हारी इस नकारात्मकता के साथ और नहीं रह सकता। तुम जब कभी भी इस तरह की बातें करते हो, मेरा दिमाग़ खराब हो जाता है। सच में मुझे तुम बहुत अच्छे लगते हो, लेकिन मुझे लगता है, कि हमें एक-दूसरे से दूर रहना चाहिए।"

8. इस विषाक्त रिश्ते को पूरी तरह से ख़त्म कर दें : यदि कोई सच में, उसकी नकारात्मकता के साथ आपके स्वास्थ्य और सुखी जीवन को प्रभावित कर रहा है, तो इस रिश्ते को ख़त्म कर दें। इससे कष्ट तो होगा—इसमें कोई शक़ नहीं है—लेकिन यह इस व्यक्ति के साथ रहकर सारे जीवन में मिलने वाले दर्द से तो कम ही होगा।

- a) उसे कहें, "मैं तुमसे बात तो करना चाहता हूँ, लेकिन सिर्फ़ तभी जब तुम सकारात्मक बातें करोगे।" यदि ऐसा नहीं होता है, तो उन्हें अपने जीवन से बाहर निकालने से बिल्कुल न घबराएँ।

अध्यात्म के द्वारा सांसारिक वासनाओं से छुटकारा

अध्यात्म क्या है? इस विषय पर चर्चा करने से पहले, मैं आपको यह बताना जरूरी समझता हूँ कि अध्यात्म की जीवन में क्या आवश्यकता है?

मित्रों! अगर हम अपने चारों ओर नजरें दौड़ायें तो हमें ज्ञात होगा कि आज का इंसान आधुनिकता की ओर कितनी निर्ममता से दौड़ रहा है। इस आधुनिक इंसान की आस्थाएँ इतनी कमजोर पड़ गई हैं कि अपनी इस दौड़ में वह तुच्छ सांसारिक वासनाओं की पूर्ति करने के लिये सामाजिकता और नैतिकता की सीमाओं को ऐसे लाँघ जाता है जैसे सांसारिक वासनाओं की तृप्ति ही सब कुछ है।

आजकल समाचार पत्रों के अधिकांश पृष्ठ लूट, चोरी, धोखा, अत्याचार, बलात्कार और भ्रष्टाचार जैसे जघन्य अपराधों से भरे होते हैं। टेलीविज़न पर दिन-रात दिल दहलाने वाली खबरें आती रहती हैं। अगर एक क्षण के लिए अंतरजाल (Internet) के बारे में सोचा जाये तो हमें ज्ञात होगा कि यह एक ऐसा मकड़जाल है, जिसमें फँसकर अनजान और नादान लोग देश के धर्म, संस्कृति और सभ्यता का सत्यानाश कर रहे हैं।

प्रकृति कितनी सुंदर है। कितने सारे पशु-पक्षी पेड़-पौधे जलप्रपात इस प्रकृति की गौद में खेलते हैं, किन्तु इनके साथ

भी हमारे तथाकथित महान वैज्ञानिक छेड़छाड़ करने से नहीं चूके हैं। इन्ही का परिणाम हैं की सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण प्रदूषण, भूमंडलीय ऊष्मीकरण (Global Warming), अम्लीय वर्षा (Acid Rain), ओजोन क्षय जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। आपको अजीब लगेगा किन्तु यह सत्य है कि हमारा आधुनिक विज्ञान केवल सुख-सुविधाएँ जुटाने तक सीमित है। धर्म नैतिकता और विश्वकल्याण जैसी भावनाओं की उसमें कोई जगह नहीं। इसीलिए अधिकांश वैज्ञानिक आविष्कार मानव समाज के विकास में कम, विनाश में अधिक कारगर सिद्ध हुये हैं। इसके दृश्य जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर हुये परमाणु हमले में देखे जा सकते हैं।

ध्यान दीजिए, मैं यहाँ विज्ञान को लेकर कोई अविश्वास नहीं फैला रहा हूँ, किन्तु एक महत्वपूर्ण बात की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। अध्यात्म के बिना विज्ञान केवल विनाश कर सकता है, विकास नहीं और जो यदि विज्ञान विकास कर रहा है, तो जान लो कि उसमें कहीं न कहीं अध्यात्म का अंश विद्यमान है। इसी बात को ध्यान में रखते हुये भारतीय धर्म और संस्कृति के अनुसार भारत वर्ष में पुरातन काल से ही गुरुकुलों में अध्यात्म और विज्ञान दोनों की शिक्षाओं को साथ-साथ दिया जाता था। इसके प्रमाण आर्यभट्ट, वराहमिहिर, नागार्जुन, चरक, सुश्रुत आदि के रूप में देखे जा सकते हैं।

आज कोई गरीबी से पीड़ित है, तो कोई बीमारी का शिकार है। कोई चिंता के गहरे सागर में गोते लगा रहा है, तो कोई समय से पहले चिंता सजाने की तैयारी कर रहा है। आज इंसान खुद से कितना अनजान जान पड़ता है! दूसरों के लिए कितना हैवान जान पड़ता है! क्यों? क्योंकि इंसान भूल चूका है कि वह कौन है? काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी दुर्जन राक्षस उसके अंतःकरण के धरातल पर इस कदर तांडव नृत्य कर रहे

हैं, कि उसे एक पल के लिए भी शांति नहीं मिलती। वह शांति की प्राप्ति के लिए संसार में जहाँ-तहाँ भटकता है, किन्तु सांसारिक नश्वर पदार्थों में शाश्वत शांति कैसे विद्यमान हो सकती है।

हम किसी भी पदार्थ की इच्छा क्यों करते हैं? ज़ाहिर है, तृप्ति पाने के लिये। तो क्या उस पदार्थ में तृप्ति विद्यमान है, "नहीं"। जो यदि उस पदार्थ में तृप्ति विद्यमान होती तो उस पदार्थ का भोग करने के पश्चात् हमें किसी नये पदार्थ की इच्छा नहीं होना चाहिये थी, किन्तु ऐसा नहीं होता है। एक पदार्थ का उपभोग करने के पश्चात् हमें दूसरे पदार्थ की इच्छा हो जाती है, और दूसरे के बाद तीसरे की, और यह क्रम मृत्युपर्यंत चलता रहता है, किन्तु हमारी तृष्णा कभी शांत ही नहीं होती। इससे यह सिद्ध होता है कि असल में शांति और तृप्ति का मुख्य स्रोत तो हमारे भीतर हमारी आत्मा में विद्यमान है सांसारिक पदार्थों में नहीं। जो तृप्ति की अनुभूति हमें नश्वर पदार्थों में होती है, वस्तुतः वह आत्मिक तृप्ति की ही अभिव्यक्ति है।

मान लीजिये कोई सामान्य सा इंसान डम्बल और बारबेल की सहायता से यदि पहलवान बन जाये तो क्या आप ये कहेंगे कि डम्बल और बारबेल में ताकत है, "नहीं"। डम्बल और बारबेल तो केवल सहायक भर हैं। असल में ताकत तो उसकी मांसपेशियों में पहले से विद्यमान थी। ठीक उसी तरह विभिन्न भौतिक पदार्थों के माध्यम से भी आत्मिक तृप्ति ही अभिव्यक्त होती है। उसे हम अज्ञानतावश उस पदार्थ से मान बैठते हैं, और यही हमारी कभी तृप्त नहीं होने वाली अतृप्ति का कारण है।

पूछो स्वयं से कि मैं कौन हूँ? जब मनुष्य यह जानने की चेष्टा करता है कि "मैं कौन हूँ" वहीं से अध्यात्म की शुरुआत होती है। निश्चित मानिये आप बहुत महान हैं। क्योंकि आप महान

परमपिता "परमात्मा" की संतान "आत्मा" हैं। खुद को जानना और ईश्वर को पहचानना ही अध्यात्म का परमलक्ष्य है। आत्मा के अनुसंधान के विज्ञान को ही "अध्यात्म" कहते हैं। इसके लिए आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं है केवल और केवल आत्मनिरीक्षण करने की जरूरत है। अपनी मनोभूमि में छुपे बैठे जन्म-जन्मान्तर के कुसंस्कारों तथा कषाय कल्मषों को जड़ मूल से उखाड़ने की जरूरत है। अपने अंतःकरण में ईश्वरीय सद्गुणों के बीज बोने तथा उन्हें श्रद्धा और विश्वास के साथ तत्परता, तन्मयता, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी से सींचने की जरूरत है। याद रखिये, आत्मा ही अपने परिष्कृत रूप में परमात्मा है। इस बात को हम जितना गहराई से समझ कर अमल में ला सके, उतनी ही हमारी आध्यात्मिक उन्नति आसान हो जाएगी।

प्रेरणादायक विचार

मैदान में हारा हुआ इंसान, फिर से जीत सकता है,
लेकिन मन से हारा हुआ इंसान, कभी नहीं जीत सकता।



जीवन में सबसे बड़ी खुशी उस काम को करने में है,
जिसे लोग कहते हैं कि आप नहीं कर सकते।



यदि आप उड़ नहीं सकते तो दौड़ो,
यदि दौड़ नहीं सकते तो चलो,
और चल भी नहीं सकते तो रेंगते हुए चलो,
लेकिन हमेशा आगे बढ़ते रहो।



"आपको शुरुआत करने के लिए महान होना ज़रूरी नहीं है !
आपको महान बनने के लिए शुरुआत करनी होगी !!"



"इंसान कहता है अगर पैसा हो तो मैं कुछ करके दिखाऊं !
और पैसा कहता है तू कुछ करे तो मैं आके दिखाऊं !!"



"नाकामयाब लोग दुनिया के डर से अपने फ़ैसले बदल देते हैं !
और कामयाब लोग अपने फ़ैसले से पूरी दुनिया बदल देते हैं !!"



"अगर आपमें कुछ करने की इच्छा हो तो !
इस दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं !!"
"परिस्थितियां विपरीत हों तो कुछ लोग टूट जाते हैं !
और कुछ लोग रिकॉर्ड तोड़ देते हैं !!"

“डाली पर बैठे परिंदे को पता है, कि डाली
कमज़ोर है, फिर भी वे डाली पर हैं क्यों !
क्योंकि उसको डाली से ज़्यादा अपने पंख पर भरोसा है !!



“जिस व्यक्ति ने कभी कोई गलती नहीं की !
उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की !!”



“जिनको अपने काम पर भरोसा होता है, वो नौकरी करते हैं !
जिनको अपने आप पर भरोसा होता है वो व्यापार करते हैं !!



“खुद की तरक्की में इतना वक़्त लगा दो !
कि किसी दूसरे की बुराई करने का वक़्त न मिले !!”



“गिरने पर भी हर बार उठ जाना और !
दुबारा कोशिश करना ही असली जीत है !!



“इंतजार करना बंद करो !
क्योंकि सही समय कभी नहीं आता !!



“सिर्फ खड़े होकर पानी देखने से आप !
नदी पार नहीं कर सकते !!



“यह बात मायने नहीं रखती कि आप कितना धीमे चल रहे हैं !
मायने यह रखता है कि आप रुके कब तक नहीं !!”

“तुम अगर सोचते हो कि मैं बुरा हूँ!
तो तुम गलत सोचते हो, मैं बहुत बुरा हूँ!!”



“ज़िन्दगी का कोई रिमोट नहीं होता!
जागो उठो और इसे खुद बदलो!!”

“अगर लोग आपको नीचे गिराना चाहते हैं!
तो इसका मतलब आप उनसे ऊपर हैं!!”



“खुदा मेरे दुश्मनों को लम्बी उम्र दे!
ताकि वो मेरी कामयाबी देख सकें!!”



“अगर कोई चुप है तो इसका मतलब ये नहीं कि उसे बोलना
नहीं आता!
हो सकता है वो थप्पड़ मारने में यकीन रखता हो!!”



“हम न बदलेंगे वक्त की रफ़्तार के साथ !
जब भी मिलेंगे अंदाज़ पुराना ही होगा !!”



“जिनमें अकेले चलने का हौसला होता है !
उनके पीछे एक दिन काफ़िला होता है !!”



“मुझे समझने के लिये !
आपका समझदार होना ज़रूरी है !!”



“सही वक्त पर करवा देंगे हदों को अहसास !
कुछ तालाब खुद को समन्दर समझ बैठे हैं !!”



“इतना अमीर नहीं हूँ कि सब कुछ खरीद लूँ !
लेकिन इतना गरीब भी नहीं हूँ कि खुद बिक जाऊँ !!”



“जब महसूस हो सारा शहर तुमसे जलने लगा !
समझ लेना तुम्हारा नाम चलने लगा !!”

“अक्सर जल जाते हैं मेरे अंदाज़ से मेरे दुश्मन !
क्योंकि एक मुद्दत से मैंने न दोस्त बदले न मोहब्बत !!”



“जीत हासिल करनी हो तो काबिलियत बढ़ाओ !
किस्मत की रोटी तो कुत्तों को भी मिला करती है !!”



“तमन्ना तेरे जिस्म की होती तो छीन लेते दुनिया से !
मोहब्बत तेरी रूह से की इसलिए मांगते हैं खुदा से !!”



“इश्क़ की पतंगें उड़ाना छोड़ दी हमने वरना !
हर हसीना की छत पर हमारे ही धागे हुआ करते थे !!”



“इसी बात से मेरी शोहरत का अंदाज़ा लगा लेना !
मुझे वो सलाम करते हैं जिन्हें तुम सलाम करते हो !!”



“इस शहर की हवा तक हमारे खिलाफ नहीं चल सकती !
तो फिर दुश्मन की हैसियत ही क्या है !!”



“पहले भी बता चुका हूँ फिर सुन ले !
सिर्फ उम्र छोटी है लेकिन सलाम सारा जहाँ ठोकता है !!”



“मुक़ाम वो चाहिए कि जिस दिन हारुं !
उस दिन जीतने वाले से ज़्यादा चर्चे मेरी हार के हों !!”



“किसी के पैरों में गिरकर कामयाबी पाने से अच्छा है !
अपने पैरों पर चलकर कुछ बनने की ठान लो !!”



“किसी की क्या मजाल थी जो खरीद सकता हमको !
वो तो हम ही बिक गए खरीदार देखकर !!”

“गुलामी तो हम सिर्फ अपने माँ-बाप की करते हैं !
वरना दुनिया के लिए तो हम कल भी बादशाह थे और आज भी
हैं!!”



“अरे मत पूछिए हद हमारी गुस्ताखियों की !
हम आईना ज़मीं पर रखकर आसमां को कुचल देते हैं !!”



“जो बेहतर होते हैं उन्हें इनाम मिलता है !
जो बेहतरीन होते हैं उनके नाम पर इनाम होता है !!”



“मेरे होठों पे कभी उसका नाम तो कभी सिगरेट का साथ !
मेरे होठों ने सदा चिंगारियां ही पसंद कीं !!”



“मिजाज़ में थोड़ी सख्ती भी होनी चाहिये साहब !
लोग पी जाते अगर समन्दर खारा न होता !!”



“सुन रे ! पगली मेरे पास Attitude है !
तेरे बाप का पैसा नहीं जो ख़त्म हो जाएगा !!”



“मत कोशिश करो मुझ जैसा बनने की !
क्योंकि शेर पैदा होते हैं बनाए नहीं जाते !!”



“हक़ से अगर दो तो नफ़रत भी कुबूल है हमें !
ख़ैरात में तो हम तेरी मोहब्बत भी न लें !!”



“भले ही हमने बड़े घराने में जन्म न लिया हो !
लेकिन मेरी माँ ने मुझे नवाब बना रखा है !!”



1. जब भी रास्ते में मुसीबतें आएँ तो घबराना मत। नदी की तरह अपने रास्ते से सब कुछ हटाते हुए, अपनी मंजिल की तरफ बढ़ जाना।
2. अभी तक मिली असफलताओं से निराश न हों, दुगुने उत्साह से लगे रहो आपको सफल होने से कोई नहीं रोक सकता।
3. तुम अभी तक अपनी असली औकात नहीं जानते, वरना ऐसे न बैठे रहते।
4. अपने सपनों को पाने के लिए आपमें एक ज़िद होनी चाहिए। केवल फॉर्मैलिटी करने से कुछ नहीं होने वाला।
5. अगर अभी आप पर दुनिया वाले हंसते हैं, तो चिंता मत कीजिये। जिस दिन आप सफल हो गए, या तो वे आपके आगे—पीछे घूमेंगे या फिर कभी शक्ल नहीं दिखाएंगे।
6. आप खुद में दृढ़ विश्वास करें, अच्छा महसूस करें और कड़ी मेहनत करते रहें, यही रहस्य है किस्मत के दरवाजे को खोलने का।
7. बड़ा सोचो, बड़े सपने देखो, लेकिन शुरुआत छोटे से ही करनी होती है।
8. ये शिकायते मत करो कि तुम्हारे पास फलाना नहीं हैं, ढिंमका नहीं हैं। अपने मौजूदा संसाधनों का बेहतरीन इस्तेमाल करो और बेहतरीन आउटपुट दो।
9. अगर वाकई में तुमको कामयाब होना है तो अपने बीते कल में जीना छोड़ दो।
10. बहाने बनाने से आप दूसरों को नहीं, खुद को मूर्ख बना रहे हो।

11. आपकी जिंदगी एक फ़िल्म की तरह है। इसके लिए एक शानदार कहानी लिखो, इसे फ्लॉप मत होने दो।
12. आपको नदी की तरह बहते रहना होगा, रुक गए तो सड़ जाओगे।
13. अपनी तुलना किसी से मत करो, आप अपने आपमें नायाब हो, बेशकीमती हो।
14. एक जहाज किनारे पर सबसे ज्यादा सुरक्षित होता है। लेकिन ये इसके लिए तो नहीं बना है। इसलिए अपना कंफर्ट जोन आज ही छोड़ दो।
15. अपनी जिंदगी की सारी हदें आपने खुद बनाई हैं। इन हदों को तोड़ने के बाद आप कामयाब हो जाओगे।
16. एक दिन आपका सारा जीवन आपकी आंखों के सामने से होकर गुजरेगा। सुनिश्चित करें कि यह देखने लायक हो।
17. यह आपकी सोच ही है जो आपको राजा भी बना सकती है और रंक भी बना सकती है। इसलिए अपनी सोच बदलो जिंदगी बदलो।
18. गलती होने के डर से कुछ भी न करना सबसे बड़ी गलती है।
19. लगातार प्रैक्टिस, आपको उस काम में महान बना देगी।
20. खुद को इतना काबिल बना दो कि कामयाबी आपके पास आने के लिये मजबूर हो जाये।
21. ज्यादा सोचने से बचो क्योंकि ये आपको अंदर ही अंदर खोखला कर देगा।

22. अपने शरीर को स्वस्थ और मजबूत बनाओ, क्योंकि पूरी जिंदगी आपको इसी के साथ रहना है।
23. खुद को शांत कर लो, आपमें गज़ब की शक्ति आ जायेगी।
24. आप जो कुछ भी बनना चाहते हो, वो बनने के लिए कभी भी देर नहीं होती है।
25. आपमें अपनी खुद की दुनिया बनाने का सामर्थ्य है। आप असंभव को भी सम्भव बना सकते हो।
26. इतना काबिल बनो कि आपको हराने के लिए लोगों को अपनी एड़ी चोटी तक का जोर लगाना पड़े और फिर भी कुछ हाथ न लगे।
27. सबसे बड़ा शिक्षक ठोकर है। जितना खाते जाओगे उतना ही सीखते जाओगे।
28. जब आपको लोग बोले कि ये काम करना तुम्हारे बस का नहीं है, तो इस बात को अपने दिल पर मत लो इसे चैलेंज के रूप में आप उनसे लो.
29. आपके पास जो है आप उसकी कदर करें, क्योंकि यहां तो आसमान के पास भी खुद की ज़मीं नहीं। और आपके पास तो फिर भी बहुत कुछ है।
30. याद रखियेगा, सपने आपके हैं, तो उन्हें पूरा भी आप ही करोगे। जबकि न ही हालात आपके हिसाब से होंगे और न लोग।
31. जीतने वाले लोग कोई अलग नहीं हैं। और न ही वो दूसरों से कुछ अलग करते हैं। वो बस चीजों को अलग तरह से करते हैं। इसलिए वो विजेता कहलाते हैं।

32. सिर्फ खड़े होकर पानी देखने से आप नदी नहीं पार कर सकते। आपको उस पानी में जाना होगा और उस पर फतेह कर दिखना होगा।
33. अगर आप चाहते हैं किसी चीज को कि वह परफ़ेक्शन से हो। तो कृपया करके उसे खुद कीजिए और फिर नतीजा देखिए।
34. उस कार्य को चुनिये जिसे आप करना बेहद पसंद करते हों, फिर आप पूरा जीवन एक दिन भी काम नहीं करेंगे। बल्कि उस कार्य को जीएंगे।
35. अभी से वो बन जाइये जो आप आने वाले समय में बनना चाहते हैं। और भविष्य में उसे पाना चाहते हैं।
36. अगर हम ये पहले ही जान लें कि हम कहां पर मौजूद हैं। इस समय हमारी क्या दशा है, और हम किस दिशा में जा रहे हैं। तो हमें क्या और कैसे करना चाहिए तब हम इस पर बेहतर निर्णय ले सकते हैं।
37. जिन्दगी में एक बार जो निर्णय कर लो तो फिर कभी पीछे मुड़कर मत देखना। क्योंकि मुड़कर देखने वाले इतिहास नहीं रचते।
38. किस्मत से लड़ने में मजा आ रहा है मित्रों, ये मुझे जीतने नहीं दे रही, और मैं हार मानने वालों में से हूं नहीं।
39. अपने बड़ों का हाथ पकड़ के चलोगे, तो फिर दूसरे लोगों के पैर पकड़ने की नौबत कभी जिन्दगी में नहीं आएगी।
40. अगर खुद की औकात देखना चाहते हो, तो अपने बाप की दौलत का इस्तेमाल करना बन्द कर दो।